४१.६
३५

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

श्री भवानीप्रसाद जी
हलदौर (बिजनौर) निवासी द्वारा पुस्तकालय गुरुकुल
कांगड़ी विश्वविद्यालय को ... भेंट।

४९-५ पुस्तकालय
३६ गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
विषय संख्या आगत नं० ३४६५०
लेखक गौरीशंकर दत्त
शीर्षक बिहार का बिहार

दिनांक	सदस्य संख्या	दिनांक	सदस्य संख्या

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
कृपया पुस्तक के ऊपर कोई निशान आदि
न लगायें।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

पुस्तकालय

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

वर्ग संख्या.........   आगत संख्या.........

पुस्तक-विवरण की तिथि नीचे अंकित है। इस तिथि सहित ३०वें दिन तक यह पुस्तक पुस्तकालय में वापिस आ जानी चाहिए। अन्यथा ५० पैसे प्रति दिन के हिसाब से विलम्ब-दण्ड लगेगा।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

[illegible] प्रमाणीकरण १९८४-१९८५

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

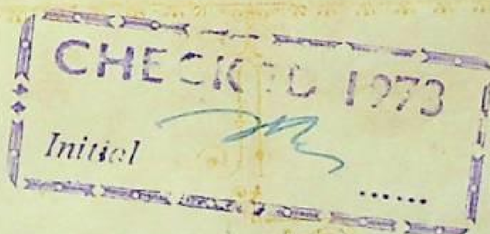
सत्साहित्य ग्रन्थमाला—ग्रन्थ १० ।

बिहार का बिहार

पुस्तक सं०
आगत सं०
तिथि०
गुरुकुल ग्रन्थालय काँगड़ी.

मेरी जननी यही भूमि है, इस विचार से जिसका मन—
नहीं उमंगित हुआ, वृथा है उसका पृथ्वी पर जीवन ॥

पं० गौरीदत्त वाजपेयी ।



बाबू शिवपूजन सहाय ।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

बिहार का बिहार।

अर्थात्

बिहार का ऐतिहासिक, प्राकृतिक और भौगोलिक वर्णन।



लेखक

'हिन्दीभूषण' बाबू शिवपूजन सहाय।



'मेरी जननी यही भूमि है', इस विचार से जिसका मन —
नहीं उमँगित हुआ, वृथा है उसका पृथ्वी पर जीवन ॥

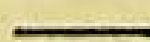
पं० गौरीदत्त वाजपेयी।



प्रकाशक

ग्रन्थमाला-कार्यालय,

बाँकीपुर।



श्रीलक्ष्मीनारायण प्रेस, काशी में मुद्रित।

प्रथम संस्करण] १६१६ [मूल्य ।।।)

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

विषय-सूची ।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

पुस्तकालय
गुरुकुल कांगड़ी

वक्तव्य ।

मेरा बहुत दिनों से विचार था कि विहार के विषय में एक पुस्तक लिखी जाय । पर, पुस्तक किस प्रकार की हो, इसका निर्णय बहुत दिनों तक नहीं होसका । कुछ दिनों के बाद मैंने विहार का विस्तृत इतिहास लिखना प्रारम्भ किया और उसके प्रारम्भिक कई अध्याय लिख भी डाले । किन्तु ऐसा इतिहास लिखने से मेरा मनोरथ पूरा होता नहीं दीख पड़ा । अतः मैंने एक ऐसी पुस्तक प्रस्तुत करने का विचार किया जिसमें विहार के ऐतिहासिक, प्राकृतिक और भौगोलिक वर्णन हों । प्रस्तुत पुस्तक उसी विचार का परिणाम है ।

मैंने इस पुस्तक के लिखने के लिये बहुत सा सामान संग्रह किया पर कई आवश्यक कार्यों में फँस जाने के कारण पुस्तक-रचना में विलम्ब होने लगा । इससे, मैंने यह भार अपने परम स्नेही 'हिन्दीभूषण' बाबू शिवपूजन सहाय को सौंपा और सब सामान उन्हें दे दिया । उन्होंने खुशी से यह भार अपने ऊपर लेकर मेरे बार बार के अनुरोध से शीघ्र ही इस पुस्तक को समाप्त किया । लेखक ने इसके लिखने में यथेष्ट परिश्रम किया है और उन्हें अपने प्रयत्न में अच्छी सफलता प्राप्त भी हुई है ।

पुस्तक की लेखन-शैली बड़ी ही सुन्दर, सरस और अलंकृत है । लेखक की यह शैली स्वाभाविक है, कृत्रिम नहीं । संस्कृतबहुल होने से यद्यपि यह शैली सर्वसाधारण के लिये कुछ कठिन है तथापि वह इतनी मधुर है कि उसमें सर-

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

लता के लिये अन्तर डालना अच्छा नहीं प्रतीत हुआ। सम्भव है कि लेखक की 'हिन्दीभूषण' उपाधि को सार्थक करनेवाली यह शैली सब को पसन्द आ जाय।

मैंने अपने आरम्भ किये हुए विहार के विस्तृत इतिहास के उल्लिखित कई अध्यायों से कुछ मसाला लेकर एक उपक्रम इस पुस्तक के लिये लिखा है। यह उपक्रम यथा-समय विहार के विस्तृत इतिहास का आकार धारण करेगा। सम्भव है इस उपक्रम से भी विहार की कुछ प्राचीन ऐतिहासिक बातें पाठकों को मालूम हो जाँय और उनसे उनका मनोरञ्जन हो।

पुस्तक के लेखक अपने लेखों द्वारा हिन्दी-संसार में बहुत दिनों से परिचित हैं। इससे उनका यहाँ परिचय कराना अनावश्यक है। आज वे इस पुस्तक द्वारा हिन्दी-साहित्य-क्षेत्र में अवतीर्ण होते हैं। आशा है, हिन्दी-प्रेमी उनकी इस कृति को अपना कर उनका उत्साह बढ़ावेंगे।

ग्रन्थमाला–मालाकार

रामदहिन मिश्र।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

उपक्रम ।

भारतवर्ष एक परम प्राचीन देश है। इसकी सभ्यता भी प्राचीन काल ही से प्रसिद्ध है। संसार में कोई ऐसा देश नहीं जो प्राचीनता और सभ्यता में इसकी समानता करे। यह कहने में कुछ भी आत्युक्ति न होगी कि जिस समय संसार के बड़े २ देश अन्धकार के गहरे गर्त में डूबे हुए थे उस समय भारत का उज्वल आलोक चारो ओर फैल रहा था। *

भारत के इतिहास में विहार का यथेष्ट गौरव है। क्या धार्मिक, क्या सामाजिक और क्या राजनैतिक, जिस किसी दृष्टि से देखिये, विहार को बहुत पहले ही से सब प्रकार समुन्नत पाइयेगा। यदि भारत के प्राचीन इतिहास से विहार का इतिहास अलग कर दिया जाय तो वैदिक काल के अनुसार उसका मध्यकालीन और विश्वसनीय इतिहास के अनुसार आदि कालीन इतिहास कुछ रह ही न जायगा। वड़े २ ऐतिहासिकों ने वैज्ञानिक दृष्टि से भारत का जो इतिहास लिखा है वह विहार के इतिहास से ही प्रायः प्रारम्भ होता है। वह ऐतिहासिक काल बौद्धयुग कहलाता है। तबसे लेकर लगभग १५०० डेढ़ हजार वर्ष तक विहार की बड़ी चलती रही। विहार के कितने राजाओं के समय तो समस्त भारत ही उसके अधीन

---

* 'साहित्य-सुधाकर' नामक पुस्तक में प्रोफेसर रामावतारशर्मा सहित्याचार्य, एम० ए० का लिखा 'सभ्यता का विकास' नामक लेख देखिये।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

बना रहा। यह बात छिपी नहीं है। उसका कुछ आभास इस पुस्तक के ऐतिहासिक विवरण में मिल सकता है। इस उपक्रम में विहार की बुद्धयुग के पूर्व की कुछ बातें लिखी जायँगी।

आजकल हम जिसे विहार कहते हैं वह पहले तीन राज्यों में विभक्त था। पहला विदेह वा मिथिला, दूसरा मगध वा कीकट और तीसरा अङ्ग राज्य था। ये तीनों अब भी विहार में हैं। पहले दो के नाम तो अब भी यथेष्ट लिये जाते हैं पर तीसरे का नाम लुप्त सा होगया है। ऐतिहासिकों के अतिरिक्त सर्व-साधारण को इस राज्य का नाम भी अविदित ही है। यह निश्चय है कि अङ्ग देश (भागलपुर का प्रान्त) के निवासी इसके नाम और थोड़े से वृत्तान्त से भी परिचित हैं। इसका कारण यह है कि अब भी वहाँ इस लुप्त प्राय राज्य के कुछ बचे-बचाये चिन्ह स्मारक-रूप से वर्तमान हैं।

आर्यों के सब से प्राचीन ग्रन्थ ऋग्वेद में विशेषतः पञ्जाब का उल्लेख है। उसमें पञ्जाब के अतिरिक्त भारतवर्ष का कुछ विशेष विवरण नहीं है। उसमें दूरस्थ गङ्गा और यमुना के तटों का बहुत ही कम उल्लेख पाया जाता है। उस समय आर्य लोग केवल उसी सारी भूमि को जीत कर बसे हुए थे जो कि सिन्ध और उसकी सहायक पाँचो नदियों से सींची जाती है। यद्यपि यह बात थी तथापि अन्यान्य देशों के नाम उसमें यत्र तत्र पाये जाते हैं।

प्राचीन ग्रन्थों में मगध का दूसरा नाम कीकट * देश है

---

* निरुक्त ६। ६। ४

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

यह प्रमाणतः और अनुमानतः एक प्रकार स्थिर हुआ है। यदि यह बात है तो कहा जा सकता है कि ऋग्वेद के तृतयाष्टक के संग्रह-काल में पञ्चनदवासी आर्यों को मगध * का अस्तित्व विदित था। यजुर्वेद में भी मागध † शब्द आया है। अथर्ववेद के पञ्चम काण्ड में अङ्ग और मगध ‡ दोनों के नाम मिलते हैं। इस से स्थिर होता है कि आर्यों के निकट प्राचीन विहार परिचित था। पर मिथिला के सम्बन्ध में यह बात नहीं थी। वैदिक काल में वह आर्यों के अधिकारभुक्त होगया था। इसका उल्लेख वैदिक साहित्य में हमें यथेष्ट मिलता है।

ऋग्वेद से पता मिलता है कि पहले आर्य सरस्वती-प्रान्त से पूर्व की ओर गये। प्राचीन आर्य यज्ञादि-कर्मों से बड़ा प्रेम रखते थे। अतएव, अपने साथ यज्ञादि-क्रिया का सब समान—अग्नि आदि का ले जाना, बहुत ही सम्भव है। ऋग्वेद में आर्यों का पूर्व की ओर अग्नि का लेजाना लिखा है +। विदेहों के पूर्व की ओर बढ़ने का कुछ अस्पष्ट सा हाल शतपथ ब्राह्मण में भी लिखा है, जिसका सारांश नीचे दिया जाता है।

" माधव विदेघ के मुख में अग्नि वैश्वानर था। उसके

---

* किम् ते कृण्वन्ति। कीकटेषु गावः न आशिरम्।

ऋक् ३। ५३। ५४।

† अशूद्रा अब्राम्हणास्ते प्राजापत्या मागधः पुंश्चलीकितवः क्लीबोऽशूद्राः। यजुर्वेद अ० ३० मं० ५

‡ गान्धारिभ्योमुजवद्भ्योऽङ्गेभ्यो मगधेभ्यः। अर्थव ५।२२।१४।

+ अग्ने त्वा पूर्वमनयन्। ऋक् १।३१।४

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

कुल का पुरोहित ऋषि गौतम राहुगण था। इसने अग्नि को आवाहन कर उसके मुँह से बाहर किया। माधव विदेघ उस समय सरस्वती नदी पर था। वहाँ से वह (अग्नि) पृथ्वी को जलाती हुई पूरब की ओर बढ़ी। ज्यों ज्यों वह जलाती हुई बढ़ती जाती थी त्यों त्यों गौतम राहुगण और विदेघ माधव उसके पीछे पीछे चले जाते थे। उसने सब नदियों को सुखा डाला वा पार किया पर हिमालय से निकली हुई सदानीरा (गण्डकी) को नहीं सुखाया। पहले ब्राह्मण लोग उसके पार नहीं गये, क्योंकि अग्नि वैश्वानर उसके आगे न गया। उसके पूरब में ब्राह्मण रहते थे पर वह स्थान पहले यज्ञादि-क्रिया की अनुष्ठान-भूमि नहीं था। पीछे होमादि करके उसे ब्राह्मणों ने अग्नि से चखवाया जब अग्नि वैश्वानर उसके पार न गया तब माधव विदेघ ने उससे पूछा कि मैं कहाँ रहूँ। उसने उत्तर दिया कि तेरा निवास इस नदी के पूरब हो। क्योंकि ये माधव की सन्तति हैं" *। अब तक भी यह नदी कौशला और विदेहों की सीमा है।

ऊपर के वृत्तान्त से हम लोगों को कल्पित कथा के रूप में प्राचीन अधिवासियों के सरस्वती-तट से गण्डक तक धीरे धीरे बढ़ने का वृत्तान्त मिलता है। यह नदी दोनों राज्यों की सीमा थी। कोशल लोग उसके पश्चिम में रहते थे और विदेह लोग उसके पूरब में। सम्भवतः कई शताब्दियों में विदेहों का राज्य शक्ति और सभ्यता में यहाँ तक बढ़ा कि वह उत्तरी भारत में सब से प्रधान राज्य हो गया। उसकी प्रधानता के कारण

---

* शतपथ ब्राह्मण १।४।१; २।१।१

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

विदेह-राज जनक* थे। वे बड़े ही ज्ञानी और अद्वितीय विद्वान् थे। उनकी विद्वत्ता के सम्बन्ध में शतपथ ब्राह्मण में एक ऐसा प्रसङ्ग आया है।

"विदेह के जनक की भेंट कुछ ऐसे ब्राह्मणों से हुई जो अभी आये थे। ये श्वेतकेतु, आरूणेय, सोमसुष्म-सत्ययज्ञि और याज्ञवल्क्य थे। उसने उनसे पूछा कि आप अग्निहोत्र कैसे करते हैं? तीनों ब्राह्मणों ने अपनी अपनी बुद्धि के अनुसार उत्तर दिया पर किसी का उत्तर ठीक नहीं था। याज्ञवल्क्य का उत्तर यथार्थ बात के निकट था, परन्तु वह पूर्णतया ठीक नहीं था। जनक ने उनसे ऐसा कहा और रथ पर चढ़ कर चला गया। ब्राह्मणों ने कहा इस राजन्य ने हम लोगों का अपमान किया है। याज्ञवल्क्य रथ पर चढ़ कर राजा के पीछे गया और उससे शङ्का-निवारण की †। अबसे जनक ब्राह्मण हो गया। ‡

---

* यह निर्णय करना अत्यन्त कठिन है कि ये जनक कौन थे। वैवस्वत मनु के पुत्र इक्ष्वाकु के पुत्र निमि ने ही विदेह वंश की स्थापना की। इनका ही नामान्तर विदेह था। विष्णु पुराण में लिखा है कि मृत देह से उत्पन्न होनेके कारण इनका नाम जनक पड़ा। भविष्य-पुराण में पुरीजननसामर्थ्य से इनका जनक नाम पड़ने की बात लिखी है। जनक के नामानुसार इस वंश के सभी राजा उसी नाम से प्रसिद्ध होने लगे। जनक शब्द इस वंश के राजाओं की उपाधि सा हो गया। इसकी कई पीढ़ियों के बाद जानकी के पिता सीरध्वज जनक हुए।

† शतपथ ब्राह्मण ११।४।५ ‡ शतपथ ब्राह्मण ११।६।२१

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

वे ही याज्ञवल्क्य उन राजा जनक की सभा में प्रधान पुरोहित हुए। श्वेत यजुर्वेद अपने संग्रह करने वाले वा प्रकाशित करने वाले उन्ही याज्ञवल्क्य वाजसनेय के नाम से ही वाजसनेयी संहिता कहलाता है। उस शुक्लयजुर्वेद का शतपथ ब्राह्मण भी इसी महर्षि के कर्त्तव्य का फल है।

श्रीयुत रमेशचन्द्र दत्त अपने भारतीय सभ्यता के इतिहास में इस प्रसङ्ग पर लिखते हैं कि "जनक के बड़े यश का कारण कुछ अंश में उसकी सभा के प्रधान पुरोहित याज्ञवल्क्य वाजसनेयी की बुद्धि और विद्या है। राजा जनक के आश्रय में इस पुरोहित ने उस समय के यजुर्वेद को दोहराने, मन्त्रों को व्याख्यानों से अलग करने, उनको संक्षिप्त करके नये यजुर्वेद (शुक्लयजुर्वेद) के रूप में बनाने, तथा इसका विस्तृत वर्णन एक बड़े ब्राह्मण (शतपथ ब्राह्मण) में करने का साहस किया। इस महत्कार्य में ब्राह्मणों ने कई पीढ़ी तक श्रम किया परन्तु इस कार्य के आरम्भ करने का गौरव इस शाखा के संस्थापक याज्ञवल्क्य वाजसनेयी और उसके विद्वान् आश्रयदाता विदेहों के राजा जनक को ही प्राप्त है।"

राजा जनक ने ही अपनी सभा में उपनिषदों की चर्चा छेड़ी थी। उन्हीं के यहाँ उन दार्शनिक विचारों का प्रारम्भ हुआ था जिनका पूर्णविकाश सूत्रों के समय में हुआ। कहते हैं कि राजा जनक ने ही आत्मा के उद्देश्य और ईश्वर के विषय में खोज की और पुष्ट तथा दृढ़ आध्यात्मिक विचार प्रकट किये। ये विचार उपनिषदों में ओत-प्रोत भरे हुए हैं। राजा जनक का उपनिषदों के इन विचारों को उत्पन्न करने के

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

कारण उस समय के अन्य राजाओं की अपेक्षा बहुत आदर किया जाता है।

भारतवर्ष के ऐतिहासिक प्राचीन काव्य-काल (ब्राह्मण आरण्यक और उपनिषद्काल) के इतिहास में विदेहों के राजा जनक कदाचित् सब से प्रधान व्यक्ति है। इस सम्राट ने केवल भारतवर्ष के दूरतम सीमा तक अपना प्रभुत्त्व ही नहीं स्थापित कर लिया था वरन् उसने उस समय के बड़े २ विद्वानों को अपने निकट रक्खा था और जगदीश्वर के विषय में उन्हें शिक्षा दिया करता था। यही कारण है कि जनक के नाम ने अक्षयकीर्ति पायी है। काशियों के राजा अजातशत्रु ने जो स्वयं एक विद्वान् था और विद्या का एक प्रसिद्ध प्रचारक था, निराश होकर कहा कि 'सचमुच यह कह कर सब लोग भागे जाते हैं कि हमारा रक्षक जनक है'।*

जिस प्रकार उस समय उत्तर भारत अध्यात्म-विद्या के विशेष प्रचार और विद्वानों के यथेष्ट सम्मान करने के कारण बहुत प्रसिद्ध हो रहा था उसी प्रकार दक्षिण विहार भी अपने शौर्य्य और शक्ति के कारण आर्यों की आँखों का काँटा हो रहा था। आर्यों ने अपना प्रभुत्व उत्तर भारत में जैसी सरलता से फैला लिया था वैसी सरलता से वे दक्षिण में अपना प्रभुत्व नहीं फैला सके। दक्षिण विहार के अधिवासी अपनी शक्ति को अक्षुण्ण बनाये रहे जिससे आर्यों की पैठ वहाँ न हो सकी। ऐतरेय ब्राह्मण में लिखा है कि दुष्यन्त के पुत्र

* बृहदारण्यक उपनिषद् ११।३१

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

भरत ने जो १३३ अश्वमेध यज्ञ किये थे उनमें ७८ यमुना के तट पर और ५८ गंगा तट पर सम्पन्न हुए थे । यदि मगधादिप्रदेश भी आर्यों के अधिकारभुक्त रहते तो इन प्रदेशों के पुण्य-स्थानों में भी यज्ञ होने की बात अवश्य लिखी रहती ।

ऐतरेय आरण्यक में वंग, मगध और चेरदेश-वासियों को आर्यों ने पक्षी के समान माना है * । वंग बंगाल, बगध, हो सकता है कि मगध का नाम हो या लिपिभ्रम होगया हो । और, चेर देश या जाति-विशेष का नाम है । पहाड़ों में चेर जाति अब भी है । दक्षिण के पहाड़ों में 'चेरो' 'खरवारो' नाम की जातियाँ अब भी रहती हैं । दक्षिणापथ के एक प्राचीन राज्य का भी चेर नाम है जिसे केरल कहते हैं । प्राचीन साहित्य में इसका उल्लेख पाया जाता है । न मालूम आर्यों ने किस कारण इन प्रदेशवासियों को पक्षि-तुल्य माना है । हो सकता है कि आर्य जिसे मनुष्य कह सकते थे उसकी श्रेणी में अब तक वे न आये हों । यह भी कहा जा सकता है कि जंगल और पहाड़ों में रहने के कारण उनका ऐसा नामकरण आर्यों ने किया हो। किन्तु महामहोपाध्याय पं० हरप्रसाद शास्त्री ने अपने एक प्रबन्ध में लिखा है कि जब आर्य बढ़ते बढ़ते प्रयाग तक पहुँच गये तब उन्होंने बंगाल (मगध भी साथ है) की सभ्यता से ईर्षान्वित होकर उन्हें धर्मज्ञान-शून्य और भाषाज्ञान-शून्य पक्षी कहा है ।

---

* इमाः प्रजाः तिस्रो अत्ययमायं तानीमानि वयांसि वङ्गवगधाश्चेर-पादान्यस्या अर्कमभितो विविश्र इति । ऐतरेय आरण्यक २।१।१

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

जिस समय पूर्व में आर्योपनिवेश स्थापित नहीं हुआ था उस समय बंगाल और मगध में जो जाति बसती थी सम्भवत: उसे ही आर्यों ने ऋग्वेद में दस्यु के नाम से और ऐतरेय आरण्यक में पक्षी के नाम से सम्बोधित किया है। वह जाति द्राविड़ थी। वेद से लेकर उपनिषत् तक उस दस्यु, अनार्य वा द्रविड़ जाति का वर्णन है। इस जाति का प्रसार बहुत दूर में था। इस जाति के लोग यज्ञहीन, श्रद्धाहीन और बुद्धि-हीन आदि विशेषणों से विशेषित हुए हैं। किन्तु, उन्होंने बड़े २ नगर बसा लिये थे और दुर्भेद्य दुर्ग भी बना लिये थे। सहज में इन पर विजय पाना आर्यों के लिये असम्भव था।

वैदिक साहित्य में इन सब उल्लेखों को देख कर हम अनु-मान कर सकते हैं कि उस समय अंग और मगध, मिथिला में आर्योपनिवेश स्थापित होने पर भी स्वाधीन थे और विजयी आर्यों के निकट अपना मस्तक अवनत नहीं किया था। इसी से वैदिक-काल में आर्यों ने इस देशके निवासियों को धर्महीन और मनुष्यत्वहीन आदि शब्दों से विशेषित किया है। उनके इस विद्वेष का आभास आगे भी स्पष्ट है।

* बौधायन धर्मसूत्र में लिखा है कि वङ्ग, कलिङ्ग, सौवीर, मगध आदि देशों में जाने से प्रायश्चित्त होता है और शुद्धि के लिये यज्ञानुष्ठान करना पड़ता है। इससे अनुमान होता है कि सूत्रकाल तक वहाँ के प्राचीन अधिवासी अपनी प्राचीन प्रथा के ही पूर्ण पक्षपाती बने हुए थे और आर्यों

---

* बौधायनधर्मसूत्र । १।१।२।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

की कला अङ्ग-मगधादि में नहीं लगी थी। इसी से विद्वेषवश उन्होंने उन प्रदेशों में जाने का निषेध कर दिया।

सूत्र-ग्रन्थों के आधार पर बने हुए स्मृतिग्रन्थों में भी इस विद्वेषाग्नि की चिनगारियाँ छिटकी हुई हैं। * एक श्लोक में लिखा हुआ है कि अंग, वंग, कलिंग, मगध आदि देशों में जाने से प्रायश्चित्त करना पड़ता है। ऐसे ही और भी प्रमाण इस विषय में मिलते हैं।

बहुतों का अनुमान है कि अङ्ग-मगधादि-देशों में यज्ञ करने के लिये सामग्री नहीं मिलती थी इसीसे वे अपवित्र समझे जाते हैं। पर यह अनुमान ठीक नहीं। रामायण में लिखा है कि दशरथ के मित्र रोमपाद अङ्ग देश के राजा थे और उनके दामाद ऋष्यशृङ्ग मुनि उन्हीं के राजभवन में रहते थे। वर्तमान कजरा से आठ मील दक्खिन शृङ्गी ऋषि पर्वत पर जो महाभारत के समय में ऋषिगिरि कहा जाता था, ऋष्यशृङ्ग का आश्रम था। महाभारत के सभापर्व में लिखा है कि पहले मगध में गौतम का आश्रम था और अङ्ग-वङ्गादि के राजा उनके आश्रम में जाकर बहुत प्रसन्न होते थे। यदि अङ्ग-मगध-आदि देश अपवित्र समझे जाते तो कभी नहीं इन देशों में इन पुण्यात्मा महर्षियों का निवास होता। इससे ऐसा अनुमान भ्रान्त है। तुलसीदास जी का ' मग काशी सुरसरि कर्मनाशा ' आदि लिखना विचारसंगत नहीं, बल्कि प्राचीन परिपाटी के अनुकूल है।

---

* अङ्गवङ्गकलिङ्गेषु सौराष्ट्रमगधेषु च।
तीर्थयात्रां विना गच्छन् पुनः संस्कारमर्हति॥

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

प्राचीन साहित्य में इसका उल्लेख कहीं नहीं मिलता कि आर्यों ने मगधादि प्रदेशों पर अपना प्रभुत्व कब जमाया। इससे आर्यों को उनपर अधिकार करने के समय का निर्णय नहीं किया जा सकता। सिंहल के इतिहास से मालूम होता है कि ईसवी सन् की छः सदी पहले विजयसिंह नामक एक वङ्गीय राजपुत्र ने सिंहलद्वीप पर अधिकार किया था। इस विजय के कारण ही लंका का नाम सिंहलद्वीप हुआ था। क्योंकि, रामामण में लङ्का नाम है पर सिंहल नाम नहीं। उसके बाद संस्कृत साहित्य में सिंहल नाम मिलता है। विजय सिंह नाम अनार्य के ऐसा नहीं विदित होता है। इससे, इसके पूर्व ही वङ्ग और मगध के प्राचीन अधिवासी अपनी रीति-नीति छोड़ कर आर्यों के आचार-विचार से दीक्षित हो गये थे, ऐसा अनुनान किया जा सकता है।

मगध में आर्यों का जब सिक्का जमा तब अनार्यों ने जंगल और पहाड़ों का आश्रय लिया और कितनों ने आर्यों की रीति-नीति और भाषा-भाव का ग्रहण कर लिया। किन्तु नवागत विजेता आर्य-गण के शासनपाश में अधिक दिनों तक ये बद्ध नहीं रहे। तीन ही चार शताब्दी के बाद समग्र आर्यावर्त मगध के अनार्य—शूद्र जातीय राजगणों की अधीनता स्वीकार करने को बाध्य हुए थे। इस समय आर्य जाति निर्वीर्य सी होगयी थी और उसका अधःपतन एक प्रकार हो रहा था। इस अधःपतन काल के कुछ पूर्व आर्यधर्म के विरुद्ध देशव्यापी आन्दोलन होरहा था। इसका परिणाम यह हुआ कि बौद्ध और जैनधर्म प्रबल होगये। इन धर्मों के अभ्युत्थान का प्रधान

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

क्षेत्र मगध ही था। इन दोनों धर्मों के संस्थापक गौतमबुद्ध और महावीर के निर्वाण होने के कुछ ही समय के बाद शिशुनागवंशी महानन्द की शूद्रा पत्नी के गर्भज महाराज चन्द्रगुप्त भारत के समस्त आर्य राजवंशो को निर्मूल कर के एकछत्र सम्राट हुए थे। इस समय से लेकर गुप्तवंश के अधःपतन काल तक मगध राज ही उत्तरापथ के एकछत्र सम्राट थे और पाटलिपुत्र ही इस साम्राज्य का राजधानी था। इस प्रकार सर्वशक्तिसम्पन्न मगध कुछ काल के लिये जो अधीन होगया था उसने फिर गर्वोन्नत होकर अपना यश और गौरव दिग-दिगन्त में फैलाया।

ग्रन्थमाला-मालाकार—

रामदहिन मिश्र।



CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

॥ श्रीः ॥

विहार का विहार ।

१ ऐतिहासिक विहार ।

परिचय ।

जिस प्रदेश में सरयू, गण्डक, शोणभद्र और कर्म्मनाशा आदि प्रसिद्ध नदियाँ गङ्गा से मिली हैं; जिस प्रदेश की पूर्वी-सीमा की ओर पूरब की ओर बहनेवाली गङ्गा का मुँह दक्षिण की ओर फेर देने वाली राजमहल की पहाड़ी विराजमान है; जिस प्रदेश के वीचोवीच में बहनेवाली गङ्गा उत्तर भाग को मिथिला और दक्षिण भाग को मगध नाम से बाँट देती है; जहाँ जनकपुर, गया, वैद्यनाथ, हरिहरक्षेत्र आदि भारत-प्रसिद्ध हिन्दूतीर्थ हैं; जहाँ पाटलिपुत्र (पटना), मुद्गिर (मुँगेर), व्याघ्रसर (बक्सर), सहस्रारम, विहार, भोजपुर, चम्पानगर (भागलपुर के निकट), भगदत्तपुर (भागलपुर), राज-गृह और वैशाली (समस्तीपुर के निकट) तथा नालन्द (विहार के पास बड़गाँव) आदि प्राचीन गौरवशाली ऐतिहासिक नगर जहाँ तहाँ जैसी तैसी अवस्था में सुशोभित हो रहे हैं; जहाँ प्राचीन भूतत्व-विद्या का सुप्रसिद्ध विद्यापीठ राजमहल की पहाड़ी, प्राचीन वौद्धकाल और मौर्य्यसाम्राज्यकाल के अनेक उत्कृष्ट चिह्नों से गौरवान्वित होने वाली राजगिर (राजगृह)

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

और बराबर पहाड़ तथा रोहिताश्वगढ़* और शेरगढ़† के सुदृढ़ दुर्गों (मजबूत किलों) से विभूषित कैमूर की पहाड़ी आदि प्रधान और प्रसिद्ध पहाड़-पहाड़ियाँ विद्यमान हैं; जहाँ दो २ ढाई २ हजार वर्ष की पुरानी चीजों (मूर्तियाँ, सिक्के, स्तम्भ, शिलालेख, बरतन आदि) को अपने पेट से पैदा करने वाली कुम्हडाड, बड़गाँव आदि ऐसी खँडहरें मौजूद हैं; उसी प्रदेश का नाम '*विहार*' है।

जिस प्रदेश की दक्षिण सीमा की ओर महानदी लहरा रही है और पूर्वी सीमा बङ्गोपसागर की ऊँची २ तरङ्गों से टकराती रहती है; जहाँ ४०० वर्गमील में २२ कोस की लम्बी चिल्का झील है तथा विश्वविख्यात श्री जगन्नाथ जी का सुविशाल मन्दिर अपने बनाने वाले चतुर कारीगरों की कारीगरी और हाथों की सफाई का नमूना बन रहा है; जहाँ के अस्सी गिरी (अस्सिया पहाड़ी) की ऊँची २ चिकनी चट्टानों पर बहुत पुराने २ मन्दिरों, मठों और देवालयों के ध्वंसांश (टूटे फूटे हिस्से) तथा प्राचीन भारतीय शिल्प कला कौशल के अनेक उत्तमोत्तम नमूने विद्यमान हैं; जहाँ भुवनेश्वर के मन्दिर की विचित्र कारीगरी आज दिन भी असंख्य दर्शकों को आश्चर्य में डाल रही है; और जहाँ "पुरी" के पास में हा उदयगिरि तथा खण्डगिरि नामक पहाड़ियों में दो २ हज़ार वर्ष की बनाई हुई सुन्दर २ गुफाएँ आज भी अपनी विलक्षण

* रोहितासगढ़ का क़िला, मुग़ल बादशाहों की बादशाहत के वक्त से बहुत मशहूर हुआ है, चूँकि वह इससे भी बहुत पहले का बना हुआ है और समुद्र से इसकी उँचाई १४९० फ़ीट कूती गई है।

† शेरशाह ने १५४०-४१ में शेरगढ़ का क़िला बनवाया था।

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

बनावट दिखला कर जैनियों की प्राचीन महत्ता का बोध करा रही हैं, वही प्राचीन " उत्कल " प्रदेश, अब " *उड़ीसा* " नाम से प्रसिद्ध—विहार के दक्षिण में–वर्तमान है।

उक्त दोनों--विहार और उड़िस्सा--प्रदेशों के बीच में *छोटा नागपुर* नामक एक छोटासा प्रान्त है। इसी प्रान्त में पारसनाथ की वह प्रसिद्ध पहाड़ी है जिस पर जैनियों के चौवीसवें तीर्थङ्कर पार्श्वनाथ जी ने तपस्या कर शुद्ध सिद्धि और पवित्र निर्वाण प्राप्त किया था।

विहार नाम पड़ने का कारण ।

" विदेशियों के इतिहास में विहार के नाम एनाकाक, परासी, मुवाद, मकियातो, मगत्कफ तथा अतूखोख आदि हैं। बौद्ध तथा जैनी इसे पाली-देश और सौवीर कहते हैं। "

--हिन्दी मासिक मनोरञ्जन का विशेषाङ्क।

" इस प्रदेश की वासन्ती शोभा पर मुग्ध हो कर और इसे ऋतुराज महाराज वसन्त की विहार-भूमि समझ कर मुसलमान बादशाहों ने इसका ' विहार ' नाम रक्खा। "

--एक अँग्रेज़ी विद्वान्।

किन्तु इतिहास से तो यही पता लगता है कि इसमें बौद्धों के बहुत से मठ होने के कारण इसका नाम विहार पड़ा। क्योंकि संस्कृत में " विहार " शब्द का अर्थ ' मठ ' ही है।

आज भी प्राचीन ' विहार ' नामक नगर में अनेक बौद्ध मठों की खँडहरें दीख पड़ती हैं।

उड़ीस्सा निवासियों में उड़िया भाषा बोलनेवालों की संख्या बहुत अधिक होने से ही शायद ' उत्कल ' प्रान्त का यह प्रचलित नाम ' उड़िस्सा ' प्रसिद्ध हुआ।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

छोटा नागपुर के विषय में एक अँग्रेज़ी विद्वान की राय है कि " राँची के पास जो ' चुटिया ' नामक एक छोटा सा गाँव है, जो किसी समय मध्यभारत की अधित्यका पर अनेक राज्य का सिक्का जमानेवाले नागवंशी राजाओं का प्रधान वासस्थान था उसीके नाम के आधार पर धीरे २ समूचे प्रान्त का नाम *छोटानागपुर* हो गया।

ऐतिहासिक विवरण।

हिन्दुओं के अत्यन्त प्राचीन युगों में मिथिला (उत्तर-विहार या तिर्हुत) विदेह जनक का राज्य था। पुराणों और इतिहासों में लिखा है कि "महाराज निमि ही विदेह वंश के प्रथम राजा और इस वंश की प्रतिष्ठा करनेवाले हुए। निमि के पुत्र मिथि हुए, इन ही के द्वारा मिथिलापुरी बसाई गई"। मिथिलाधिपति राजर्षि जनक बड़े ज्ञानी, ध्यानी, योगी, यशस्वी और शान्त-प्रकृति के राजा थे। उस पुण्यश्लोक नृपति की प्रसिद्ध राज-सभा में बड़ी २ दूर से आनेवाले जिज्ञासु विद्वान् जुटते थे।

मई १९१५ की सरस्वती में डाकूर गंगानाथ झा एम० ए० ने लिखा है कि "सन् ४७८ से सन् ७२२ वैशाख शुक्ल षष्ठी पर्य्यन्त कार्णाट क्षत्रिय नान्यपदेव के वंश के राजाओं ने मिथिला में राज्य किया। इसके अनन्तर ३४ वर्ष तक मिथिला में कोई राजा न था। फिर सन् ७५६ में ओइनवार मैथिल ब्राह्मण कुल के राजा हुए। इसके अनन्तर १० वर्ष मिथिला प्रान्त बिना राजा का रहा। तदनन्तर खण्डवलाकुलकमलदिवाकर नैयायिक महामहोपाध्याय महेश ठक्कुर ने अकबर बादशाह के हाथ से मिथिला राज्य पाया। इसी वंश के राजा अभी तक मिथिला (दर्भङ्गा ?) के राजा हैं।" किन्तु मिथिला के बीच

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

(मध्यकाल) का इतिहास अंधकार के गर्भ में छिपा हुआ मालूम पड़ता है। आगे चल कर कुछ विवरण मिलेगा।

दक्षिण विहार में भी किसी बहुत ही पुराने समय में जरासन्ध नामक अतिशय बलिष्ठ, रणधीर, वीर, महापराक्रमी और परम प्रतापी राजा राज्य करता था। पुराणों और इतिहासों से पता चलता है कि "महाराज जरासंध के पश्चात् उसके वंश के २३ राजा मगध के सिंहासन पर बैठे थे। २३ वें राजा का नाम रिपुञ्जय था। इस रिपुञ्जय को इसके मंत्री (शनक) ने संहार किया ......। परन्तु इस राज्य को स्वयं न भोगा। अपने पुत्र का उस अधर्मप्राप्त सिंहासन पर आरूढ़ कराके वह संसार से विदा हो गया। राजघाती शनक के पुत्र से ले कर उसके पाँच वंशधरों ने मगध की गद्दी का अभिषेक प्राप्त किया था।...... इन पाँच राजाओं ने १३८ वर्ष तक राज्य किया था।" फिर वे ही ग्रन्थ बतलाते हैं कि "(राजघाती शनक के राजवंश का नाश होने पर) उस ही काल में शिशुनाग नामक एक विजयी राजा प्रचण्डबल के साथ भारतभूमि में आया और जरासंध के सिंहासन को अपने अधिकार में किया। शिशुनाग से लेकर उसके वंश के ......१० राजा मगध के सिंहासन पर बैठे थे।......१० राजाओं ने ३६० वर्ष तक राज्य किया।" जनवरी १९१७ की सरस्वती के एक महत्वपूर्ण लेख से विदित होता है कि "प्राचीन मगध का शैशु-नाग-वंश पहला राजवंश है। ईस्वी सन् के पूर्व छठी शताब्दी में, इस वंश का पाँचवाँ राजा बिम्बसार हुआ।......उसने राजगृह की नींव डाली और अंग देश जीत कर उसे अपने राज्य में मिलाया।......बिम्बसार की दूसरी रानी, अर्थात् लिच्छवियों की राजकन्या, से बौद्ध

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

इतिहास-प्रसिद्ध अजात शत्रु उत्पन्न हुआ, जो अपने पिता की हत्या करके गद्दी पर बैठा, और जिसने लिच्छवियों का देश (आधुनिक तिर्हुत) जीत कर अपने राज्य में मिला लिया।" इससे यह सिद्ध हुआ कि* "ईसा के छः सौ वर्ष पहले शिशु-नागवंशीय राजाओं का राज्य विहार में था। उनमें विम्वसार और अजात शत्रु बड़े वीर थे"। † शिशुनागवंशी राजाओं के पश्चात् कितने एक शूद्र राजा मगध के राजसिंहासन पर बैठे थे। शिशुनाग का वंश लोप होते २ मौर्य्यवंश ने मगध के वंश पर अधिकार कर लिया।...इस मौर्य्यवंश में सब १० राजा हुए थे। इन दश राजाओं ने १३७ वर्ष तक राज्य किया था।"

जब से मगध मौर्य्य-साम्राज्य की छत्रच्छाया में शान्ति उपभोग करने लगा तब से विहार के विश्वसनीय इतिहास का पता चलता है अर्थात् महात्मा ईसामसीह के देहान्त से पूर्व की छठवीं शताब्दी से विहार का ऐतिहासिक वृत्तान्त विश्वस्त-सूत्र से जाना जाता है।

शिशुनाग राजवंश के बाद जिस शूद्र वंश का ऊपर उल्लेख कर चुके हैं शायद उसी वंश के प्रसिद्ध सम्राट् महानन्द थे, जिनके समय में सिकन्दर ने भारत पर चढ़ाई की थी। महा-राज महानन्द ही जगज्जेता सिकन्दर (अलक्षेन्द्र) से सामना करने को दलबल के साथ तैयार हुए थे। इसी नन्द वंश के पराभव के उपरान्त मौर्य्य वंश का प्रादुर्भाव हुआ। यहाँ पर एक बात यह छूटती है कि जिस समय विहार में शिशुनागों का बोलबाला था उसी समय विहार में बौद्ध और जैन धर्म का सूत्रपात हुआ था। विम्वसार के ही राजत्वकाल में बौद्धधर्म के अभ्युदय, अनर्गल प्रचार, आशातीत उत्थान और सिद्धान्त

* हिन्दी मासिक मनोरञ्जन विशेषाङ्क। † राजस्थान इतिहास।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

बद्ध-मूल हुए। कहते हैं कि शिशुनागों के अधिकार में ही लिच्छविजाति के वंशधर भी थे, जिनके कुल में जैनमत-प्रवर्त्तक श्री महावीर स्वामी आविर्भूत हुए थे।

हिमालय की ओर से आ कर तिर्हुत में अड्डा जमाने वाले तूरानी जाति के लुटेरों से देश की रक्षा करने के अभिप्राय से उक्त महाराज अजातशत्रु ने पाटलिपुत्र नगर की प्रतिष्ठा की थी। पुनः बहुत दिनों के बाद मौर्य्यसाम्राज्य के संस्थापक भारत सम्राट् महाराज चन्द्रगुप्त ने पाटलिपुत्र को अपनी प्रसिद्ध राजधानी बनाया। उस समय यह नगर अपनी उन्नतावस्था की चरम सीमा तक पहुँचा हुआ था। इसी नगर में यूनानी भारतयात्री मैगस्थनिज़ (मेघस्तन) चं० गु० की राज-सभा में आया था। चन्द्रगुप्त ने ही यूनानी सिल्यूकस को जीता था और उसकी *परम सुन्दरी युवती कन्या का पाणिग्रहण किया था। नन्दवंशीय मगधराज को हरा कर ईस्वी सन् के ३२२ वर्ष पहले चन्द्रगुप्त सिंहासनासीन हुए। किन्तु, केवल २४ वर्ष तक राज्य करने के बाद ही ईस्वी सन् के २९२ वर्ष पहले उनका देहावसान हो गया। इसके पौत्र सम्राट् अशोक की उज्ज्वल-कीर्त्ति तो भारत के प्रत्येक प्रान्त के शासनस्तम्भों द्वारा प्रसिद्ध ही है। यह बात पुष्ट प्रमाणों से सिद्ध हो चुकी है कि†

---

* जिसके समक्ष न एक भी विजयी सिकन्दर की चली,
वह चन्द्रगुप्त महीप था कैसा अपूर्व, महाबली।
जिससे कि सिल्यूकस समर में हार तो था ले गया;
कान्धार आदिक देश दे कर निज सुता था दे गया॥
(भारतभारती)

† मनोरञ्जन (हिन्दी) विशेष अङ्क।

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

"भारत में सब से पहले पटने में ही म्युनिसिपैलिटी स्थापित हुई थी और अशोक महाराज के राजत्वकाल में ही उसकी स्थापना हुई थी।" नवम्बर १९०८ की सरस्वती के एक लेख से प्रकट होता है कि "राजधानी पाटलिपुत्र का शासन बहुत अच्छी तरह होता था। युद्ध विभाग की तरह नागरिक प्रबन्ध (Municipality) के लिए भी ३० राजपुरुष नियुक्त थे और पाँच २ सभ्यों की पृथक् २ छः पञ्चायतें (सभायें) थीं। पहली सभा का काम देशी कारीगरी का देख भाल करना था। दूसरी सभा के ऊपर विदेशियों की चालचलन पर दृष्टि रखने का भार था। तीसरी सभा शहर में आदमियों के मरने तथा जन्म लेने का लेखा रखती थी। वाणिज्यव्यवसाय का प्रबन्ध चौथी सभा के जिम्मे था। पाँचवीं सभा का काम दस्तकारी की उन्नति करना था। माल बिक्री होने पर कर वसूल करने का काम छठीं सभा के हाथ में था।" बौद्ध-सम्राट् अशोक के शासन-काल में बौद्ध मत भारत का राष्ट्र-धर्म होगया था। उनके साम्राज्य भर में दया, अहिंसा, सत्य, दान, न्याय, सच्चरित्रता, सद्भाव, विद्या आदि सद्गुण मूर्त्ति-मान होकर स्वच्छन्द विचरण करते थे। * "उन्होंने मनुष्य-मात्र के ही लिए नहीं किन्तु पशुओं और पक्षियों के लिये भी औषधि-शालाएँ बनवाई थीं। अनेक तड़ाग तथा कूप भी उन्होंने खुदवाये थे। सड़कों के दोनों तरफ़ प्रचण्ड मार्त्तण्ड की प्रखर किरणों से पीड़ित और श्रान्त पथिकों के सुखार्थ वृक्ष लगवाये थे। प्रजा की शिक्षा के लिये उन्होंने बहुत ही अच्छा प्रबन्ध किया था। प्रजा का चरित्र सुधारने की भी उन्होंने यथासाध्य चेष्टा की थी।"

* सरस्वती, मई १९१७।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

एक बात और यहाँ कहने से छूटती है। वह यह है कि भागलपुर के पड़ोस में अंग-राज्य और उड़ीसे में कलिङ्ग-राज्य, दोनों ही, बहुत पुराने राज्य हैं। इसी कलिङ्ग-राज्य पर, जो बङ्गोपसागर के किनारे लम्बायमान विस्तृत था, अशोक ने बड़ी भारी–भयंकर–चढ़ाई की थी। यद्यपि विजय लक्ष्मी ने सम्राट् अशोक के ही गले में जय-माल पहनायी तथापि भीषण रक्तपात और शस्त्राघात द्वारा भयानक नर-वध-लीला का रोमाञ्चकारी दृश्य देखते ही उन्होंने अहिंसा-धर्म-विशिष्ट बौद्धमत का अटलरूप से अवलम्बन कर लिया। अंगराज्य के विषय में एक भागलपुरी विद्वान् ने अनुसंधानपूर्वक लिखा है कि–"कभी स्वतंत्र राज्य के समान और कभी मगध के अन्तर्गत होकर अंग राज्य भी धीरे धीरे उन्नति करता गया। आखिर क्रमशः उत्कर्ष लाभ करता हुआ यह एक स्वतंत्र राज्य हो गया जब कि मगधनरेश जरासंध ने अङ्गराज्य पाण्डवों के अर्द्ध-भ्राता कर्ण को दे डाला।......उनकी वीरता पर मुग्ध होकर जरासंध ने उन्हें यह राज्य दिया था। यह राज्य गंगा-नदी के दक्षिणी किनारे पर था, पश्चिम में मुँगेर और पूर्व में राजमहल तक फैला हुआ था। इसकी राजधानी चम्पापुर मालती (वर्त्तमान चम्पानगर) थी। वायुपुराण से सिद्ध होता है कि अङ्ग की पश्चिमी सीमा मगध थी और 'किउल' नदी दोनों प्रान्तों को विभक्त करती थी। खड्गपुर की वर्त्तमान पर्वत-माला इसकी दक्षिणी सीमा थी। राजमहल के निकट जहाँ गंगा मुड़ी है, अंगराज्य की पूर्वीय सीमा थी। ईसा के ५००–२०० वर्ष पूर्व तक अंग मगध के अधीन रहा। मगध का विख्यात राजा बिम्बसार अंग का भी राजा था *।"

* हिन्दी मासिक मनोरञ्जन विशेषाङ्क।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

पाँचवीं शताब्दी में फ़ाहियान नामक चीनी यात्री विहार-भ्रमण करने आया था। उस समय एक ओर तो सम्राट् अशोक के स्वर्गारोहण के उपरान्त मौर्य्य-साम्राज्य का दीप-निर्वाण हो रहा था और दूसरी ओर विहार पर धीरे २ गुप्त-वंशी राजाओं की धाक जम रही थी। टाडराजस्थान इतिहास में तो न जाने क्यों ऐसा लिखा हुआ है कि "मौर्य्यवंश के पिछले राजा महाराज वृहद्रथ को राज्य से अलग कर के अष्टमित्र नामक एक राजा ने बलात्कार मगध के सिंहासन पर अपना अधिकार किया। इसके वंश में आठ राजा हुए। ये आठों राजा ११२ वर्ष तक मगध के सिंहासन पर रहे थे। भूमित्र नामक एक वीर कराव देश से चढ़ाई करने के लिए मगध देश में आया। और शीघ्रही ...... वहाँ के सिंहासन पर अपना अधिकार किया। उस सिंहासन पर क्रमानुसार उसके २३ वंशधरगण राज्य कर गये।" जनवरी १९१७ की सरस्वती के एक लेख से यह ठीक ठीक ज्ञात होता है कि "सन् ३०८ या उसके आसपास गुप्तवंश के चन्द्रगुप्त (प्रथम) ने लिच्छवियों की राजकुमारी कुमार-देवी का पाणिग्रहण किया।... जिस समय यह विवाह हुआ था उस समय मगध का आधिपत्य लिच्छवियों के हाथ में था; किन्तु इस विवाह सम्बन्ध से वह राजशक्ति ...... चंद्रगुप्त (प्रथम) के हाथ में चली गई।... गुप्तकाल के राजों के समय से, विशेष कर के भारतवर्ष में लिच्छवि-वंश का क्या हाल हुआ, यह इतिहास के गर्भ में छिपा हुआ है।" सर रमेशचन्द्र दत्त, भारतीय इतिहास के एक प्रधान आचार्य्य माने जा चुके हैं। वे अपने इतिहास में लिखते हैं कि 'सम्राट् अशोक के बाद छ राजाओं ने ४० वर्ष तक राज्य किया। उसके बाद मगध पर दाक्षिणात्य के आन्ध्रवंशी राजाओं

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

का प्रभुत्व स्थापित हुआ। किन्तु कन्नौज के प्रतापी गुप्तवंशी राजाओं ने बलपूर्वक मगध को अपनाया। इस वंश का पहला प्रतापी राजा चन्द्रगुप्त (प्रथम) हुआ, जो विक्रमादित्य के नाम से भी प्रसिद्ध हो चुका था। उसका पुत्र समुद्रगुप्त ही उसका उत्तराधिकारी हुआ। यहाँ तक लिखा है कि इसी समुद्रगुप्त ने काञ्ची (काञ्चीवरम्) और केरल (ट्रावङ्कूर) आदि देशों पर विजय प्राप्त किया था और बङ्गाल, असाम, नैपाल, फारस तथा सिंहल आदि देशों के राजा भी उसकी आज्ञा शिरोधार्य्य कर पालन करते थे। वह बड़ा भारी विद्वान् था, अतएव कविराज की पदवी से भूषित था। इसीका पौत्र कुमारगुप्त बड़ा वीर और पराक्रमी राजा था। अप्रैल १६१८ की प्रतिभा मे श्रीमान् पंडित महावीर प्रसाद द्विवेदी अपने एक लेख में लिखते हैं कि "गुप्तवंशीय कुमारगुप्त भारत वर्ष का चक्रवर्त्ती राजा था। इसके विषय में शिलालेख में लिखा है—'चतुः-समुद्रान्तविलोलमेखलां, सुमेरु-कैलास-बृहत्-पयोधरान्। वनान्तवान्तस्फुटपुष्पहासिनीं, कुमार गुप्ते पृथिवीं प्रशासति।" इसके पुत्र स्कन्दगुप्त की भी बड़ी प्रसिद्धि है। चौथी और पाँचवीं शताब्दी में भारत पर आक्रमण करते रहने वाले हूण जाति के अनर्थकारी उपद्रवियों को स्कन्दगुप्त ने ही हिन्दुस्तान से मार भगाया था। हूणों का बहिष्कार होने से देश में शान्ति का अटल साम्राज्य छा गया पर गुप्तवंश का चिराग भी ठण्डा हो चला। खैर, जो कुछ हो, "* गुप्तवंशीय नरेशों के समय में—विशेष करके सम्राट् समुद्रगुप्त और चन्द्रगुप्त (विक्रमादित्य) के समय में—देश की

* सरस्वती अगस्त १९१७

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

यथेष्ट उन्नति हुई थी। विद्या, विज्ञान और विविध प्रकार की कलाओं का खूब प्रचार था। संसार-विख्यात महाकवि कालिदास इसी समय होगये हैं। गुप्तवंशीय नरेशों के समय में शिल्पकला, चित्रणकला, भवननिर्माणकला, संगीतविद्या, संस्कृत भाषा आदि की यथेष्ट उन्नति हुई थी। धार्मिक, मानसिक और व्यापारिक उन्नति का खूब विकाश हुआ था।"

चीनी यात्री ह्वानशाङ्ग ने सातवीं शताब्दी में विहार में आकर देखा कि यहाँ बौद्धधर्म और हिन्दूधर्म प्रतिद्वन्दिता के पथ पर साथ ही साथ अग्रसर हो रहे हैं। जनवरी १९१७ की सरस्वती में एक ठौर लिखा है कि "कोई आश्चर्य्य नहीं यदि चीनी यात्री ह्वेनसङ्ग अपनी भारतयात्रा के वर्णन में यह लिखता है कि ईसाकी सातवीं शताब्दी में वैसाली में बौद्धधर्म अपनी क्षीण दशा में था और हिन्दूधर्म का प्रचार बढ़ रहा था।"

जब उज्जयिनी के विक्रमशाली अधीश्वर भारतसम्राट् विक्रमादित्य का सौभाग्यसूर्य्य अस्त हो चला तब कन्नौज के राजा धर्म-प्राण, दानवीर, विद्वच्चक्र चूड़ामणि श्री महाराज हर्षवर्द्धन का प्रताप-चन्द्र उदित हुआ। इन भारतसम्राटों की छत्रच्छाया में विहार को थोड़े ही दिनों तक सुख की नींद से विश्राम करने का सुअवसर मिला। परन्तु महाराज श्रीहर्ष गोलोकवासी होगये तो विहारोत्कल प्रदेश को भी नैपालियों और तिब्बतियों (पहाड़ी डाकुओ) के भीषण पुनः आकस्मिक आक्रमणों के धक्के पर धक्के सहन करने पड़े थे। यहाँ तक नौवत पहुँच गई कि कुछ दिनों तक तो यहाँ की प्रजा सर्वथा अनाथ ही रही।

उड़ीसा को तो जब से अशोक देव ने जीता तब से वहाँ बौद्धमतानुयायी राजाओं का ही प्रबल प्रभाव बना रहा।

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

ईसा के बाद की पाँचवीं शताब्दी में बौद्धराज्यों का उड़ीसा में पतन हुआ और हिन्दूधर्म जड़ पकड़ने लगा। ययाति केशरी नामक एक उड़ीसा राजा के वंशधर भुवनेश्वर में राज्य करते थे। उन्हीं केशरीवंशके राजाओं ने भुवनेश्वर का अपूर्व मन्दिर बनवाया। नृप केशरी ने ही शायद कटक नगर बसाया था। केशरी वंश की इतिश्री होते ही वैष्णवधर्मावलम्बी गङ्ग वंश उठ खड़ा हुआ। इस वंश के राजाओं ने १२ वीं शताब्दी से सोलहवीं तक राज्य किया। इसी वंश में जगन्नाथ जी के प्रसिद्ध मन्दिर के प्रतिष्ठापक अनङ्गभीम राजा हुए थे। इस वंश का अन्तिम राजा पुरुषोत्तम था, जो पन्द्रहवीं शताब्दी के अन्त तक राज्य करता रहा। इसने दक्षिण पथ पर चढ़ाई की थी और काञ्ची के राजा को परास्त कर उस की कन्या से विवाह कर लिया था। इसी का उत्तराधिकारी प्रतापरुद्र था, जिसके समय में भगवान् चैतन्यदेव सरीखे प्रातःस्मरणीय महात्मा उड़ीसा प्रान्त को पवित्र और धन्य बनाने गये थे।

गङ्गवंश की समाप्ति होते ही उड़ीसा का इतिहास बिलकुल गडबड़ाध्याय में पड़ गया। अन्ततोगत्वा सोलहवीं शताब्दी में काला पहाड़ ने उड़ीसा को जीत कर इस पर मुसल्मानी राज्य का आवरण डाल दिया।*

नवीं शताब्दी में पालवंशी राजाओं ने बिहार नामक (पुराने) नगर में अपनी राजधानी स्थापित करके अनेक भव्य और विशाल भवन बनवाये थे। ये लोग राजपूत (क्षत्रिय) थे और समस्त भारत में इनकी बड़ी ख्याति थी।

* सर रमेशचन्द्र दत्तके भारतीय इतिहास से सङ्कलित।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

"* इन राजाओं के नामों के अंत में 'पाल' शब्द मिलता है। यद्यपि बङ्गाल, मगध और कामरूप पर इनका प्रभुत्व था तथापि कुछ दिनों के लिए इनका राज्य पूर्वोक्त देशों के सिवा उड़ीसा, मिथिला और कन्नौज के पश्चिम तक भी, फैल गया था। पालवंशी राजा बौद्ध धर्मावलम्बी होने पर भी ब्राह्मणों का सत्कार किया करते थे। ब्राह्मण ही उनके मंत्री होते थे। ......उनके समय में शिल्प और विद्या पूर्ण उन्नति पर थी।" जिस समय राज्यपाल समूचे आर्य्यावर्त्त मण्डल पर एकछत्र राज्य करता था उसी समय सुलतान महमूद गजनी भारत पर आक्रमण करके कन्नौज तक चढ़ आया। इस पालवंश का अंतिम राजा महिपाल हुआ, जिसका राज्य उडीसा के दक्षिणी सीमान्त तक पसरा हुआ था। इसने ५२ वर्ष के लगभग राज्य कर के इस वंश का नाम मात्र शेष कर दिया।

फिर बारहवीं शताब्दी में यहाँ सेनवंशी राजाओं का झंडा गड़ा। किन्तु बहुत थोड़े ही समय तक यह सेन-राज्य का झंडा विहार की भूमि में गड़ने पाया। सेन वंशी राजा बड़े ही कट्टर हिन्दू और संस्कृत-विद्यानुरागी थे। उन्हींकी राज-सभा में गीतगोविन्द सदृश सुललित काव्य के रचयिता कविवर जयदेव शोभा पाते थे। नवम्बर १६१७ की सरस्वती में एक विद्वान महाशय ने लिखा है कि "सेन वंशियों ने बंगाल का बड़ा हिस्सा और मिथिला प्रान्त, ईस्वी सन् की बारहवीं शताब्दी में, पालवंशियों से छीन लिया था, जिससे उनका राज्य केवल दक्षिणी विहार में रह गया था। इस वंश का अंतिम राजा गोविन्दपाल था। उसे सन् ११६७ ई० (विक्रम

* सरस्वती नवम्बर १९१७।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

सम्वत् १२५४) के निकट बख़्तियार ख़िलजी ने हराया...।... जितने बौद्ध भिक्षु (साधु) वहाँ के 'विहार' में थे उन सब को भी उसने मरवा डाला"। सर रमेशचंद्र दत्त के अनुसार लक्ष्मणसेन, माधवसेन और केशवसेन लगातार सिंहासनारूढ़ होते आये। परन्तु बल्लालसेन इस वंश का सर्वापेक्षा प्रसिद्ध राजा हुआ था। खैर, अन्तिम राजा लक्ष्मणेय बारहवीं शताब्दी के बीच में हुए। इन्होंने लगभग साठ वर्ष तक बड़ी शान्ति से राज्य किया। इनके अंतिम दिनों में अर्थात् १२ वीं शताब्दी का अंत होते ही, यहाँ मुसल्मानों ने अपनी विजय पताका उड़ाई।

१२ वीं शताब्दी बीतते २ हिन्दू राज्य का दीपक टिमटिमाने लगा। विदेशी यवनों के दुर्दमनीय आक्रमणों की जबरदस्त आँधी ने हिन्दू राज्य प्रदीप की क्षीण-ज्योति बुझा दी। तेरहवीं शताब्दी के प्रथम चरण के उषःकाल में ही हिन्दू नरेशों के शान्तिपूर्ण शासन का अवसान हो गया। राजस्थान इतिहास कहता है कि, हाय "एक समय जिस मगधदेश का शासन दण्डवीर जरासन्ध के प्रचण्ड प्रताप से प्रकाशित हुआ था, वही वंश उस महाराज के वंश-लोप होने के साथ ही साथ क्रमानुसार छः वंशों के द्वारा चलायमान हो कर अन्त में केवल शून्य नाम से शेष रह गया!"

विहारोत्कल प्रदेश में जब हिन्दू राज्यों का विध्वंस हो गया तब मुसल्मानी सलतनत का दौर-दौरा हुआ। जमाने ने बेतरह पलटा खाया। विहारोत्कल की वास्तविक अवस्था बिल्कुल बदल गई। सब से पहले मगध पर मुहम्मद गोरी के प्रतिनिधि बखतियार खिलजी ने ११९८ में बड़ी भारी चढ़ाई करके विजय पाई थी। विहार और उड़ीसा के क्रमशः

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

पश्चिमीय और दक्षिणीय अंश पर १३९७ तक जौनपुर के बादशाहों का राजत्व स्थापित था। १३९८ के तिमूरलंग के भारतीय आक्रमण के बहुत दिनों बाद सैयद बादशाह अलाउद्दीन और हुसेनशाह अपनी सेना साथ लेकर विहार उड़ीसे पर चढ़ाई करने के मनसूबे से टूट पड़े। किन्तु लोदी वंश के बादशाहों ने विहार के शासन की बागडोर अपने ही हाथों में थाम ली। १५२६ में प्रथम-मुगलसम्राट् बाबर अपनी विजय पताका लेकर भारत में उतरा और १५२९ में ही उसने लोदी-वंश के पठान बादशाहों को विहार से बहिष्कृत करके अपनी दुहाई फेर दी।

शेरशाह और हुमायूँ से बक्सर के पास चौसा (ई० आई० आर०) में लड़ाई छिड़ी पर हुमायूँ परास्त हुआ और किसी २ तरह भाग कर अपनी जान बचा सका। अन्ततः विहार शेरशाह ही के हाथ लगा। इस अफ़ग़ान शासक के नेतृत्व में विहार ने कई स्थायी और सराहनीय कार्य्यों का मुँह देखा। बंगाल से पंजाब तक खूब पुख्ता पक्की सड़क बनी। सहसराम में एक सुविशाल सरोवर के मध्यभाग में एक भव्य समाधिमंदिर की रचना हुई, जिसके गुम्बज़ की चोटी नींव से १०० फ़ीट ऊँची है और जल तल से जिसकी उँचाई १५० फ़ीट पड़ती है। शेरगढ़ के ऐसे दुर्गम दुर्गों का निर्माण हुआ। बटोहियों की सुविधा के लिए मुख्य २ स्थानों पर सरायें बनीं।

शेर के बाद फिर हुमायूँ पहुँचा। दाऊद खाँ विहार का अंतिम पठान बादशाह था, जिसे हुमायूँ के उत्तराधिकारी पुत्र मुगलसम्राट् अकबर की सेना ने राजमहल में घेर कर मार डाला। तदुपरान्त विहारोत्कल प्रदेश पर मुग़ल साम्राज्य

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

की छत्रच्छाया पड़ी। अकबर ने विहार और उड़ीसा दोनों ही सूबे का शासन-भार दो प्रान्तीय शासकों के पुष्ट कन्धे पर रक्खा। इसीप्रकार मुग़लों के शासन-काल में विहारोत्कल-प्रदेश अधिकार-प्राप्त सूबेदारों द्वारा शासित होता रहा।

इसी बीच में अँग्रेज़ी सौदागरों के विहार में प्रवेश करने का वृत्तान्त भी सुना जाता है। जहाँगीर के राजत्व-काल में (१६२०) दो अँग्रेज़ी सौदागर ज़मीन के रास्ते से पटने में तिजारत करने आये पर उनका सारा उद्योग व्यर्थ ही हुआ। शाहजहाँ के समय (१६३२) में भी फिर पटने में ही इनका उद्यम निष्फल हो गया। पुनः १६३३ में आठ अँग्रेज़ी सौदागरों ने पहले पहल आकर कटक ज़िले के हरिहरपुर में और बाद को बालेश्वर में कारख़ाना खोला।

औरंगज़ेब के अंतिम दिनों में (१७०४) मुर्शीदकुली खाँ विहार-उड़ीसे का नवाब-नाज़िम बन बैठा। मुग़लों का भाग्य-सूर्य अब निस्तेज और अस्त हो चला। मुग़ल साम्राज्य की अंधकारमयी सन्ध्या के बाद नवाबी सलतनत की चैती चाँदनी उगी। मुर्शीद के वंशधरों ने लगभग ३६ वर्षतक नवाबी गद्दी को सुशोभित किया। १७४० में अलीवर्दी खाँ ने विहार को अपनाया। जबतक इसका नवाबी शासन रहा तबतक मरहठों के लगातार आक्रमणों और नाना भाँति के भयानक उत्पातों से चारो ओर घोर अशान्ति छायी रही। उसकी सोलह ही साल की सलतनत बड़ी २ आफ़तों और मुसीबतों में फँसी रही। इसी अली का पौत्र, मिर्ज़ा मुहम्मद, जो सिराजुद्दौला नाम से विख्यात था, १७५६ में नवाबी गद्दी पर विराजमान हुआ। इसकी सालभर की नवाबी बस अंग्रेज़ों के साथ

२

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

लड़ते ही झगड़ते वीत गई। इस का प्रधान सेनाध्यक्ष मीर-ज़ाफ़र नवाबी गद्दी का अधिकारी बनाया गया और १७५७ में ही पलासी की प्रसिद्ध भयंकर लड़ाई का सूत्रपात हुआ। लड़ाई का अंत होते २ तक ज़ाफ़र के बेटे ने शिराज़ को पकड़ उसका वध कर डाला। उसके बाद तीन वर्ष तक विहार-उड़ीसे पर मीरज़ाफ़र की नवाबी छत्रच्छाया घनी बनी रही। १७६० में ज़ाफ़र को सिंहासन-च्युत कर के उसका जामाता मीर क़ासिम नवाब बनाया गया, जिसने मुँगेर को अपनी अस्थायी राजधानी बनाई। "* पूर्व समय में पाल राजाओं के बनाये हुए मुँगेर के क़िले को बंगाल के हुसेन शाह ने नया चोला पिन्हाया था और मीर क़ासिम ने उसका जीर्णोद्धार किया।" बंगाल पर स्वाधिकार स्थापित कर लेने वाले अंग्रेज़ों के हाथ में कठपुतली बन कर नवाबी की गुलगुल गद्दी की गुद-गुदी का सुख अनुभव करना क़ासिम को नहीं रुचा। अन्त को लड़ाई-भिड़ाई हो ही गई। पटने में क्रूर क़ासिम की कर्कश आज्ञा से लगभग २०० अँग्रेज़ों की लोमहर्षण हत्या हुई। इस भीषण हत्याकाण्ड के बाद क़ासिम को कई जगह हार खाकर अन्त में दिल्लीश्वर शाह आलम की सहायता से १७६४ में बक्सर की लड़ाई लड़नी पड़ी, जिसमें विजयी होने से फिर क़ासिम की गई हुई नवाबी लौट आई पर एक ही वर्ष के लिए।

इसके बाद अब मुसल्मानी सलतनत का चिराग़ ठण्ढा होगया। अँग्रेजी राज्य का अंकुर पनपने लगा। क्रमशः यह राज्य-वृक्ष मूलबद्ध होकर पल्लवित और कुसुमित हुआ। शनैः २

* हिन्दी मासिक मनोरंजन विशेषांक।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

इस वृक्ष की सघन छाया में आर्य्यावर्त्त के पूर्वीय प्रदेश की प्रजायें सुख से विश्राम करने लगीं। विहार के शासन का भार तो विषय-विलासी नवाबों ने ही अँग्रेज़ों के हवाले सौंप दिया था। उड़ीसा में भी महरठों की शासन-व्यवस्था शिथिल पड़ जाने से बड़ी अशान्ति फैली। १८०३ में उड़ीसा भी यों ही शान्तिप्रिय विजयी अँग्रेज़ों की मुट्ठी में चला आया। १८४७ में अँग्रेजों ने उड़ीसा की ज़बरदस्त खोंड़ जाति पर चढ़ाई कर के मानव-बलिदान की रोमाञ्चकारी कुप्रथा का मूलोच्छेद कर दिया। १८५५ में सौंताल परगना की बनैली जातियों (सौंतालों) ने अँग्रेज़ों के विरुद्ध लोहा लिया। परन्तु सभी हथियारबन्द उद्दण्ड उत्पाती दमननीति से पद-दलित किये गये।

विहारोत्कल प्रदेश में अँग्रेज़ों की राज्यलक्ष्मी का भव्य मंदिर अभी तो शान्ति-प्रदीप के आलोक में जगमगाया ही चाहता था कि इतने ही में पश्चिम से अराजकता की आँधी अचानक आ पहुँची। १८५७ में सिपाही-विद्रोह की आग मेरठ में भड़की। वह आग दिनदूनी रातचौगुनी धधकती गई और बड़े जोर से पूरब की ओर बढ़ती चली आई। विहार के शाहाबाद ज़िले में जगदीशपुर प्रसिद्ध राजस्थान है। वहाँ के नामी और समर्थ राजा उज्जैन-वंशावतंस बाबू कुँवर-सिंह भी बड़ी बहादुरी से इस उपद्रव में शामिल हो गए। उनके शरीक होने से विहार के गया और सम्बलपुर ज़िलों में भी घोर अराजकता और अशान्ति की दुर्दान्त मूर्त्ति के दर्शन हुए। मालूम हुआ कि इन दो तीन ज़िलों से लगभग दो सप्ताह के लिए अँग्रेज़ी राज्य उठ ही गया। चारो ओर लूट-पाट और मार-काट मच गई। निर्बल कुचल दिये गये। धन-

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

जन-मान की शोचनीय अवस्था हो गई। अन्त में आशातीत सफलता के साथ धीरधुरीण अँग्रेज़ों ने उपद्रव की बेतरह भड़की हुई आग पैरों तले मींज डाली। इसी विप्लवाग्नि को पदमर्दित कर दूरदर्शी अँग्रेज़ों ने यहाँ खूब डट कर पैर जमाया, जिसकी जड़ पाताल तक चली गई।

१९१२ में जब वर्त्तमान सम्राट् पञ्चम जार्ज का राज्याभिषेक दिल्ली में हुआ और कलकत्ते से दिल्ली में भारत की राजधानी बदल दी गई तब विहार और उड़ीसा तथा छोटा नागपुर एक ही प्रदेश बना कर एक लफ़्टिनेण्ट गवर्नर (छोटे लाट) के अधीन में रख दिये गये। छोटानागपुर के सीमान्त के पास की पाँच रियासतें मध्यप्रदेश में मिला दी गई थीं, जिनके परिवर्त्तन में अन्यान्य चार राज्य और सम्बलपुर ज़िला इसमें शामिल कर लिए गये।

विहार का प्राचीन महत्त्व।

विहार के प्राचीन गौरव की भूरि भूरि प्रशंसा करते हुए एक विद्वान् ने लिखा है कि "* भारत में सब से पहले सभ्यता तथा विद्या का प्रचार विहार में ही हुआ। वेदान्त-शिक्षा में अत्यन्त प्राचीन काल से विहार ही अग्रणी है। मिथिलेश्वर श्रीमान् महाराज जनक जी ईश्वरीय तत्व के जाननेवाले थे। उनसे शिक्षा ग्रहण करने के लिए महर्षि कृष्णद्वैपायन व्यासदेव के पुत्र श्री शुकदेव जी भक्तिभाव से नौ दिनों तक उनके

* यह अंश हिन्दी मासिक मनोरंजन के विशेषांक से उद्धृत किया गया है किन्तु बीच बीच में '—' ऐसे चिन्ह के अन्दर जो अंश उद्धृत है सो 'सरस्वती' का है।

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

४८.४
३६
२४,५४०

द्वार पर खड़े थे। प्रतिदिन सैकड़ों महर्षि उनसे वेदान्त-तत्व सीखने आते थे। 'उन जीवन्मुक्त जनक महाराज की राजधानी इसी विहार प्रान्त (मिथिला) में थी।' न्याय का भी आविष्कर्त्ता विहार ही है। मिथिला से ही नदिया में न्याय गया है। 'जिस समय नदिया के संस्कृत विद्यापीठ का नाम तक न था उस समय मुख्यतः बंगाल के और अमुख्यतः अन्य प्रान्तों के भी अधिकतर विद्यार्थी संस्कृत-शिक्षा—विशेषतः दर्शनशास्त्र की शिक्षा—के लिए मिथिला ही आते थे।' नव्य न्याय का भी सूत्रपात विहार में ही हुआ था। कपिल जी के सांख्यसूत्र का प्रचार भी हमारे इसी प्रान्त में सर्व-प्रथम हुआ था। 'न्याय-दर्शन' के रचयिता गौतम तथा सांख्यदर्शन के जन्मदाता कपिल मुनि को कौन नहीं जानता ? जिस मिथिला ने ऐसे ऐसे महानुभावों को उत्पन्न किया उसकी महिमा अवर्णनीय है। बौद्ध, जैन और चार्वाक् आदि के जाल से भारतवासियों का उद्धार करने वालों में तीन महात्मा प्रधान माने जाते हैं--कुमारिलभट्ट, उदयनाचार्य्य और शंकराचार्य्य। इनमें से पहले दो विहार ही के अधिवासी थे।' विहारभूषण कुमारिल भट्ट ने···मीमांसा पर वार्त्तिक बनाया। 'सुनते हैं, मिथिला के महाराज भैरवसिंह के समय में एक बार मैथिल विद्वानों की गणना की गई तो तेरह सौ केवल मीमांसक निकले।' व्याकरण के सर्वमान्य आचार्य्य पाणिनि पटने ही में पढ़ते थे। वार्त्तिककार कात्यायन अथवा वररुचि मनेर (पटना ज़िला) के रहनेवाले थे। अभीतक मनेर के पास कात्यायनी देवी का मंदिर है। शायद 'याज्ञवल्क्य मुनि का निवास स्थान भी मिथिला ही में था। उन्होंने याज्ञवल्क्यस्मृति नामक धर्मशास्त्र की रचना कर के इस देश को अनन्त लाभ

पुस्तकालय
गुरुकुल कांगड़ी
CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

पहुँचाया।' याज्ञवल्क्य स्मृति की प्रतिष्ठा सब स्मृतियों से अधिक है। महाराज याज्ञवल्क्य मिथिला में रहते और मिथिलापति विदेह के गुरु थे। ज्योतिष के आचार्य्य आर्य्यभट्ट भी पटने के ही रहने वाले थे। चाणक्य का नाम दुनिया भर में मशहूर है। वे बड़े भारी नीति-शास्त्रज्ञ थे। उनके पुत्र का नाम विष्णुशर्मा था, जिन्होंने हितोपदेश नाम की नीतिपूर्ण पुस्तक बनायी है। उनके शिष्य कामन्दक का बनाया हुआ कामन्दकीय नीतिसार भी प्रसिद्ध नीतिग्रंथ हैं। महामहोपाध्याय वाचस्पति मिश्र जी ने दर्शनों पर टीकायें की हैं। वे बौद्ध तथा जैन दर्शनों के भी पूर्णज्ञाता थे। (उनकी जन्मभूमि भी विहार ही है)। पण्डित मंडनमिश्रजी बड़े भारी कल्पज्ञ थे। 'मिथिला की विदुषी स्त्रियों में शिरोमणि मण्डनमिश्र की स्त्री कही जा सकती है। जब मीमांसकाचार्य्य मंडनमिश्र और परिव्राजकाचार्य्य शंकर स्वामी के शास्त्रार्थ में मध्यस्थ होने योग्य और कोई न मिल सका तब मण्डन मिश्र की स्त्री भारती ही को मध्यस्थता का भार सौंपा गया। सुना जाता है कि बाल ब्रह्मचारी शंकराचार्य्य शृङ्गाररस विषयक शास्त्रार्थ में भारती से परास्त हो गये थे।' 'महाराज शिवसिंह मिथिला के महीपों में बड़े नामी हो गये हैं। उन्होंने ग़ज़नी के शासकों का दर्प चूर्ण किया था। विद्यापति (मैथिल-कोकिल) इन्हीं शिवसिंह के सभापंडित थे। शिवसिंह की रानी लखिया ठकुराइन मिथिला की विदुषी स्त्रियों में रत्नरूपा हो गई हैं। इन्हीं का कहा हुआ है कि—रघुवंशमपि काव्यं? तस्यापि टीका? सापि संस्कृतमयी?' 'विहार प्रान्त बहुत प्राचीन समय से राजनैतिक, सामाजिक तथा धार्मिक बातों के कारण सम्पूर्ण भारतवर्ष में प्रसिद्ध है।' प्राचीन समय का सब से बड़ा

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

विश्वविद्यालय * नालन्द का था जो कि पटने ज़िले में ही अव-स्थित था। इसमें दश हज़ार विद्यार्थी और १४०० महाध्यापक थे। सभी को भोजन, वस्त्र और पुस्तकें दी जाती थीं। इतना बड़ा कॉलेज दुनियां भर में कहीं नहीं था। इस विद्यालय के साथ एक बड़ा भारी पुस्तकालय था, जिसकी पुस्तकें बख़-तियार खिलजी ने जला डालीं। कहते हैं कि कई महीनों तक लगातार दिन रात पुस्तकें जलती रहीं।"

† "ईसा का भारत में आगमन" नामक पुस्तक में लिखा है कि वे राजगृह में आये थे और उन्होंने बौद्धों से पाली भाषा सीख कर धार्मिक शिक्षा ग्रहण की थी। जैनियों के बीसवें तीर्थङ्कर सुव्रत स्वामी का कल्याणक (मरण) राजगृह में हुआ था। चौबीसवें तीर्थङ्कर महावीर स्वामी का जन्म विशाला में हुआ था और पावा पुरी में उनका कल्याणक हुआ था।

भूमण्डल भर में ज्ञान की प्रभा का विस्तार करने वाले प्रातःस्मरणीय भगवान् गौतम बुद्धदेव भी दक्षिण विहार के बोधगया नामक पुण्यस्थान में ही पीपल की शान्ति-विस्ता-रिणी शीतल छाया में समाधिस्थ हो कर दिव्य ज्ञान और

* (1) "Learned men" wrote Hiuen Tsiang "who desire to acquire renown come in multitudes to settle their doubts and then the streams of their wisdom spread far and wide."

(२) 'सभी शास्त्रों की शिक्षा यहां दी जाती थी। चीन, स्याम, सिंहल आदि देशों से भी विद्यार्थी शिक्षा पाने तथा अपनी शंका-निवृत्ति के लिए यहां आते थे।' —सरस्वती, मई १९१७

† मनोरंजन विशेषांक।

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

परम पावन निर्वाण के अधिकारी हुए थे। वंगाल के सासंक (शशांक ?) नामक राजा ने उस परम पवित्र पीपल के पेड़ को जला कर भस्म कर दिया और पाटलिपुत्र लूट कर विहार के बौद्ध मठों को तहस नहस कर डाला।

पतिव्रता शिरोमणि श्रीमती महाराणी सीता जी विहार में ही यज्ञभूमि से प्रकटित हुई थीं। मिथिला प्रान्त का सीता-मढ़ी नामक स्थान उन्हीं के शुभ जन्म की बलिहारी से धन्य और स्तुत्य हुआ है। सिक्खों के दसवें गुरु श्री गुरु गोविन्द सिंह जी की जन्मभूमि पटना ही है।

इसी प्रकार विहार की इस पुण्यभूमि में अनेक बड़े बड़े धर्म-प्रवर्त्तक, धर्माचार्य्य अथवा धर्म-संरक्षक, धर्मनिष्ठ महात्मा, महातपा महर्षि, दिग्विजयी वीर, विक्रम-वैभवशाली सम्राट्, ख्यातनामा कवि-कोविद, जगद्वन्द्य ज्ञानी तत्वज्ञ, विदुषी आर्य्य ललना, सकल-शास्त्र-विशारद पंडित तथा सुप्रसिद्ध योगी और दानवीर—कर्मवीर—धर्मधुरंधर पुरुष हो चुके हैं। इन्हीं कारणों से विहार 'यावच्चन्द्रदिवाकरौ' धन्य बना रहेगा और भारत के अन्यान्य प्रान्तों से किसी तरह इसका गौरव कम नहीं हो सकता।

❀ विहार उड़ीसे के प्रसिद्ध दर्शनीय स्थल।

(क) विहार-प्रान्त।

(१) *पाटलिपुत्र*—मेघस्तन नामक विदेशी भारत-यात्री ने इसे हिरण्यवाह (शोणभद्र) और भागीरथी के पुण्य संगम पर स्थित देखा था, जिस समय इसके चतुर्दिक २० हाथ नीची

❀ विशेषांक पाटलिपुत्र से संगृहीत।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

खाँई थी तथा दीवार में ५७० बुर्ज और ६४ फाटक थे। किन्तु अब यह महानगर उक्त संगम से बड़ी दूर पूर्व की ओर गंगा-तटस्थ है। इसका आधुनिक नाम पटना है। इसका वह पुराना रूप भूगर्भ का गौरव बढ़ा रहा है। कुछ दिनों से भू-तत्त्व-वेत्ताओं ने प्राचीन नगर के मुख्य स्थान का अनुसंधान करके भूगर्भ से बड़े परिश्रम के साथ अनेक प्राचीन पदार्थ निकालवाये हैं, जिन्हें देख कर भारत के अनुपम कलाकौशल की चरम सीमा का अच्छी तरह अनुमान किया जा सकता है।

पटने में मुसल्मान राज्य के कई चिन्ह हैं। जाफर खां की पुष्प वाटिका, शाह अर्जानी की दर्गाह, शेरशाह की मसज़िद (गुलजारबाग) पत्थर की मसज़िद (औरंगजेवी समय की बनी हुई) और अज़ीम–औरंगजेव के पौत्र की बनवाई हुई नगर की चहारदिवारी इत्यादि।

दर्गाह के समीप अशोक के एक स्तम्भ का एक खण्ड अब तक वर्तमान है। और, रेलवे लाइन से कुछ दूर दक्षिण एक बस्ती में यक्ष की मूर्ति मगध के उच्च श्रेणी के कलाकौशल का परिचय दे रही है। शहर के अन्दर नानकशाहियों का हर मन्दिर है, जहाँ माननीय गुरु गोविन्द सिंह का शुभ जन्म हुआ था। नगर के पश्चिमीय खण्ड में गोलघर नामक एक बहुत बड़ी गुम्बजदार इमारत--ईंटों की बनी हुई--६६ फीट ऊँची है, जिस की दीवार २१ फीट चौड़ी है। यह इमारत १७८६ में दुर्भिक्ष-दलित दरिद्र-दुखियों के लिए अन्नादि एकत्र--सञ्चय--करने के लिये बनी थी। इसके कुछ दूर पूर्व खुदा-बख्श खाँ की बनवाई हुई "ओरिएँटल लाइब्रेरी" है। इसकी इमारत भी देखने ही योग्य है। इसके प्रतिष्ठापक ने

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

इसकी स्थापना में लाखों रुपये खर्च किए थे। फारसी अरबी भाषाओं के दुष्प्राप्य एवं अमूल्य ग्रन्थ इसमें संग्रह किये गये हैं। लॉर्ड कर्जन ने इसकी भूरि भूरि प्रशंसा की थी।

(२) *विहार*—यहाँ का पुराना क़िला और अन्यान्य इमारतों के पुराने खँड़हर देखने योग्य अवश्य हैं पर उनकी श्री विलीन और विगलित होते देख कर शोक होता है। शहर के एक दम बाहर दो प्राचीन पुल अब तक जैसे के तैसे स्थित हैं। शहर से आधा कोस पश्चिमोत्तर पीर पहाड़ पर बड़े बड़े प्रसिद्ध फकीरों की अनेक क़ब्रें हैं। विहार के प्रसिद्ध सन्त मलिक इब्राहिम की दर्गाह यहीं है। एक दर्गाह मख़दूमशाह की भी है। दोनों पहुँचे हुए पक्के फकीर थे। वे क्रमशः १३८७ और ८७ में मरे थे। अकबर के समय में विहार के गवर्नर सईद खाँ ने जुमा-मसजिद बनवाई थी। कचहरी-ष्टेशन के पास नवरत्न नामक एक इमारत है जो किसी मुसल्मान सज्जन का ग्रीष्मावास था।

(३) *राजगिरि*—यह स्थान बड़ा ही रम्य है। वैभारगिरि, विपुलगिरि, रत्नागिरि, उदयगिरि और सोनगिरि नामक पाँच पहाड़ियों से घिरे हुए होने के कारण इसकी प्राकृतिक सुखमा पराकाष्ठा को पहुँच गई है। यहाँ अनेक उत्तमोत्तम स्थान दर्शन करने योग्य हैं जिनका वर्णन स्थान-संकोच-वश नहीं हो सकता। वैभार के उत्तर सतपाणिगुहा है, जिसमें बौद्धों की पहली बैठक हुई थी। वैभार के दक्षिण सोनभण्डार है, जिसमें बुद्धदेव के निर्वाण हो जाने पर पहली बैठक हुई थी। विपुलगिरि पर देवदत्त खोह प्रसिद्ध है। राजगिरि से गिरियक जाते समय नाग-मंदिर मिलता है। उसके पासवाले एक कूप में माया, बुद्धदेव और नन्दी-संयुक्त शिव, ये तीन

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

मूर्त्तियाँ मिली थीं। विपुलाचल से नेकपाई बाँध तक, रत्नागिरि के ऊपर ही ऊपर, पुराने समय की बनी हुई प्रस्तर-प्राचीर बावनगंगा के किनारे से हो कर चलने वाले यात्रियों को स्पष्ट दीख पड़ती है। यहाँ उष्ण जल के ५ कुण्ड हैं। पूर्व दक्षिण के कोने पर ऊपर की ओर गृद्ध्रकूट पर्वत मिलता है। उक्त-गिरियक पर हंसस्तूप दर्शन ही करने योग्य है। गृद्ध्रकूट के शिखर पर बुद्धदेव के ईंटनिर्मित स्तूप की नींव अवतक विराजमान है।

(४) *बराबरगिरि*—पटना-गया लाइन के बेला स्टेशन से ३ कोस पर यह पर्वत है। इसका पूर्वीय भाग नागार्जुनी नाम से प्रसिद्ध है। इस पर्वत में सात कृत्रिम गुहायें हैं, जिनके द्वार पर शिलालेख भी हैं। इनमें कर्णचौवर, सुदामा खोह, लोमशऋषिखोह, विश्वझोपड़ी इत्यादि प्रसिद्ध गुफायें हैं। अशोक ने इन्हें आजीवक सन्यासियों के लिए बनवाया था। पर्वतमूल में पातालगंगा नामक निर्मल निर्झर है। ऊपर की ओर सिद्धेश्वर चोटी पर सिद्धेश्वर महादेव जी हैं।

(५) *जलप्रपात*—गया ज़िले की दक्षिणी सीमा की ओर ध्रुवऋषि शिखर से पूर्व में महाचर शिखर पड़ता है। इसी में से एक नदी निकलती है, जो दक्खिन से घूम कर आती हुई इसी ऊँचे पर्वत से गिर कर ६० फीट ऊँचा जलप्रपात बनाती है। कोकनद वा काकोलत के नाम से वह प्रपात प्रसिद्ध है। इसकी प्राकृतिक शोभा विचित्र है। अनेक दर्शक प्रति वर्ष आते हैं। एक मेला भी लगता है।

(६) *आरा-हाउस*—बाबू कुँवर सिंह ने १८५७ के विद्रोह में इसी धूस के अन्दर अनेकों अंगरेज़ों को घेर रक्खा था।

(७) *सहसराम*—यह पुराना शहर पठानवीर शेरशाह की

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

जन्मभूमि है। शेर के पिता हुसेन खाँ के मकान का खँड़हर अभी तक देखने लायक़ है, जिसमें हुसेन की कब्र है। शहर से पश्चिम एक बड़े भारी सरोवर के बीचोबीच में एक सुविशाल गुम्बजदार इमारत के अन्दर शेर शाह की क़ब्र है। पोखरे में चारों ओर पक्के घाट हैं। एक ओर से पुल द्वारा समाधि-मंदिर का प्रवेश-मार्ग है। शेर के भतीजे सलीम की क़ब्र इससे कुछ ही दूर है। किन्तु एक पोखरे के बीच में यह अधूरी ही रह गई है। सहसरामी पहाड़ी का प्राकृतिक रूप अतिशय मनोहर और नेत्ररञ्जक है।

(८) *रोहतास* (*रोहिताश्वगढ़*)—यह गढ़ सत्यहरिश्चन्द्र के सुपुत्र रोहिताश्व के नाम से प्रसिद्ध है। कोई कहते हैं कि यहाँ किले में सूर्य्यदेव का विशाल मंदिर था। कोई उसे ही रोहिताश्व का मंदिर बतलाते हैं। जो हो, औरंगजेब ने एक देवमंदिर का नाम निशान यहाँ से मिटाया था। सन् ११०० में यह गढ़ हिन्दू राजा प्रतापधवल के हाथ में था। उनके वंशज राजा चिन्तामणि से शेरशाह ने लिया। यह क़िला पूर्व से पश्चिम तक दो कोस, उत्तर-दक्षिण ढाई कोस और घेरे में १४ कोस, सोन-नद से डेढ़ कोस अलग, १००० फ़ीट ऊँचा है। अन्दर घुसने के तीन मुख्य द्वार हैं, जिनमें एक बहुत बड़ा है। क़िले के अन्दर एक बड़ा सा महल है, जिसके प्रत्येक द्वार पर हाथी की एक मूर्त्ति है। आगे की तरफ़ एक बारहदरी है। इसके भीतर वाले दालान में तीन कोठरियाँ हैं। आगे बढ़ने पर शाहनसीन नाम का रास्ता है, जिसके द्वारा दुर्ग के एक अन्त से दूसरे अन्ततक सुगमता से जा सकते हैं। राजा मानसिंह का शयनागार (रंग महल)। रौशन शहीद का चौक, जालदार पत्थर से घिरा हुआ राजसिंहासन, फूलमहल,

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

फुलवारी तथा शीशमहल आदि दर्शनीय स्थान हैं। और भी बहुत सी चीज़ें क़ाबिल देखने ही के हैं।

(९) *भोजपुर*—पहले यह नगर गंगातट पर था, अब यहाँ से गंगा जी कई कोस उत्तर बहती हैं, परन्तु अभी तक पुरानी गंगा का निशान बहुत कुछ है। कई ऊँचे ऊँचे टीलों को देखने से मालूम होता है कि सचमुच यह नगर किसी समय बहुत बड़ा रहा होगा। राजा भोज का 'नवरत्न' नामक राजप्रसाद अभी तक भग्नावस्था में वर्त्तमान है। यह महल बहुत ही ऊँचा था और आधुनिक दशा से साफ़ प्रगट होता है कि इसका काम बड़ा ही पक्का बनाया गया था। बनावट भी विचित्र है। आरा ज़िले के डुमराँव राजस्थान से यह स्थान बहुत निकट है।

(१०) *राजमहल*—सन्ताल परगने में गंगा के दाहिने किनारे पर यह नगर सुशोभित है। पुराना नाम इसका आग-महल प्रसिद्ध है। कलिङ्ग से लौटती वेर राजा मानसिंह ने इसे अपनी राजधानी बना कर यह नया नाम दिया था। मुर्शीद कुली खाँ ने फिर इसे राजधानी बनाया। सौ फीट का लम्बा संगीन दालान, जो अभी ज्यों का त्यों खड़ा है, तथा मैना-तालाव देखने के योग्य ही हैं।

(११) *अजगैबीनाथ*—जमालपुर से १८ मील पूर्व सुल-तानगंज स्टेशन से उत्तर गंगा की मध्य धारा में एक पहाड़ी चट्टान पर यह प्रसिद्ध शिवमंदिर है। यात्री लोग यहाँ नाव पर जाते हैं। मंदिर पुराना है। स्थान स्वच्छ और चितचोर है। आसपास चट्टानों पर विष्णु, गणेश, सूर्य्य, भगवती और महावीर आदि देवताओं की मूर्तियाँ खुदी हुई हैं।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

(१२) *कारीसाथ (मसाढ़)*—शायद वाल्मीकि रामायण में लिखा है कि 'करुष' और 'मलद' प्रान्त बड़े पवित्र हैं, जहाँ इन्द्र की हत्या छूटी थी। वे ही दोनों प्रान्त क्रमशः कारीसाथ और मसाढ़ गाँव के रूप में अब विद्यमान हैं। ये दोनों गाँव पास ही पास हैं। इनकी भूमि में लाखों शिवमूर्तियाँ हैं। काशी की भाँति लगभग घर घर में शिवलिङ्ग हैं। ये मकान बनाते समय जमीन में से निकले थे। कारीसाथ में जैनियों का एक बड़ा भारी मंदिर है। उसकी पूर्व ओर एक शिवजी हैं। बहुमूल्य रत्नों की भाँति उनका रंग प्रतिक्षण कुछ२ बदलता रहता है। उनके पास जाने से तीन दिन पर आने वाला ज्वर छूट ही जाता है। जैनमंदिर की दीवार में एक तेजस्वी शिवलिङ्ग है। ह्वानसाङ्ग ने मसूण नामक स्थान में अनेक बौद्ध तथा हिन्दू मंदिर देखे थे। वही मसूण धीरे २ मसूढ़ के बाद मसाढ़ होगया हो तो संदेह नहीं। मसाढ़ में ही कारी साथ नामक (ई० आई० आर०) ष्टेशन है, जिसके पास बहुत लम्बा चौड़ा जलाशय बिगड़ी दशा में विद्यमान है। इसे लोग बाणासुर की कन्या उषा की क्रीड़ावापी कहते हैं। यहाँ से कुछ दूर बलिगाँव है, जहाँ शिवभक्त बाणासुर के पूर्वज बलि की राजधानी थी।

(१३) *मनेर*—पटना ज़िले में यह बहुत प्रसिद्ध स्थान है। बिहटा (ई० आई० आर०) ष्टेशन से ६ मील उत्तर है। यहाँ छोटी और बड़ी दो दर्गाहें हैं। ये दो प्रधान फ़कीरों की क़ब्रें हैं। इनकी इमारत अत्यन्त्य सुन्दर है। बिहार में मुगलों की बनवाई हुई सभी इमारतों में ये सुन्दर है और इनके झँझरीदार पत्थरों पर विचित्र फूलों की नक्कासी है। जहाँ तहाँ कुरानशरीफ़ के वाक्य खुदे हैं। छोटी दर्गाह के आगे

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

एक विस्तृत सरोवर है जिसमें चारो ओर पक्के घाट हैं। यहाँ एक दुर्गावाहन सिंह की मूर्त्ति है । निस्सन्देह यहाँ कभी हिन्दुओं का आधिपत्य था। १५३० में बाबर ने अपनी दोपहर की निमाज़ यहीं पढ़ी थी।

(१४) *अशोक स्तम्भ एवं स्तूप*—चम्पारन के अन्तर्गत "केशरिया स्तूप" से १० कोस पश्चिमोत्तर लउरिया गाँव में ईसा से २४६ वर्ष पहले का एक अशोकस्तम्भ है। पुनः बेतिया (राजस्थान) से ७ कोस उत्तर पश्चिम में एक और विशाल अशोकस्तम्भ है। यह एक ही पत्थर का बना हुआ ३२ फीट ६॥ इञ्च ऊँचा है। जड़ में इसकी परिधि का व्यास ३५॥ फीट और शिखर पर २६।२ फीट है। इस पर मुकुट स्वरूप एक व्याघ्र ६ फीट १० इञ्च ऊँचा एक पत्थर के गोलाकार लम्ब पर क्रीड़ा करता हुआ विराजमान है। स्तम्भ से बहुत थोड़ी दूर पश्चिम 'नन्दगढ़' नामक बहुत बड़ा डीह है। यह स्तूप आज तक बुद्धदेव के पवित्र समाधि का परिचय दे रहा है। इस गढ़ के गर्भ में एक लोहे की सन्दूक प्राप्त हुई थी, जिसमें एक मानुषिक हड्डी भी मिली थी। पुरातत्ववेत्ताओं ने इस गढ़ को श्मशान ही निश्चित किया है। उपर्युक्त लउरिया से १० कोस उत्तर रामपुरवा का धरा-शायी स्तम्भ भी देखने योग्य है। शिखा पर घंट विराजित है। वृषभखम्भ उसके निकट ही बिना किसी लेख के पड़ा है। हाल में यहाँ एक व्याघ्र की मूर्ति खोद कर निकाली गई है। ये सब स्थान अद्यावधि अपनी प्राचीनता और प्रसिद्धि का पूर्ण परिचय दे रहे हैं। इन्हें एक प्रकार से बौद्धतीर्थों में परिगणित करें तो कोई आपत्ति नहीं है।

विहार में और और भी अनेक स्थान दर्शनीय हैं पर

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

उनका विशेष महत्त्व न समझ कर उन्हें छोड़ दिया है। उनके लिए एक अलग पोथी चाहिये। यहाँ स्थानाभाव अखड़ता है।

(ख) उड़ीसा-प्रान्त।

(१) *सूर्य्य मंदिर—जगन्नाथ से १८ मील उत्तर समुद्रतट पर कनारक गांव के पास एक पुराना टूटा हुआ पर बड़ा अद्भुत सूर्य्य-मंदिर है। सन् १२४१ में राजा नृसिंह देव लंगोरे ने बनवाया था। उड़ीसे की बारह बरस की आमदनी उसमें खर्च हुई थी। यद्यपि शिखर बिल्कुल गिर गया है पर फिर भी जितना बाकी है, सवा सौ फीट के लगभग ऊँचा होगा। कहते हैं कि किसी समय उसके ऊपर एक टुकड़ा चुम्बक का इतना बड़ा लगा था कि लोहे के कील-काँटे वाले जहाजों को, जो उस तरफ से निकलते थे, किनारे पर खींच लेता था। उस मंदिर का जगमोहन अथवा सभामण्डप साठ फीट लम्बा, इतना ही चौड़ा और ऊँचा है। दीवारें २० फीट तक मोटी हैं। यह मंदिर निरे पत्थरों का बना है। पत्थर लोहे से आपस में जड़ दिये गये हैं। पत्थरों में अनेक प्रकार की मनोहर मूर्त्तियाँ और लतापुष्प के विचित्र चित्र बड़ी निपुणता से उरेहे गये हैं।

(२) खंडगिरि—भुवनेश्वर से पाँच मील पच्छिम इस नाम की पहाड़ी है। उसके कई स्थानों में पत्थर काट २ कर सुन्दर सचिक्कण गुफाएँ बनी हुई हैं। शिलालेखादि भी हैं। ये सब बहुत पुराने हैं। वहाँ बहुत से पुराने मंदिरों के टूटे हुए खंभे भी पड़े हुए हैं। जैन-मत की बहुत सी मूर्तियां भी

* माननीय राजा शिव प्रसाद सितारेहिन्द के भूगोल हस्तामलक से।

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

हैं। उड़ीसा के केशरी-राजकुल के महाराज ललितेन्द्र के सुन्दर महलों के चिन्ह भी वर्तमान हैं।

(३) *उदयगिरि*—इस पहाड़ी में भी ईसा से सैकड़ों वर्ष पूर्व की बनी हुई सुन्दर सुहावनी गिरि-कन्दरायें हैं। प्राचीनता और अतीत भारत की शिल्प-कुशलता की दृष्टि से इनका महत्त्व बहुत उच्चकोटि का है। यह पुरी ज़िले में है।

(४) *अस्सीगिरि*—कटक ज़िले में यह पहाड़ी भी उसी गौरव-गरिमा के गर्व से सिर ऊँचा किये हुए है जिस गौरव को पा कर उदय-खण्डगिरि पहाड़ियाँ आजतक सम्मानित हो रही हैं। इसमें भी अनेक सुन्दर गिरिगह्वर, जीर्ण-शीर्ण मठ-मन्दिर और पुरानी कारीगरी के अनूठे २ नमूने दर्शन-महत्त्व से परिपूर्ण हैं।

(५) जहाज़पुर—कटक से ३५ मील उत्तर वैतरणी-तटस्थ प्राचीन नगर है। अब केवल नगर का ध्वंसावशेष मात्र है। मन्दिरों और महलों के खँड़हरों से मालूम होता है कि यह किसी समय प्रसिद्ध नगर और हिन्दू-तीर्थ था। यहाँ अनेक मूर्तियाँ भी हैं।

उड़ीसे में भी और और दर्शनीय स्थान हैं पर उनमें उल्लेख्य महत्त्व न देख कर विस्तार-भय से यहाँ संकोच किया गया है।

विहारोत्कल में पुरातत्त्वसामग्री।

विहार प्रान्त की प्राचीन सभ्यता के गौरवों में पहला नगर राजगृह का है। ऐसे पवित्र स्थल वास्तव में पृथ्वीतल पर स्वर्ग-सुख अनुभव कराने वाले हैं। इसके बाद लउरिया नन्दगढ़ का नम्बर आता है। यहाँ वैदिक युग के समाधि-स्तूप हैं। बराबर की पहाड़ियों में कुछ ऐसी गुफ़ायें बनी

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

हुई हैं जिनका प्राचीन-भारत के इतिहास से गाढ़ा सम्बन्ध है। गुप्तेश्वरनाथ की पहाड़ियों में भी कुछ गुफ़ायें हैं। बराबर की गुफ़ाओं के समान ये भी अन्धकारमय हैं। उक्त गुफाओं की रचना विचित्रतापूर्ण है। राजगिरि का गिरियक स्तूप तथा तिर्हुत के अनेक बौद्धचैत्य तथा बौद्धस्तूप विहार के पुरातत्त्व सम्बन्धी रहस्यों से भरे हुए हैं। पटना नगर के पास कुम्हरार गाँव में प्राचीन पाटलीपुत्र का ध्वंसांश भूगर्भ से प्रगट हो रहा है। वहाँ अमूल्य पुरातत्त्व की वस्तुयें मिल रही हैं। विहार, वैशाली, नालन्द आदि बौद्ध-नगरों में भी बहुमूल्य पुरातत्त्व सामग्री भरी पड़ी है, जो प्राचीनता की दृष्टि से दुर्लभ और महत्त्वपूर्ण हैं। जहाँ बुद्धदेव ने सम्बोधि प्राप्त की थी वह बुद्धगया और असंख्य शिवलिङ्गों और प्राचीन मूर्त्तियों से सम्पन्न मसाढ़ गाँव भी पुरातत्त्वज्ञों के विशेष प्रेमभाजन हैं। पुरातत्त्व के अनुसन्धान करने वालों ने यह ढूँढ निकाला है कि भागलपुर के पास कहलगाँव (Colgoug) में किसी समय एक विश्वविद्यालय था। पुरी ज़िले में धवली पहाड़ी पर कुछ शिलालेख हैं और ससराम के पास पहाड़ी पर भी कुछ प्राचीन अक्षर शिलाओं पर अङ्कित हैं। अस्सी-उदय-खण्ड-गिरि पहाड़ियाँ तो ऊपर के अपने विशद वर्णन से ही स्पष्ट प्रकट करती हैं कि उनमें कितना पुरातत्त्व-महत्त्व है। कनारक और भुवनेश्वर के मन्दिर तो अपनी अद्भुत रचना से पुरातत्त्वानुरागियों को उतनाही, शायद उससे भी बेशी, मुग्ध और चकित करते हैं जितना बुद्धगया और जगन्नाथ के। भागलपुर ज़िले में चम्पानगर अत्यन्त प्राचीन स्थान है। ह्वानसाङ्ग ने चम्पाराज्य को ८० मील विस्तृत और उसकी राजधानी को ८ मील के घेरे में पाया था। और, बहुत से बौद्ध-संघों को

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

जीर्णावस्था में देखा था। पुरातत्त्वज्ञों की सूक्ष्म दृष्टि में इसका महत्त्व भी बहुत अधिक हो सकता है।

इसी प्रकार अनेक स्तूप, स्तम्भ, मन्दिर, मठ, राजभवन, दुर्ग और समाधिशालायें विहार के अतिशय प्राचीन वक्षस्थल पर शोभा की अङ्गपूर्ति करती हुई पुरातत्वान्वेषणकर्त्ताओं का उत्साहवर्द्धन, मनोरञ्जन और सफल मनोरथ कर रही हैं।

* विहारोत्कल के तीर्थक्षेत्र ।

† जिन स्थानों में अवतार हुए हैं, यज्ञ हुए हैं, तपस्यायें हुई हैं तथा किसी महर्षि ने शास्त्रचर्चा की है, अथवा समाधि लगाई है, वे स्थान अब तीर्थ कहे जाते हैं। और जिन स्थानों में भक्त की पुकार भगवान् ने सुनी है वे स्थान महातीर्थ कहे जाते हैं। तीर्थ अथवा महातीर्थ की महिमा इस लिए है कि उनमें पहले का संस्कार बना हुआ है। हिन्दूजाति तीर्थरूपी रेकर्ड पर श्रद्धारूपी सूई रख कर इन दिनों भी पहले की ध्वनियाँ, स्तुतियाँ और प्रार्थनाएँ सुनती है और उनके अमोघ फल लूटती है।

(क) मगध ।

(१) *गया*—भारत के पुराण-प्रसिद्ध तीर्थों में से यह एक श्रेष्ठ वा उच्च कोटि का तीर्थ है। सभी देश के लोग यहाँ श्राद्ध करने आते हैं। यहाँ 'विष्णु-पद' प्रधान स्थान है। वह 'फल्गु नदी' से थोड़ी दूर पर है। यहाँ गदाधर भगवान् की भी मूर्त्ति है और 'बटेश्वर' तथा 'उमा-महेश्वर' ये दो

* पाटलिपुत्र और मनोरञ्जन के विशेषाङ्कों से संगृहीत ।

† पण्डित सकल नारायण पाण्डेय 'तीर्थत्रयी' ।

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

प्रसिद्ध शिवलिङ्ग हैं। गया के पास बहुत से पहाड़ तथा पहाड़ियाँ हैं। वे अत्यन्त पवित्र हैं, क्योंकि उनमें अनेक देव-मूर्त्तियाँ और समाधि-मग्न योगीश्वर हैं। गया से थोड़ा दूर बोध-गया है, जहाँ बुद्ध भगवान् ने तपस्या की थी। बोध-गया के मन्दिर का रचना-सौन्दर्य्य सर्वथा वर्णनातीत है।

(२) *राजगृह*—यह एक पवित्र हिन्दू-तीर्थ है। यहाँ अधिक मास में मेला लगता है। उक्त तीर्थ में शृङ्गी, शाण्डिल्य, वेदव्यास आदि कई महर्षियों ने तपस्या की थी। बुद्ध भगवान् भी बहुत दिनों तक यहाँ थे। जैनी भी इसे तीर्थ मानते हैं। इसके आस पास सरस्वती नामक एक नदी है। उसी के आस पास कई कुण्ड हैं। उनमें ब्रह्मकुण्ड और सीताकुण्ड बड़े प्रसिद्ध हैं।

(३) *च्यवनाश्रम*—यह पटने जिले में कहीं था। अब शोण की धारा में बह गया। कहते हैं कि कोइलवर (ई० आई० आर०) के पास में था। गया ज़िले के 'देवकुण्ड' नामक स्थान को भी च्यवनाश्रम कहते हैं, जहाँ वैशाख और फाल्गुन की शिवरात्रि में मेला लगता है।

(४) *सूर्य्यकुण्ड*—गया ज़िले की देव-राजधानी में सूर्य्य-नारायण का प्रसिद्ध मन्दिर और सरोवर है। वहाँ कार्त्तिक और चैत्र में बहुत बड़ा मेला होता है।

(५) *वत्सेश्वर महादेव*—प्राचीन काल के महाराज वत्स के स्थापित किये हुए विहटा (ई० आई० आर०) के शिवजी भी बड़े प्रसिद्ध हैं। शिवरात्रि का मेला फागुन में अच्छा जमता है।

(६) *कात्यायनी देवी*—पटने ज़िले के मनेर नामक प्रसिद्ध

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

स्थान में यह भगवती हैं। यहीं वररुचि तथा वार्त्तिककार कात्यायन ने तपस्या की थी।

(७) *शाण्डिल्याश्रम*—पटने ज़िले के दीघा नामक प्रसिद्ध स्थान में गंगातट पर कहीं यह आश्रम था। यहीं शाण्डिल्य ऋषि ने भक्तिसूत्र की रचना की थी।

(८) *सिद्धाश्रम (व्याघ्रसर)*—शाहाबाद ज़िले का बक्सर (ई० आई० आर०) नगर प्रसिद्ध तीर्थ-स्थल है। यहाँ का 'रामरेखा घाट' और 'चरित्रारण्य' बहुत ही विख्यात है। गंगातटस्थ चरित्रवन में विश्वामित्र मुनि ने यज्ञ किया था। रामचंद्र जी ने यहीं ताड़का-वध किया था। रामरेखाघाट पर श्रीरामेश्वरनाथ महादेव उन्हीं के स्थापित किये हुए हैं। यहाँ राजर्षि विश्वामित्र की एक दिव्य मूर्त्ति है। और २ अनेक मंदिर तथा साधुओं के मठ आदि दर्शनीय हैं। यहाँ के वामनेश्वर महादेव की भी प्रसिद्धि है।

(९) *सिद्धनाथ महादेव*—यह शिवालय आरानगर के उत्तर सिद्धक्षेत्र में है। सिद्धनाथ जी उपज्योतिर्लिङ्ग से प्रकट हुए हैं। शिवपुराण में इसका वर्णन है।

(१०) *भुवनेश्वर और गुप्तेश्वरनाथ*— शाहाबाद ज़िले में—सहसराम की पहाड़ियों में—इन दोनों शिवलिङ्गों की स्थापना हुई है। मूर्तियाँ अत्यन्त प्राचीन और प्रसिद्ध हैं। पहली शिवमूर्ति सहसराम नगर के निकट ही है। दूसरी भी कुछ ही दूर पर है। असंख्य दर्शनार्थी इनके दर्शनों के लिये साल भर आते जाते रहते हैं। गुप्तेश्वरनाथ जी भी शिवपुराण के अनुसार उपज्योतिर्लिङ्ग से प्रकटित हुए हैं।

(११) *क़िले की देवी*—यह भगवती मयूरध्वज नामक

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

राजा के सिंहद्वार पर स्थापित हुई थीं। उसने इनके सामने अतिथि की सन्तुष्टि के लिये अपने हाथों अपने एकमात्र पुत्र की बलि चढ़ाई थी। आरा नगर में ही उसका गढ़ था। अभी तक देवी जी की बड़ी चलती और प्रतिष्ठा है। "आरा ज़िले के भलुनी स्थान में जंगल के बीच में यक्षिणी भगवती का प्रसिद्ध मंदिर है जहाँ चैत्र के नवरात्र में बड़ा भारी मेला होता है।"

(१२) *वैकुण्ठ-तीर्थ*—पटना ज़िले के खुशरूपुर स्टेशन के पास वैकुण्ठपुर नामक प्रसिद्ध स्थान है। यहाँ शिवरात्रि में बड़ा विशाल मेला लगता है।

(१३) *ब्रह्मेश्वरनाथ*—रघुनाथपुर स्टेशन (ई॰आई॰आर॰ के पास ब्रह्मपुर स्थान है। वहाँ ब्रह्माजी के स्थापित किये हुए महादेव जी हैं। आस पास बारह कुण्ड हैं। एक में तो नहाते ही खुजली दूर होती है। इस तीर्थ का वर्णन पुराणों में विस्तृत रूप से मिलता है। यहाँ फाल्गुन और वैशाख की शिवरात्रि में मेले का बड़ा विराट् आयोजन होता है।

(ख) मिथिला (तिर्हुत)

(१) *छपरा*—इसी ज़िले में सुना जाता है कि सुरथ राजा ने तपस्या की थी और दक्षप्रजापति ने यज्ञ भी किया था। गोदना नामक स्थान में गौतम जी ने तपश्चर्य्या सम्पन्न की थी और न्यायसूत्र की रचना भी उन्होंने यहीं की थी। छपरे में ही राजर्षि दधीचि का आश्रम था।

(२) *हरिहरक्षेत्र*—इसी का दूसरा नाम है चक्रतीर्थ। यहाँ गजग्राह की पुराणप्रख्यात लड़ाई हुई थी। सोनपुर के नाम से बड़ा भारी—भारतविख्यात—मेला। यहाँ कार्तिक में

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

लगता है। जहाँ गण्डक और गंगा का संगम हुआ है वह स्थान अत्यन्त पवित्र तीर्थ है। भगवान् के चक्र से ग्राहरक्षा के समय गण्डकी के छोटे २ पत्थर रेखाङ्कित होकर परम पवित्र होगये हैं और उनकी पूजा होती है। यहाँ से कुछ ही दूर पर हाजीपुर बड़ा पवित्र स्थान है। वहाँ जो नैपाली मंदिर है वह सिद्धपीठ में है।

(३) *जनकपुर*—दर्भङ्गा ज़िले में यह एक बड़ा प्रसिद्ध स्थान है। बल्कि भारतभर के लोग इस स्थान से परिचित हैं। यहीं रामचन्द्रजी ने धनुष तोड़ा था। यहीं विदेह-राज जनक की राजधानी थी। इसी के पास सीतामढ़ी नामक पवित्र स्थान में सीता प्रादुर्भूत हुई थीं। वहाँ एक कुण्ड है। सीतामढ़ी के समीप लक्ष्मणा नदी के उस पार शिवजी का एक लिङ्ग है, जो पुराण के अनुसार आठ लाख वर्षों से भी पहले का है।

(ग) अङ्ग (पूर्वीय विहार)।

(१) *शृङ्गेश्वरनाथ महादेव*—भागलपुर ज़िले में सिङ्गेश्वर नामक स्थान वराहपुराण के अनुसार बड़ा भारी तीर्थ है। उक्त शिवजी का मन्दिर वहीं एक नदी के तट पर है, जहाँ वैशाखी शिवरात्रि को बड़ा भारी मेला लगता है।

(२) *जह्नुआश्रम*—भागलपुर ज़िले के सुलतानगंज स्टेशन के पास जहाँगीर गाँव में गंगा के बीच में एक छोटी पहाड़ी है। वहीं यह आश्रम है और अजगैबीनाथ महादेव का मन्दिर भी है। पुनर्गङ्गोत्पत्ति के कारण यह स्थान बडा पवित्र माना जाता है।

(३) *मन्दराचल*—उक्त ज़िले के बाँका डिवीज़न में मन्दार पर्वत है। उस पर मधुसूदन भगवान् का चरण-चिह्न

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

है। रामकुण्ड और सीताकुण्ड तीर्थ यात्रियों के स्नान करने के लिये बड़े पवित्र माने गये हैं। पुराणों में इस पर्वत की बड़ी महिमा लिखी हुई है। यह जैनियों का भी तीर्थ है। जैनियों ने अनेक अच्छे २ मन्दिर यहाँ भी बनवाये हैं।

(४) वैद्यनाथ जी—सन्तालपरगने में देवघर मशहूर जगह है। वहीं वैद्यनाथ महादेव का भारत-विख्यात मन्दिर है। उन्हें रावणेश्वर भी लोग कहते हैं। उनकी गणना द्वादश ज्योतिर्लिङ्गों में है। लोग गंगोत्री और हरद्वार से गंगाजल लाकर इन्हें श्रद्धा से चढ़ाते हैं। स्थान बड़ा मनोरम और रमणीक है। विहार भर में ऐसा स्वास्थ्यकर दूसरा स्थान नहीं है। उक्त शिवमन्दिर से थोड़ी दूर पर शिवगंगा-सरोवर है।

(घ) उड़ीसा।

(१) *जगन्नाथ जी* (जगदीशपुरी)—पुरी ज़िले में समुद्र-तट पर विश्वविश्रुत जगन्नाथ-मन्दिर विराजमान है। हिन्दुओं के 'चारो धाम' में से यह भी एक है। भारत में जगन्नाथ जी की बड़ी प्रतिष्ठा है। लाखों श्रद्धालु तीर्थ यात्री यहाँ हर साल आते-जाते हैं। यहाँ आषाढ़ शुक्ल द्वितीया के रथ-यात्रा-महोत्सव में असंख्य भक्तों का समारोह होता है। आस पास में और और देवस्थान भी हैं पर मुख्य यही है। इसे पुरुषोत्तमपुरी भी कहते हैं।

(२) *भुवनेश्वरनाथ*—ठाकुरद्वारे से कुछ दूरी पर भुवनेश्वर भगवान् भूतनाथ का भव्य मन्दिर है। यह स्थान बहुत प्राचीन, प्रसिद्ध, पवित्र और पूज्य है। यहाँ का मुक्तेश्वर-मन्दिर देखने ही योग्य है। यहाँ के अधिवासी कहते हैं कि किसी समय

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

यहाँ सात हज़ार मन्दिर और एक कोटि शिवलिङ्ग थे। अभी तक एक मन्दिर १८० फीट ऊँचा है। एक शिवजी की प्रतिमा भी लगभग ४० फीट की है। भुवनेश्वर कणिका में लिङ्गराज का मन्दिर भी बड़ा ही सुन्दर एवं द्रष्टव्य है।

(ङ) जैन-तीर्थ।

(१) *पावापुरी*— विहार नामक नगर से छ मील पर जैनों का सब से पवित्र स्थान पावापुरी के नाम से प्रसिद्ध है। इसी स्थान में जैनमत के प्रधान अधिष्ठाता महावीर स्वामी पञ्चत्व को प्राप्त हुए थे। स्थान की प्राकृतिक शोभा और इमारतों की बनावट देखते ही बनती है। इमारतों में प्राचीन काल की कारीगरी देख कर एकदम दंग रह जाना पड़ता है। लगभग आध मील की लम्बाई चौड़ाई वाले प्रशस्त सरोवर के बीचो-बीच में अतीव सुन्दर मन्दिर है, जिसमें जाने के लिए पुल बना हुआ है। यही महावीर प्रभु का समाधि-स्थान है।

(२) *पारसनाथ*— हज़ारीबाग़ ज़िले में निमिया घाट के निकट यह जैनियों का एक परम पवित्र स्थान है। इस पारस पहाड़ी पर जैनियों के २७ मन्दिर हैं । लगभग ५००० फीट पारस पहाड़ी की उँचाई है। जलवायु शुद्ध और स्वास्थ्य-प्रद है। प्राकृतिक शोभा अनिर्वचनीय है। ठण्ढी जगह होने से अंगरेज़ों का यह प्रियतर स्थान है। पहाड़ पर एक जल-स्रोत भी है।

इनके अतिरिक्त अस्सीगिरि, खण्डगिरि, उदयगिरि, राजगिरि, बराबरगिरि आदि पहाड़ियाँ भी जैन-तीर्थों से विभूषित हैं। (इन पहाड़ियों का वर्णन अन्यत्र हो चुका है) चम्पापुरी और मन्दार पर्वत जैनियों के नामी तीर्थ हैं। चम्पा

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

में दसवें जैनतीर्थङ्कर वासपुण्य का जन्म हुआ था। उन्हीं के नाम पर चम्पानगर और नाथनगर के जैन मन्दिर हैं। मन्दार-गिरि पर जैनी इमारतों के भड़कीले खँड़हर अब भी नज़र आते हैं।

(च) बौद्ध-तीर्थ।

(१) *बुद्धगया*—गया-धाम से ३ कोस की दूरी पर यह स्थान बौद्ध संसार में उसी मङ्गल-मूल वृक्ष के सम्बन्ध से प्रसिद्ध है, जिसके नीचे ध्यानावस्थित होकर बुद्ध भगवान ने परमपावन ज्ञान लाभ किया था। एक पीपल का वृक्ष अद्या-वधि जीवित है। वह आदि वृक्ष तो नहीं; परन्तु उसका वंशज अवश्य है। अशोक ने बौद्ध होने से पूर्व इसे जलाया था। फिर छठीं शताब्दी में बङ्गाल-नरेश शशाङ्कदेव ने उसका समूल नाश किया। यह प्रसिद्ध है कि मगध के राजा पूर्ण-वर्मा ने पुनः इसे रोपा। इतिहास के अनुसार यहां ईसा से ३०० वर्ष पहले का एक अशोक-निर्मित मन्दिर है। यह इमारत नीले रंग की ईंट से बनी थी। दो लाख खर्च करके सरकार ने इसका जीर्णोद्धार किया था। इसमें प्रस्तर-वेदी पर बुद्ध की ध्यान-मग्न मूर्त्ति है। मन्दिर के चतुर्दिक चित्रकारी की कुशलता देख पड़ती है। और २ भी अनेक पदार्थ यहाँ दर्शन-योग्य महत्त्व रखते हैं।

(२) *राजगिरि*—इसे ही राजगृह कहते हैं। इसका दूसरा पुराना नाम कुशाग्रपुर तथा गिरिव्रज भी था। २५०० वर्ष पूर्व एक समय वह था कि गिरिव्रज आनन्दसमुद्र में गोते लगा रहा था। अब यह नगर जीर्ण-शीर्ण दशा में है। यहाँ की पहाड़ी गुहाओं में कई बौद्ध-परिषदों की बड़ी २

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

तैयारियाँ हुई थीं, जिनमें एक से एक विद्वान् और मुमुक्षु जुटे थे। यहीं पहले पहल भगवान् बुद्धदेव आये थे और हिन्दू दर्शन-शास्त्र पढ़े और मनन किये थे।

(३) *वैशाली*——मुज़फ़्फ़रपुर ज़िले में जहाँ इस समय बसाढ़ गाँव हैं वहीं यह प्राचीन बौद्धनगर स्थित था। यहाँ भी बौद्ध-परिषद् हुई थी। बुद्ध भगवान् के चरणार्पण से यह भी पवित्र हो चुका है। इस नगर में कई बौद्ध राजा हो चुके हैं।

(४) *विहार*——संस्कृत में बौद्धमठ को विहार कहते हैं। किन्तु इस नाम का नगर पटने जिले में है, जिसके नाम के आधार पर समूचे प्रान्त का अभिधान 'विहार' ही प्रसिद्ध हो गया। इसका पुराना नाम उद्दण्डपुरी वा उत्तान्तपुरी था। यहाँ का दुर्ग पतित अवस्था में है। इसके भीतर अनेकों टीले मन्दिर तथा बौद्ध-विहार हैं। यहाँ बहुत बड़े २ बौद्धमठ थे। उनमें असंख्य बौद्ध-भिक्षु रहते थे। उन धर्मप्रचारक सन्यासियों को बख़्तयार खिलजी ने मरवा डाला। अब भी बौद्ध-मठों के सुविशाल भग्नांश अपनी पहली उन्नत दशा का दिग्दर्शन कराते हैं।

(५) *नालन्द*—विहार से ३ कोस दक्खिन नालन्द-विद्यापीठ था। यह स्थान बौद्ध-शिक्षा का प्रधान केन्द्र था। पाश्चात्य विद्वान् इसे बौद्ध भारत का अक्षप्रस्तर, कामसेतु तथा शिकागो कहते हैं। भारतीय विद्वान् भी इसे बौद्ध-विहार की वाराणसी (काशी) कह सकते हैं। यहाँ का सा आदर्श विश्वविद्यालय (न भूतो न भविष्यति) संसार भर में कहीं नहीं दीख पड़ता। यहाँ बुद्धदेव तीन मास तक एक विशाल मन्दिर में रहे थे। यहाँ एक से एक ऊँची २ इमारतें, सुन्दर से

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

सुन्दर मन्दिर और प्रशस्त मठ थे, जिनके अब भग्नावशेषभाग ऊँचे टीले के रूप में खड़े हैं। अब तक बड़े २ दालानों के चित्र हैं। कई बहुत बड़े बड़े सरोवर हैं। सभी लगभग एक एक मील लम्बे हैं। इनमें दधिपोखर, इन्द्रपोखर, पंसपोखर विशेष प्रसिद्ध हैं।

विहार की कई प्रसिद्ध २ पहाडियों में भी बौद्ध मन्दिर वा मठ आदि के ध्वंसांश हैं। उड़ीसा में तो बौद्धों के लिये कई गण्डे पवित्र स्थान हैं। मठ मन्दिरों के खँड़हरों और चिह्नों के दर्शन भी तीर्थ ही के बराबर पुण्य देने वाले हैं।



CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

२ प्राकृतिक विहार ।

प्राकृतिक रूप ।

साधारणतया विहार प्रान्त की स्थिति समतल भूमि पर है। गंगा की तराइयों का पूर्वीय खण्ड इसी प्रदेश में विस्तृत है। इस प्रदेश की भूमि गंगा, गंडक, सोन, सरयू और कोसी आदि नदियों की जलराशि से सिक्त कछारी मैदान से भरी हुई है। उक्त प्रसिद्ध नदियों की बाढ़ से कभी २ समूचा विहार बड़ी भयङ्करता से परिप्लावित हो जाता है। विहार प्रान्त पश्चिम से पूरब की ओर ढालू है।

गंगा से उत्तर की ओर इसका उत्तरीय खण्ड, मिथिला या तिर्हुत है। हिमालय से निकलने वाली दक्षिणाभिमुख-वाहिनी अनेक छोटी बड़ी नदियाँ इस उत्तरीय खण्ड को सींचती रहती हैं। उनमें कितनी तो बरसात में उमड़ कर अपने आस पास की, बड़ी दूर तक की, भूमि सराबोर डुबो देती हैं। कई नदियाँ तो अपनी स्रोतगति परिवर्त्तित कर के जहाँ तहाँ झील, दह, पुष्कर और ताल के समान छोटे-बड़े, छिछले और गहरे, जलाशय बनाकर छोड़ देती हैं, जो बरसात में उन्हीं नदियों की बाढ़ से अगाध जल के अंदर डूबे पड़े रहते हैं। जाड़े में वे ही सब अपने निर्मल जल का दृश्य दिखा कर गर्मी में ऐसे सूख जाते हैं कि कहीं २ वे हल चला कर जोते-बोये भी जाते हैं। कहीं २ तो खूब हरी-भरी लहलही घास उपज कर बहुसंख्यक पशुओं को आश्रय देती और अपूर्व श्री धारण करती है। गंगा से उत्तर की भूमि उत्तर से दक्षिण की ओर ढालू है।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

गंगा के दक्षिणभाग में विहार का दक्षिण-खण्ड है। यह खण्ड उत्तर की ओर ढालुआँ है। शाहाबाद ज़िले की दक्षिणी सीमा पर कैमूर की पहाड़ी अड़ी खड़ी हैं। उसके आस पास में पथरीली ऊँची भूमि है, जिसमें चरने के लिए हरी घास खूब उपजती है। इस खण्ड के दक्षिणी अंचल पर विशेषतः सघन वन की विचित्र हरियाली की छटा है। इन जंगलों के आस पास में न तो अच्छे २ खेत हैं और न अच्छी २ नहरें। पर इन जंगलों से कुछ उत्तर की ओर बहुत ही अच्छी २ नहरें और अच्छे २ उपजाऊ खेत हैं। तथा गाँवों की बस्तियाँ भी खूब ही घनी हैं। यद्यपि उत्तरीय खण्ड की तरह यह खण्ड अनेक छोटी-बड़ी नदियों के जल से परिप्लावित नहीं होता रहता तथापि शोणभद्र से निकली हुई बड़ी २ नहरों का जल चारों ओर फैला हुआ रहता है। सोन के सिवा कई और २ छोटी-मोटी गिनी-गुथी नदियाँ भी हैं जो अपने क्षुद्र जलकोष से यत्रतत्र कृषि-कार्य्य में भी अमूल्य सहायता पहुँचाती हैं और वर्षा ऋतु में बेतरह उमड़ २ कर अपने आस पास की भूमि जलमग्न कर देती हैं।

उड़ीसा के पश्चिमीय खण्ड की ज़मीन कुछ ऊँची उठी हुई और पथरीली सी है। कहीं २ ऊँची २ पहाड़ियाँ बिछी हुई हैं। उनकी तलहटियाँ अधिकतर जंगलों से छिपी हुई और खूब उपजाऊ हैं। पूर्वीय उपकूल समुद्र की ओर ढालू है।

छोटा नागपुर की भूमि कुछ ऊँची है, जिसका अधिकांश घने जंगलों से ढँका हुआ है। जो अधिकतर ऊँची भूमि है उसका ऊपरी हिस्सा नीरस और ऊसर है। ऐसी ही ऊँची भूमि उड़ीसा, सन्ताल परगना और पूर्वोत्तर में गंगा की तराइयों तक फैलती चली गई है। इसी सुविस्तृत उच्च भूमि

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

पर पसरे हुए गहन वन में तीर-धनुही धारण करनेवाली वन्य-जन्तु-भोजी एक बनैली जाति रहती है। कहीं २ जोतने बोने लायक़ पैदावार ज़मीन के टुकड़े या बड़े २ चकले भी हैं जहाँ कुछ सभ्य मनुष्यों की एक आध बस्तियाँ हैं।

प्राकृतिक दृश्य।

देखने पर तो मंत्र-मुग्ध हो कर मुक्त-कण्ठ से इसकी प्रशंसा करने की उत्सुकता होती है। कहीं ठौर २ ऊँची नीची पहाड़ियाँ हैं। कहीं जंगलों की हरियाली शोभा आकाश की नीलिमा के साथ मिल कर खिल रही है। कहीं आम के बड़े बड़े घने बाग़ बहार दिखाते हैं। कहीं आकाश छूने की चेष्टा में तत्पर ताड़ों का झुण्ड है। कहीं लाल २ पल्लव और अंगूर के से उजले २ फलगुच्छों के साथ महुआ के स्थूल वृक्षों का जमघट है। कहीं विकसित कमलों से भरे हुए सरोवर अपना स्फटिक-स्वच्छ जल पुरइन के चिकने पत्तों की आड़ में छिपाये हुए हैं। जगह जगह बर-पीपर-पाकड़ की सुखद शीतल छाया का प्रसार है। जहाँ तहाँ इमली, निम्ब कत्तार की कत्तार खड़े हैं। कहीं गांवों की बस्ती के चारो ओर किनारे २ बांस के घने झुरमुटों में चहकने वाली चिड़ियायें चहचहा रही हैं।

ग्रीष्मकाल में नग्न और शुष्क भूमि विना ओर छोर के फैली हुई दीख पड़ती है। पतली २ मेड़ें उसे अनगिनित टुकड़ों में बाँट देती हैं। ये छोटे २ ज़मीन के हिस्से खेत कहलाते हैं। ये ठीक शतरंज की बिसात की नाई एक अनूठा दृश्य दिखाते हैं। जब इनमें हरी-भरी फसल खड़ी रहती है तब तो शतरंजी बिसात नहीं बल्कि सुगापंखी मख़मली फ़र्श सा बिछी हुई नज़र आती है।

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

बरसात आते ही वसुन्धरा देवी हरी साड़ी और नीली ओढ़नी में खिल उठती है। चारो ओर हरे भरे रंगीले पौधे लहराने लगते हैं। वह निराली हरियाली एक नया रंग दरसाती है।

* "जाड़े के दिनो में धान के पौधों पर सुनहला रंग चढ़ जाता है। कमर भर के ऊँचे खड़े धान जब हवा के झोंकों से लहराते और बल खाते हुए झुक २ कर फिर उठते हैं तब सुन्दरता मानों उस हरे खेत को झुक कर सलामी उतारती रहती है। परदेदार नई बहू की तरह धान की लम्बी २ बालें घूँघट काढ़ कर धरती ताकने लगती हैं।" नदियों का जल फिटकरी साफ़-सुथरा हो जाता है। हर ओर गेंहूं, जौं, चना, रहर, मसूर और मटर के खेत खूब हरे भरे और फूले फले दीख पड़ते हैं। सरसों, कुसुम्भ, तीसी, मटर आदि के रंग बिरंगे फूलों की वासन्ती-नीलिमा-सुखमा तथा आम और महुए के वृक्षों के लाल २ कोमल चिकने पल्लवों की विमल लालिमा वरवश हृदय को प्रफुल्लित कर देती हैं।

छोटा नागपुर का प्राकृतिक दृश्य भी बड़ा ही मनोहर है। एक ओर बीहड़ जंगल और घनी झाडियों से ढँकी हुई पहाड़ियों की शान्तिदायिनी तराइयाँ हैं तो दूसरी ओर चिकनी चौड़ी चट्टानों पर निर्मल नीर वाले निर्झर मस्ती में लुढ़क रहे हैं। कहीं २ गहन वन की ठण्ढी छाया से सुशोभित और शिलाओं से परिवेष्टित विमल-जल की झीलें हैं। सूखे रूखे दिनों में भी यहाँ के घने जंगलिस्तान की हरियाली छटा नयनों को भले ही सुख देती है। वसंत में तो पलास के अनेक जंगल लाल-टहाका

---

* रचनाविचार—द्वितीय भाग, "बाकी बेबाक"—पृष्ठ १६७

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

फ़ूल कर ऐसे लहालोट बन जाते हैं कि दशो दिशायें रक्त-रञ्जित हो जाती हैं।

पहाड़-पहाड़ियाँ।

ऐसे तो विहार में केवल नाम धरने को बहुत सी पहाड़ियाँ हैं पर वस्तुतः दो ही चार ऐसी हैं जिनका महत्त्व सर्वापेक्षा अधिक, उत्तम और स्तुत्य है।

पटने ज़िले में "राजगिरि" पहाड़ी बोध-गया से पूर्वोत्तर २० कोस में पसरी हुई है। सब जगह बहुत ऊँची नहीं होने पर भी कहीं २ तो १४७२ फीट की उँचाई तक पहुँच गई है। वैभार, विपुल, रत्न, सोन और उदय, इसके भिन्न २ "पाँच श्रेष्ठ अङ्ग" हैं। इन उन्नत-मस्तक पर्वतों से घिरा हुआ राजगृह नामक प्राचीन गौरवशाली नगर का ध्वंसावशेष विराजमान है। वहाँ किसी दिन भारत-सम्राट् मगधेशों की जगजाहिर राजधानी थी। प्रातःस्मरणीय महात्मा बुद्धदेव की तपोभूमि होने के कारण यह सिद्धपीठ पहाड़ी और भी कीर्ति-धवलित हो गयी है। अनेक ऋषियों ने यहाँ तपश्चर्य्या सम्पन्न की थी। ज्वलन्त-प्रताप जरासंध का अखाड़ा अभी तक इसके प्रशस्त वक्षस्थल पर शोभायमान है। ईसा से ४७८ और ५४३ वर्ष पूर्व क्रमशः इसकी गुहाओं में बौद्ध-परिषदों की पहली और दूसरी बैठकें हुई थीं। इसमें अनेक झील, झरने और नदी-पनाले आदि हैं। पवित्र कुण्ड भी बहुत से हैं। सुन्दर २ सचिक्कण शिलायें और हरेभरे जंगल भी सोभते हैं। पञ्चान नदी के निकट "गिरियक" नामक पर्वतखण्ड पर हँस-स्तूप अब तक वर्त्तमान और दर्शनीय है।

गया से लगभग ५-६ कोस पर उत्तर की ओर "बराबर

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

पहाड़" सुशोभित है। पुराने समय की बनी हुई अनेक विचित्र २ गुहायें इसमें आजतक विद्यमान हैं। शिल्पकला-मर्मज्ञ उनकी अद्भुत रचना देख कर आज भी दाँतों अँगुली काटते हैं। ज्येष्ठ १६७२ के मनोरञ्जन में एक गयावासी सज्जन इस पहाड़ी के विषय में जैसा लिखते हैं उससे इसकी रमणीयता और महत्ता का अनुमान भलीभाँति हो सकता है। "पर्वत देखने में रम्य एवं चित्ताकर्षक है। जिस तरह यह लोकलोचनानन्दकर है उसी तरह अगम्य रहस्यों से पूर्ण एवं माहात्म्यादि से अलंकृत है। इस पर बहुत से ऐसे सुरम्य स्थान हैं जो देखते ही बनते हैं। यों तो इसमें कई एक झरने बहुत ही अच्छे हैं पर "पाताल-गंगा" इत्यादि सुरम्य और स्वच्छजल से पूर्ण वापी समान झरने देखने ही लायक़ हैं। इसमें सप्तगृह नाम का एक सात घर का बहुत ही सुरम्य और सुदृश्य भवन है जो लगातार एकसे दूसरा और दूसरे से तीसरा, एवं सात घरमें पूर्ण हुआ है। इस पर वनौषधियों की भी कमी नहीं है। जहाँ अधित्यका भूमि में "सिद्धेश्वर-नाथ" की प्रतिमा है, वहाँसे एक छोटी राह नीचे को गयी है। नीचे प्राचीन सिद्धेश्वरनाथ की प्रतिमा है। वास्तव में पाताल गङ्गा से हो कर प्राचीन मूर्ति तक पहुँचने की राह जो इन दिनों भी लोग बतलाते हैं वह अत्यन्त सङ्कीर्ण और जल पूरित है"। इत्यलम्

गया ज़िले की कौआडोल पहाड़ भी प्रसिद्ध है। किम्वदन्ती है कि कौआ बैठने से इसकी शिला हिली थी। भागलपुर ज़िले में जो मन्दारपर्वत है, उसे ही समुद्र-मथन में मथनी बनाया गया था, ऐसा हिन्दू लोग मानते हैं। कदाचित् भूगर्भ-विद्या के तत्त्वज्ञों का तो यहाँ तक कहना है कि किसी समय

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

समुद्र ही राजमहल पहाड़ के पास झकोरा मारता था। जो हो, लोकमत बहुमत से मान्य होता ही है।

मुँगेर ज़िले में "खड्गपुर पहाड़ी" जमालपुर के पास से जमुई रेलवे ष्टेशन तक फैली हुई है। इसकी सबसे ऊँची चोटी "मारुक" १६२८ फ़ीट ऊँची है। इसके दक्षिण पश्चिम की ओर "गिद्धौर पहाड़ी" है, जिसका सर्वोच्च शिखर "गिद्धेश्वर" प्रसिद्ध है।

कुछ ही दूर आगे बढ़ कर पूर्व की ओर राजमहल पहाड़ी मिलती है। यह अपनी छोटी-मोटी शाखा-प्रशाखाओं के साथ २००० वर्गमील में फैली हुई है। इसके पार्श्वप्रान्त से प्रवाहित हो कर अग्रसर होने वाली गंगा के नेत्ररञ्जक प्राकृतिक दृश्य का दिव्य दर्शन निस्सँदेह मनोमुग्धकर है। पर्वत-प्राचीर प्रक्षालित करती हुई पुण्यतोया कलुपनाशिनी अविरत कलरव से वह रही है। इसकी शोभा ही कुछ और है!

"सोमेश्वर" और "दून" नामक पहाड़ियाँ चम्पारण्य प्रान्त के नितान्त उत्तरीय सीमान्त पर ६४ मील में फैली हुई हैं। सोमेश्वर ४६ मील में और उसके दक्षिण लगभग २० मील में दून। सोमेश्वर की ऊँची २ प्रशस्त शिलाओं पर से धवलगिरि और गुसाँई-थान नामक हिमालय की ऊँची चोटियाँ बड़ी ही भड़कीली दीख पड़ती हैं। मानों, ईश्वर ने आकाश के सहारे के लिए खम्भे रच दिये हों। सोमेश्वर की पूर्वीय छोर पर नेपाल में प्रवेश करने के लिये भिखना-ठोरी नामक प्रसिद्ध "पहाड़ी घाटी" है। इसके पास तक रेल चली गयी है।

विन्ध्याचल की एक सुविस्तृत शाखा-कैमूर पहाड़ी-दक्षिण विहारान्तर्गत शाहाबाद ज़िले के दक्षिणी सीमान्त पर ८०० वर्गमील में फैली हुई है। इसका कमनीय कलेवर भी अनेक

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

झील, झरने और झाड़ियों से विभूषित है। इसीमें सबसे ऊँचा शिखर (१४८० फ़ीट) रोहतासगढ़ के पास है। गुप्तेश्वरनाथ महादेव इसी की गुफ़ा में विराजित हैं। सहसराम के पास-पड़ोस में चन्दन–शहीद और अन्यान्य कई रमणीक स्थान दर्शनीय हैं।

उड़ीसा में भी बहुत सी छोटी-मोटी पहाड़ियाँ यत्रतत्र बिखरी हुई हैं पर ४१८२ फ़ीट ऊँची बङ्कसामो पहाड़ी सब का सिरमौर है। "करलपाट" और "बफ़लियामाली" नामक पहाड़ियाँ भी क्रमशः ३६८१ और ३५८७ फ़ीट ऊँची हैं। इन्हीं पहाड़ियों में गोदावरी की सहायक नदी "इन्द्रावती" का जन्म हुआ है। हाती * और तेल नामक नदियाँ भी इन पहाड़ियों के बीच से बहती हुई महानदी की सेवा में निकल जाती हैं। जलस्राव की तरह दो ढाई हज़ार फीट की ऊँची पहाड़ियाँ महानदी और ब्राह्मणी के बीच में विराजमान हैं। उड़ीसा की पाललहरा रियासत में ३८९५ फीट की उँचाई वाली "मलयगिरि पहाड़ी" है। वैतरणी नदी के पूर्वीय तट से "मयूरभञ्ज पर्वत" उठता है। ३८२४ फ़ीट ऊँची "मेघासिनी चोटी" इसके सर पर ताज सी सोहती है। बालासोर ज़िले में "नीलगिरि पहाड़ी" बङ्गोपसागर की ओर लगभग आठ नौ कोस में फैली हुई है। कटक ज़िले की "अस्सिया पहाड़ी" और भुवनेश्वर के पास पुरी ज़िले में "उदयगिरि" तथा "खण्डगिरि" पहाड़ियाँ, जिनके आस पास में सुप्रसिद्ध झाड़ खण्ड जंगल है, प्राचीनता की दृष्टि से बड़ी महत्त्वपूर्ण हैं।

---

* हाती नदी कालाहण्डी राज्य के दक्षिण भाग से निकल कर उत्तराभिमुख बहती हुई तेल नदी में गिरती है। (भूगोलपाठदर्शक)

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

जैन और बौद्ध युग में इस भरतभूमि के अन्दर शिल्पकला की कैसी कल्पनातीत उन्नति हो चुकी थी, यह बात इन पहाड़ियों की शिला २ और गुहा २ से प्रकट होती है। उक्त राजगिरि और बराबरगिरि के अतिरिक्त कोई बिहारी पहाड़ी इनकी महत्ता की टक्कर में नहीं अड़ (डट) सकती। पुरी ज़िले की "धवली पहाड़ी" पर पुराने शिलालेखों के पास चट्टान काट कर अतीव सुन्दर हाथी बनाया हुआ है।

जैनियों के मुख्य २ पुण्यतीर्थों में परिगणित होने वाली पारसनाथ पहाड़ी छोटा नागपुर में विराजती है। राँची के पूर्वोत्तर और पलामू * के दक्षिण में "पाट" नामधारिणी कुछ पहाड़ियाँ हैं, जिनमें "नेत्रहाटपाट" ३३५६ फ़ीट, "लसतीपाट" ३७७७ फ़ीट और "गलगलपाट" ३८२३ फ़ीट ऊँची हैं। पूर्व की ओर मानभूमि ज़िले में सुवर्णरेखा और कसाई नामक नदियों के बीचोबीच में "बाघमूँड़ी या अयोध्या" नामक पहाड़ी जलस्राव की तरह बनी हुई है। इसी जिले में "दलमा" पहाड़ी चोटी ३४०७ फ़ीट और "पञ्चकोट की चोटी" १६०० फ़ीट की उँचाई तक पहुँची हुई हैं। सिंह भूमि † में

* इस जिले में उत्तर-पश्चिम का हिस्सा पहाड़ और जंगल से भरा हुआ है। पश्चिमोत्तर खण्ड की सर्वोच्च चोटी २५०० फीट ऊँची है। दक्षिण-पश्चिम का पहाड़ करीब ३००० फीट ऊँचा है।

—भूगोल पाठदर्शक।

† इस जिले में जंगल बहुत हैं। वे सब पश्चिम और पूर्व की ओर हैं। उत्तर की अपेक्षा दक्षिण में बहुत पहाड़ हैं। इन सब पहाड़ों की औसत उँचाई समुद्र की सतह से १२०० फीट है परन्तु दक्षिण की कोई २ पहाड़ी ३००० फीट तक भी ऊँची है। उन सबों के बीच की घाटियाँ १ से लेकर ९०० वर्गमील तक हैं। —भू० पा० द०।

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

तो दो तीन हज़ार फ़ीट की उँचाई वाली पहाड़ियाँ कोड़ियों पड़ी हुई हैं। इस ज़िले के दक्षिण-पूर्व में तो पहाड़ियों की खासी ठट्ट है। "सारण्ड पहाड़ी के सिवा 'बुदा' और 'नोट्ट' पहाड़ियाँ क्रमशः २७३८ और २५७६ फीट ऊँची हैं।

जल-वृष्टि और जल-वायु।

यदि सालाना औसत लगाया जाय तो विहार में ५० इञ्च * छोटा नागपुर में ५३ इञ्च और उड़ीसे में ५८ इञ्च वर्षा होती है। जून से अक्तूबर (आषाढ़से आश्विन) महीनोंतक बरसात होती है। जहाँ २ पहाड़ पहाड़ियाँ और घने २ जंगल बहुत हैं वहाँ सूखे दिनोंमें भी बूँदा-बाँदी होही जाती है। जहाँ ये सब नहीं भी है वहाँ भी माघ महीने में मघेड़ चूने लगती है

मोटी तरह से तीन ऋतु—जाड़ा, गर्मी और बरसात—अपने २ समय पर यहाँ अच्छी बहार दिखलाती हैं। आश्विन से फाल्गुन तक जाड़ा का रंग गाढ़ा रहता है। फागुन में गुलाबी जाड़ा पड़ता है—"आधा माघे, कम्बल काँधे" चैत से जेठ तक लू चलती है। तपाये हुए ताम्रपत्र की तरह धरती तलफने और धधकने लगती है। ग्रीष्म के दुस्सह ताप से व्याकुल हो कर अमीर लोग तहख़ाने और ख़सख़ाने में बैठ कर पंखे झलवाते हैं। आषाढ़ से भादो तक बरसात का बोल-बाला रहता है। इस ऋतु में भी कुछ२ गर्मी मालूम होती है पर पानी जब २ बरस जाता है आप से आप ठण्ढक हो जाती है। बरसात के अन्त में एक हस्त-नक्षत्र हिन्दुओं के मत से होता है। उसमें दस पन्द्रह दिन के लिये गृहस्थी का सारा सामान

* मगध और भागलपुर आदि में ४६ इंच और तिर्हुत में तो ५३ इंच।

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

घर में इकट्ठा कर रखना पड़ता है। कारण यह है कि मेघों की निरन्तर झड़ी, आँधी की धूम-धड़ी बाहर निकलने ही नहीं देती। इस तूफान के दिनों के बीत जाने पर बरसात विदा होती है। लोग कहते हैं कि हस्त नक्षत्र के पेट से ही जाड़ा पैदा होता है।

गर्मी के दिनों में बिहार में अन्धड़ और बवण्डलों की बड़ी भरमार रहती है। प्रबल वायु के झकोरे में झुलस कर पृथ्वी पर की सभी वस्तुयें नीरस और उदास हो जाती हैं। अंग्रेज लोग पहाड़ों पर बने हुए डांक-बंगलों में चले जाते हैं। जो नहीं जाते वे खुले मैदान में, स्वच्छ आकाश के नीचे, फूलों के गमलों से घिरे हुए स्थान में और चारों ओर के वृक्षलतादि को स्पर्श करके बहनेवाली हवा की राह में शयन करते हैं। गर्मी की रात तो यों कटी पर दिन में भी बंगलों और कोठियों की खिड़कियों पर ख़सख़स की मोटी २ टट्टियाँ जड़ देते हैं और दरवाजों पर ख़स के पर्दे लटका देते हैं तथा उन्हें पानी के छिड़काव से भींगे रहने का प्रबन्ध कर देते हैं। इस प्रकार शीत-प्रिय अंग्रेज लोग सुखी होते हैं।

छोटा नागपुर की अधित्यकाओं * पर जाड़े में इतना अधिक कुहासा गिरता है कि एक इञ्च मोटी और दबीज़ बर्फ जम जाती है। सुना जाता है कि राजमहल पहाड़ी पर से पहले ज़माने में नवाबों के लिये बर्फ लाई जाती थी।

दक्षिण बिहार में उत्तर बिहार की तरह सर्दी की कड़ाई नहीं अखरती। बल्कि दक्षिण बिहार में गर्मी का गुमान

---

* वहाँ जाड़े में सर्दी अधिक और ग्रीष्म में गर्मी कम मालूम होती है।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

अधिक है। सर्दी तिर्हुत में ही बेशी है। क्योंकि हिमालय पड़ोस में पड़ता है।

छोटा नागपुर में नेत्रहाट पहाड़ी पर दो कोस लम्बी और सवा कोस चौड़ी अधित्यका की भूमि है। वहाँ की जल-वायु एकदम रद्दी भद्दी हैं।

उड़ीसा के उपकूल भाग में सर्दी और गर्मी दोनों ही कम पड़ती है। जो भाग समुद्र से दूर और ऊँचा है वहाँ की सर्दी-गर्मी में विशेष अन्तर है।

नद-नदियाँ।

विहारोत्कल की प्राचीन एवं पवित्र भूमि में नदियाँ तो अनेकों बहती हैं पर यहाँ मुख्य २ प्रसिद्ध नदियों का ही वर्णन किया जायगा। हर एक ज़िले में अनेक नदियाँ हैं उनकी चर्चा का यहाँ महत्व नहीं।

प्रत्येक प्रदेश की भूमि पर नदियों का बड़ा गम्भीर प्रभाव पड़ता है। नदियों की बहुलता प्रायः पहाड़ों की अधिकता पर निर्भर रहती है। विहार में विशेष रूप से पहाड़ों की कमी नहीं है। उड़ीसे में भी पहाड़ों का खूब प्रसार है। अतएव, बहुलांश में विहारोत्कल की भूमि नदी-जल-सिक्त है। भारत में और और कई नदी-बहुल प्रान्त हैं पर उनकी अपेक्षा विहार की दशा शोचनीय नहीं है। हाँ, कहीं २ ऐसा भूमि भाग भी है जो आज तक कभी नदी-नीर से सींचा नहीं गया। नहीं तो, तमाम ऐसी छोटी बड़ी सजला नदियाँ हैं, जिनके इर्द-गिर्द की खेती-बारी साल भर नदी-जल के ही सहारे हरी भरी और फूली-फली रहती है। ऐसी भी कुछ नदियाँ हैं जो वैशाख-जेठ के महीनों में सूख जाती हैं और कुछ क्या बहुसंख्यक

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

नदियाँ ऐसी ही हैं जिनकी बाढ़ से अनेक गाँव नष्ट-भ्रष्ट हो जाते हैं तथा चारो ओर की खड़ी फसल सड़ गल कर बह जाती है। किन्तु लाभ यही है कि नदी-पार्श्व की भूमि अत्यन्त उर्वरा और शस्यश्यामला होती है। बरसात भर जल-मग्न रहने के कारण ऊपर की फैली हुई भूमि बड़ी दूर २ तक चारों ओर लहलही घास से छिप जाती है। भूमि की ठण्ढई और सरसता के कारण बारहों मास पशुओं को हरियरी चरने को मिलती है। किसानों को खेत की पटाई में नदियों की सहायता बड़ी अमूल्य है। तटस्थ ग्राम और नगरों के ग्रामीणों तथा नागरिकों के जलपान और स्नान के निमित्त नदियों की उपयोगिता का बहुत अधिक मूल्य है। जहाँ कूँए, नहरें और जलाशय नहीं हैं वहाँ के पशुओं के लिये नदियाँ प्राण दान देनेवाली हैं।

(१) *गंगा*—लगभग ५०० कोस की विकट यात्रा पूरी करने के बाद बक्सर से कुछ ही पश्चिम—कर्मनाशा सङ्गम के निकट—यह हिन्दुओं की पवित्र नदी "सुरसरि" बिहार की भूमि में प्रवेश करती है। बिहार भर में इसकी निर्मल धारा प्रायः पूर्वाभिमुखवाहिनी है। किन्तु राजमहल की पहाड़ी बिहार के पूर्वीय सीमान्त पर जब इसकी प्रबल गति का प्रतिरोध करती है तब राजमहल की प्रस्तरमय प्राचीर से टकराती हुई तीव्र गति से दक्षिणाभिमुख प्रवाहित होकर बिहार से वियुक्त होती है। बिहार भर में गंगा में कहीं पुल नहीं बँधा है। किन्तु ईस्ट-इण्डियन रेलवे की लाइन इसकी दक्षिणी तराइयों के सीमान्त को पार करती हुई गयी है। बक्सर, दानापुर, पटना, मुँगेर, भागलपुर और साहबगंज आदि बिहारी नगर इसके तट की शोभा बढ़ा रहे हैं। शोण-

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

भद्र, फल्गु; कर्मनाशा, सरयू, गण्डक, कोसी आदि प्रधान २ नदियों से विहार-भूमि में इसे जल-साहाय्य प्राप्त होता है।

(२) *शोणभद्र*— मध्यप्रदेश की अमरकंटक पहाड़ से, नर्मदा के उद्गम स्थान से कुछ हो दूरी पर इस नद का जन्म हुआ है। यह लगभग २५० कोस की लम्बी-चौड़ी यात्रा सम्पन्न कर के रोहतासगढ़ के पास कैमूर की पहाड़ी चीर कर पश्चिमोत्तर-गति से लगभग ५० कोस तक विहार की उर्वरा भूमि में लहराता हुआ आरा और पटने के बीच में गंगा की गोदी में विश्राम करता है। डिहरीघाट में १०८ फीट वाले ९३ खम्भों पर ई० आई० आर० की ग्रैण्ड-कौर्ड-लाइन का १००४४ फीट लम्बा "सोन का पुल" बँधा हुआ है, जो संसार के प्रसिद्ध और बड़े २ पुलों में से एक है। फिर, आरा से कुछ पूर्व कोइलवर में भी "सोन-का-पुल" बहुत बड़ा और भड़कीला बना हुआ है। यह दो तह का है, जिस में नीचे मनुष्य और बैल-घोड़े आदि के चलने का मार्ग है और ऊपर ई० आई० आर० की डबल लाइन है। उक्त डिहरी-घाट में सोन से नहरें भी निकाली गई हैं, जो पच्छिम में शाहाबाद ज़िले को और पूरब में गया तथा पटने ज़िले को आबाद करती हैं। सोन का बालू लाल और कुछ सुनहले रंग का होता है। इसी से इसका शोण नाम पड़ा भारत-यात्री मेगास्थनिज़ ने संस्कृत में इसका नाम कहीं 'हिरण्यबाहु' पाया है। उसका कहना है कि गंगा और सिन्धुनद के बाद भारत की नदियों में इसी का नम्बर आता है।

(३) *सरयू*— मानससरोवर के आसपास से निकल कर २०-२५ कोस तक विहार को युक्त प्रान्त से पृथक् करती हुई

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

यह घर्घरा "कलकल-निनादिनी-स्वरस्वनी" नामधारिणी पुण्य नदी छपरे के पास गङ्गा से मिलती है। इसके सुरम्य संगमस्थल पर, हिन्दुओं के पर्व-त्यौहारों-के शुभ अवसर पर, बड़े समारोह से स्नानार्थी एकत्र होकर विराट् मेले का आयोजन करते हैं। सूर्य्यवंशी राजाओं की पुराण प्रसिद्ध राजधानी अयोध्या का चरण-तल पखारते रहने से इसका बहुत बड़ा माहात्म्य है। छपरा नगर इसके तट-प्रान्त को अलङ्कृत करता है। इस तीर्थ-नदी की प्रशंसा * भगवान रामचन्द्रजी ने भी की थी।

(४) *गण्डक*- इस नदी का जन्म नैपाल में हुआ है। सात पनालों—छोटे-मोटे सोतों—ने एक में मिल कर गण्डक का रूप खड़ा किया है और इसे धीरे २ आगे बढ़ने का ढाढ़स बँधाया है। चम्पारन ज़िले में त्रिवेणी के पास एक पहाड़ी घाटी के निकट यह पर्वत पर से उतर कर उत्तरीय बिहार की भूमि में लगभग १०० कोस की यात्रा सम्पन्न करती हुई पटने के सामने गंगा से मिलती है। उक्त त्रिवेणी स्थान से इस में से नहरें निकाली गयी हैं, जो चम्पारन ज़िले की अधिकांश भूमि पटाती हैं। गंगा-गण्डक संगम पर हरिहरक्षेत्र में भारतविख्यात मेला लगता है, जो सर्वत्र 'सोनपुर-का-मेला' कहा जाता है। सोनपुर में बी० एन० डब्लू० रेलवे का बहुत बड़ा सुन्दर पुल (गण्डक नदी में) बँधा हुआ है। गण्डक किनारे हाजीपुर एक छोटा सा शहर है जहाँ का केला मशहूर

* जन्मभूमि मम पुरी सुहावनि। उत्तर दिशि बह सरयू पावनि ॥१॥
जे मज्जहिं ते बिनहिं प्रयासा। मम समीप नर पावहिं वासा ॥२॥
तुलसीदास।

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

है। यह नदी प्रायः अपनी धारा प्रवाहित करने का स्थान (प्रवाह-क्षेत्र) बदलती रहती है *।

(५) "*कोशी*"-अथवा "कुशी" गण्डक की तरह इसकी भी जन्म-कथा है। पानी के सात पतले पनालों—क्षुद्रजल-स्रोतों-ने परस्पर मिल कर नैपाली पथरीली भूमि में कुशी का जन्म कराया है। कदाचित् इन्हीं दो उपर्युक्त कारणों से नैपाल "सप्तगण्डकी" और "सप्तकुशिकी" नामसे प्रसिद्ध है। नैपाली पहाड़ों को छोड़ने पर ४०-५० कोस की यात्रा के बाद इसे गंगा-संगम का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। जैसे गण्डक और इस के जन्म में सादृश्य है वैसे ही दोनो के स्रोतगति परिवर्त्तन में भी तुलमतूल समता है †।

---

* गण्डक के मनमाने ढंग से धारा-क्षेत्र बदलते रहने से बहुत बड़ा २ दियारा छूट जाता है। इस समय भी इसकी कई पुरानी धारायें हैं। वे बूढ़ी गण्डक आदि कई नामों से प्रसिद्ध हैं। इनमें कोई तो दर्भङ्गा, कोई मुँगेर और कोई पटने के निकट गंगा से मिली हैं।

† कुशी ने प्रवाह-क्षेत्र परिवर्तित करने में गण्डक को भी मात किया है। बहुत दिन पहले यही कोसी नदी पूर्णिया नगर के पास बहती थी। अब तो वहाँ से बीसों कोस की दूरी पर काट कर रही रही है। अपनी राह-चाल में कई बार फेर-बदल कर के इसने कइ कोसों तक की बस्ती उजाड़ दी है। उर्वरा भूमि को रेतीली और ऊसर-धूसर बना कर छोड़ दिया है। काला कोसी, दमदाडा कोसी, हीरान-कोसी और लोरान कोसी आदि इसकी प्रसिद्ध २ पुरानी धारायें हैं।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

(६) *महानदी* (महानद?)—उड़ीसा की एकमात्र प्रधान नदी का उद्गमस्थान मध्यप्रदेश के पर्वतीय-प्रान्त में है। लम्बाई में यह पाँच सवा पाँच सौ मील तक पहुँची हुई है। सम्बलपुर और उड़ीसा के देशी राज्यों को पार करती हुई यह बड़े तीव्र वेग से आगे बढ़ती है। दसपल्ला पहाड़ी में वरमूलक घाटी-जो १४ मील लम्बी और लगभग एक आध मील चौड़ी है और जहाँ की पहाड़ियाँ भी चारों ओर से घनघोर जङ्गलों के पर्दे में ढँकी हुइ हैं—पार करके कटक के पास से पहाड़ियों को बिलकुल छोड़-छाड़ कर विशाल स्रोतोन्तर की रचना करती हुई बङ्गोपसागर में प्रवेश करती है। इसके स्रोतोन्तर की एक धारा का नाम "देवी" है और दूसरी का "महानदी" *। कटक में इसमें से नहरें निकाली गयी हैं। प्रायः बरसात में यह नदी बहुत चौड़ी और गहरी हो जाती है। गर्मी में किश्तियाँ चलाने में अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। इसके किनारे सम्बलपुर, अङ्गुल और कटक आदि मुख्य नगर हैं। इसकी गणना शायद भारत के नदों में, महानद नाम से, होती है।

(७) *कर्मनाशा*—यह पुराण-प्रसिद्ध नदी, हिन्दू-शास्त्रों में अत्यन्त अपवित्र समझी गई है। कितने कट्टर धर्म-निष्ठ आज तक इसके जलस्पर्श से वञ्चित रहते आये हैं। यह कैमूर पहाड़ी से निकल कर शाहाबाद को मिर्जापुर और बनारस जिलों से तथा विहार (मगध) को युक्तप्रान्त से विभक्त करती हुई गङ्गा में मिली है। यह खूब गहरी और सदा-

* "अङ्ग" नामक नदी सम्बलपुर जिले से निकल कर महानदी (स्रोतोन्तर-शाखा) में गिरती है।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

सलिला है। कभी २ बरसात में इसकी भयङ्कर बाढ़ से हाहाकार मच जाता है।

(८) फल्गु—यह अन्तःसलिला नदी है पर कभी २ मौज में आकर विकराल वेष धारण करती है। इसके पश्चिमीय तट पर गया नामक महातीर्थ है। यह भी दक्षिणी सीमा की पहाड़ियों से उत्पन्न हुई है और फतुहा के पास गङ्गा में मिली है। इसके बालू का पिण्ड बना कर हिन्दू लोग अपने मृत पितरों को अर्पण करते हैं। ऊपर देखने में तो यह बालुकामयी विस्तृत भूमि का शून्य दृश्य उपस्थित करती है पर गढ़ा बना २ कर लोग ठौर २ निर्मल-शीतल जल निकाल लेते हैं।

अब ऐसी कोई प्रधान और प्रसिद्ध नदी नहीं जिसका विवरण लिखना आवश्यक हो। ऊपर की सभी नदियों की चर्चा हिन्दुओं के धर्म-ग्रन्थों में मिलती है। दो एक को छोड़ कर लगभग सभी नदियों में किश्तियाँ चलती हैं। सब के तट पर पर्व-त्यौहारों का महोत्सव धूमधाम से मनाया जाता है। सबका सम्मान तीर्थ के समान है।

उड़ीसा के देशी राज्यों में "ब्राह्मणी" और "वैतरणी"* नाम की जो दो नदियाँ हैं वे 'पामिरा' अन्तरीप के पास—चन्दबली की ओर से हो कर वङ्गोपसागर में गिरने वाली "धर्म" नामक स्रोतोन्तर-शाखा के साथ मिल कर—समुद्र में

*यह वैतरणी केओनझर और मयूरभञ्ज राज्यों के बीचोबीच हो कर बहती है। मयूरभञ्ज राज्य से "सालन्दी" नदी इसकी सहायता में आती है। गर्मी में केवल छोटी २ किश्तियाँ इसमें चल सकती हैं। यह आठ मील तक सिंहभूम और केओनझर राज्य के बीच से हो कर बहती है।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

प्रवेश करती हैं। पहली १२५ कोस से वेशी लम्बी है। यह चैतरणी की सहायक नदी है।

चिल्का-झील।

सम्भव है इस झील के अतिरिक्त अन्यान्य झील भी विहारोत्कल की सरस सुन्दर भूमि में सुशोभित हों पर इसके सामने किसी दूसरी झील का वर्णन पुस्तक में नहीं शोभता। यह पुरी ज़िले की भूमि में २२ कोस लम्बी फैली हुई है और मद्रास प्रान्त के गंजम ज़िले तक पसरती चली गयी है। इसके विस्तार की औसत लगभग ४०० वर्गमील है। बरसात में इसका प्रसार बहुत बड़ा और ग्रीष्म काल में इसका कलेवर बहुत सङ्कुचित हो जाता है। बरसात में इसका जल मीठा पर और दिनों में खारा रहता है। कारण इसका यह है कि वर्षाकाल में कई छोटी-मोटी नदियों की प्रचुर जलराशि इसे इस तरह भरपूर कर देती है कि एक संकीर्ण स्रोत द्वारा यह समुद्र से जितना जल-ऋण ग्रहण किये रहती है उसे व्याज के साथ चुका देती है। अपने में गिरनेवाली क्षुद्रनदियों का नवीन बरसाती जल पाकर ही यह मधुर-जला बनती है और उष्ण-ऋतु में समुद्र का नमक खाकर तद्रूप नमकीन जल वाली हो जाती है। यह झील है तो बड़ी सुन्दर पर छिछली है। कहीं भी इसकी गहराई १४ फ़ीट से अधिक नहीं पाई जाती।

इसके अन्दर कई छोटे-बड़े टापू भी बन गये हैं। उनकी सहज प्राकृतिक-शोभा सचमुच मनमोहिनी है। पूर्व की ओर का 'पारीकुद' नामक टापू सबसे बड़ा है। दक्षिण में 'ब्रेकफाष्ट' नाम का दूसरा टापू है। इस पर गंजम के किसी ज़िलाधीश (कलकृर) का बनवाया हुआ एक स्तम्भ और छोटी सी पक्की इमारत है।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

खनिज-पदार्थ।

खनिज पदार्थों की उपज में यह प्रदेश अन्यान्य प्रदेशों से बहुत बढ़ा चढ़ा है। भारत भर में इसकी कोयले की खानें प्रसिद्ध हैं, बल्कि विदेशों में भी उनकी आशातीत प्रशंसा सुनी जाती है। केवल कोयला ही नहीं, विहारोत्कल की रत्नगर्भा वसुन्धरा से बहुमूल्य खनिज पदार्थ—अनेक प्रकार के—एक ही द्रव्य भाँति भाँति के—उत्पन्न होते हैं।

(१) कोयला।

हजारीबाग़ ज़िले में "गिरिडीह की खानें" परम प्रसिद्ध हैं। यहाँ की खानें सर्वोत्तम कोयला देती हैं। भारत क्या विदेशों में तक यहाँ का कोयला उत्तमोत्तम गिना जाता है। ये खानें ११ वर्गमील में पसरी हुई हैं।

मानभूम ज़िले में "झरिया की खानों" से १८९३ से कोयले का निकास होने लगा। झरिया की पश्चिमीय सीमा की ओर २२० वर्गमील के "बोकारो" नामक मैदान में भी कोयले की खानें हैं। फिर, वहीं पास ही में हज़ारीबाग़ ज़िले के "रामगढ़ क्षेत्र" (४० वर्गमील) में कोयले की खानें हैं। किन्तु इस खान का कोयला विशेष अच्छा नहीं होता। पुनः उक्त ज़िले में ही ५४४ वर्गमील में फैला हुआ "करनपुरा" नामक कोयले का एक बड़ा क्षेत्र है।

पलामू "डालटनगञ्ज" ज़िले में भी खूब अच्छी २ कोयले की खानें हैं। वहीं "औरङ्गा-क्षेत्र" ९७ वर्गमील में विस्तृत है। ७९ वर्गमील का "हुतर" नामक क्षेत्र भी इसी ज़िले में है। किन्तु इन दोनों की स्थिति ऐसे दुर्गम स्थान में है कि इनका उपयोग होना असम्भव सा प्रतीत होता है।

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

सन्तालपरगने के जमतारा सब-डिवीजन में भी एक आध छोटी मोटी खानें मिली हैं। महानदी की तराइयों के पास सम्बलपुर ज़िले में और अठमल्लिक, गंगपुर तथा तेलचर राज्यों में भी कुछ खानें हैं। इन स्थानों की खानें भी बड़े काम की हैं। *

(२) लोहा।

उड़ीसा की देशी रियासतों में और छोटानागपुर में अभी तक लोहे की खानें हैं। किन्तु अब इन खानों से जो कुछ थोड़ा बहुत लोहा निकलता है सो वहीं के आसपास के गाँव वालों के काम में आ जाता है। खुर्पी, कुदाली बनाने में ही वहाँ के लोग सब लोहा खपा देते हैं। बाहरी चालान के लिये बचत नहीं हो पाती। परन्तु जो ही कुछ लोहा इस चुकी हुई खानि में बच गया है वह बहुत ही अच्छा और उपादेय है। जंगली सन्ताल लोग कुठार और तीर इसी लोहे से बनाते हैं। मयूरभञ्ज राज्य की गुरुमासिनी पहाड़ी में बहुत ही उत्तम लोहे की खानें हैं। यहाँ तक कि सिंहभूम के 'साकची' नामक

* विहारोत्कल की खानों की उपज सालाना औसत से बहुत बेशी है। १९११ ईस्वी में सम्बलपुर की खानों से छ हजार टन कोयला निकला था। इसी प्रकार प्रत्येक खान की उपज का वार्षिक हिसाब अन्दाजा गया है—

(१) झरिया ६० लाख टन (सालाना)। (२) गिरिडीह ८२० लाख टन (सालाना)। (३) बोकारो १५००० लाख टन (सालाना)। (४) करनपुरा ९०००० लाख टन (सालाना)। (१ टन= २६ मन)

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

स्थान में लोहे के कारख़ानों की भरमार से बड़ा भारी शहर सा बस गया है। बूदा और नोट्र पहाड़ियों में भी लोहे की खानें हैं। राँची, पलामू, हज़ारीबाग़, सिंहभूमि और सम्बलपुर आदि स्थानों में जो खानें हैं, उनसे बहुत उपकार होता है।

(३) ताम्बा।

सिंहभूमि ज़िले में ४०–४५ कोस का लम्बा मैदान है, जिस में बहुत बड़ी २ खानें हैं। ये खाने भारत-विख्यात हैं। इनखानों से १६१२ में लगभग ६००० टन * ताम्बा निकला था, जिसका मूल्य १३५०० पाउण्ड † हुआ था।

कैमूर पहाड़ी में, देवघर सब-डिवीजन में और गिरिडीह में भी ताम्बे की खानें हैं। किन्तु जो हैं बहुत कम हैं और उनका कुछ ऐसा महत्त्व भी नहीं।

(४) अबरक (अभ्रक)।

हज़ारीबाग़ में लुहरदग्गा के पास, गया के नवादा सब-डिवीजन में और मुँगेर में अबरक़ की खानें हैं। इन तीनों की सरहद पर ६० मील लम्बी और १२ मील चौड़ी खानें हैं। गिरिडीह और सम्बलपुर तथा झाझा के पास में भी अबरक़ थोड़ा बहुत निकलता है। उपर्युक्त खानों से आफ़रात अबरक़ निकलता है। विदेशों में इसकी बड़ी खपत है। चालान खूब जाता है। ‡

* १ टन=१६ मन।

† १ पाउण्ड=१५ रुपया।

‡ रूस देश में अबरक़ की पट्टियाँ खिड़कियों में शीशे की जगह मढ़ी जाती हैं।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

(५) हीरा-जवाहिर।

उडीसे की सोनपुर रियासत और * सम्बलपुर ज़िले में महानदी के अन्दर हीरे मिलते हैं। सोनपुर हीरे के लिये बहुत प्रसिद्ध है। छोटा नागपुर की 'संख' नामक नदी में मुग़ल-सम्राटों के समय में हीरे मिलते थे।†

(६) सोना।

छोटा नागपुर में सोने की खानि थी, जिसमें हर महीने सोने की गुल्लियाँ (छड़) निकलती थीं। ‡

(७) शीशा।

(चाँदी, पारा, अलमोनियम)

सन्ताल परगना और असाई नामक ज़िलों में शीशे की खानें हैं। उनमें से "चाँदी" भी पैदा होती है। हजारीबाग़

---

* उन्नीसवीं शताब्दी के आरम्भ में सम्बलपुर में कई अमूल्य हीरे मिल चुके हैं। उनका पता अब तक भी मिलता है। एक हीरा तो ६७२ ग्रेन, २१० कराँत तौल के बराबर था, जो किसी महाराष्ट्र सेनानी के हाथ लगा। गत ६० वर्षों में इधर भी कई बहुमूल्य हीरे मिल चुके हैं।

† सुना जाता है कि कमक साहब कप्तान (Captain Camac) जब १७७२ में अंग्रेज़ी फौज के अध्यक्ष होकर छोटा नागपुर में आये थे तो उन्होंने यहाँ के एक राजा की पगड़ी में ४०००० रुपये की कीमत का हीरा जड़ा हुआ देखा था।

‡ सुवर्णरेखा और महानदी का बालू धो २ कर सोना निकालने वाले "झोरा" कहलाते हैं।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

में "पारा" मिलता है। कई जगहों में एक ऐसा धातु-पदार्थ मिला है, जिससे अलमोनियम तैयार किया जा सकता है। उड़ीसा की रियासतों में एक प्रकार का धातु निकला हुआ है। उससे पेनसिल बनाई जाती है। प्रायः उसे सब लोग 'शीशा' ही कहते हैं। गिरिडीह में भी खानि से कुछ शीशा निकलता है मुंगेर जिले के चकाई परगने में, खड़गपुर के पहाड़ों में, भागलपुर के बाँका और देवघर डिवीज़नों में, राँची ज़िले में बारहमशिया के पास, सम्बलपुर में तलपतिया और झुनर तथा पद्मपुर के पास, शीशे की कुछ खानें भी मिलती हैं।

(८) चूने की गट्टी और कंकड़ रोड़ा।

कैमूर पहाड़ी में रोहतास के पास चूने की गट्टी आफ़रात निकलती है। सोन के किनारे डिहरीघाट में चूने की गट्टी के बहुत बड़े २ भट्ठे हैं।

पलामू और सिंहभूमि जिलों में तथा गंगपुर राज्य में भी चूने की गट्टी की खानें हैं। गंगपुर राज्य में बी० एन० रेलवे के किनारे बिसरा नामक स्थान में खूब बढ़ियाँ चूना निकलता है और काफ़ी तरह से कलकत्ते चालान भेजा जाता है।

कंकड़ या रोड़ा, जो सड़क बनाने के काम में आता है, पूर्णिया के अतिरिक्त तिर्हुत के सब जिलों में भी ज़मीन के अन्दर से निकलता है।

(९) टिन।

एक प्रकार के भूरे रंग की टिन की खानें हज़ारीबाग़ में पाई गई हैं। वहाँ की नदियों की बलुआही रेत में भी ऐसी ही टिन की चद्दरें मिलती हैं।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

(१०) मिट्टी ।

चीनी मिट्टी राजमहल पहाड़ी में खूब मिलती है। एक प्रकार की मिट्टी और भी है जिसे 'गंगमिट्टी' कहते हैं। इस से दीवार पोतने का चूना बनाते हैं। यह गया, शाहाबाद तथा पूर्णिया के अतिरिक्त तिर्हुत के सभी जिलों में मिलती है। पलामू, पुरी, मानभूमि, सिंहभूमि जिलों में और उड़ीसा के देशी राज्यों में भी यह मिट्टी बहुत होती है। राजमहल पहाड़ी की दक्खिनी छोर पर जो आफ़रात (fire-clays) चीनी मिट्टी निकलती है उससे बरतन आदि कई चीजें बनायी जाती हैं।

(११) पत्थर की पट्टियाँ (पटरियाँ ?)

मुँगेर के पास खड़गपुर पहाड़ी में से खोद कर ये निकाली जाती हैं। किन्तु खड़गपुर पहाड़ी से निकली हुई पटरियों से कहीं अच्छी और दबीज़ पट्टियाँ कैमूर, राजमहल और उड़ीसा के देशी राज्यों की पहाड़ियों से निकलती हैं। खड़गपुर की पट्टियों से मुँगेर का क़िला बना था और कैमूर की पट्टियों से रोहतासगढ़ का। कैमूर का पत्थर कुछ लालिमा लिये होता है। शेरशाह की बनवाई हुई सभी इमारतें, जो यहाँ अभी तक अच्छी अवस्था में हैं, कैमूर की ही पटरियों से बनायी गई थीं। 'सार' में गंगा का पुल राजमहल पहाड़ी की पट्टियों से ही बनाया गया था। उड़ीसा की रियासतों की पहाड़ियों में से पत्थर काट काट कर जगन्नाथपुरी, कोनारक और भुवनेश्वर के सुन्दर, सुविशाल, सुदृढ़ एवं सुप्रसिद्ध मन्दिरों का निर्माण हुआ था।

उपर्युक्त खनिज द्रव्यों के अतिरिक्त और और धातुपदार्थ भी इस प्रदेश में खानों से निकलते हैं, पर उनका उल्लेख

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

करने में कुछ विशेष महत्त्व नहीं है। साधारणतः एक आध स्फुट विवरण यहाँ लिख दिया जाता है।

अबरक की खानों से फिरोज़ा (गोमेद) और रूपा आदि निकलते हैं। उत्तर-विहार में शोरे (जवाखार) की खानें हैं। छो० ना० में खल्ली अधिक मिलती है। उससे तरह तरह के बरतन प्याले आदि तैयार किये जाते हैं। रोहतासगढ़ के आसपास में फिटकरी होती है। कैमूर पहाड़ी में गेरु मिलता है। वह रँगने के काम में आता है। जमालपुर के पहाड़ों में स्लेट पत्थर निकलता है। गया के अतरी थाने में काला पत्थर होता है, जिससे भाँति २ के प्रस्तरपात्र और मूर्त्तियाँ बनती हैं। कालाहण्डी और गंगपुर राज्यों में तथा सिंहभूमि ज़िले में Manganese (एक तरह का धातु) की खानें हैं।

जङ्गल ।

प्रत्येक प्रदेश में वन का होना बहुत ज़रूरी है। वन रहने से अनेक प्रकार के लाभ होते हैं। पक्की, मज़बूत और खूब पुख़्ती लकड़ियाँ सस्ते दाम पर सुगमता से मिलती हैं। गाय-भैंसों को काफ़ी चरी (खूब हरियरी) मिलती रहती है। प्राचीन वैद्यकों में लिखी हुई अनेक प्रकार की जड़ी-बूटियाँ जाँच-पड़ताल करने पर शीघ्र मिल जाती हैं। जंगल के आस-पास बसने वाले मनुष्यों की आँख की रोशनी नित-नूतन सघन हरियाली की सुहावनी छटा देखते रहने से पुष्ट और चमत्कारिणी होती है। कन्द-मूल, फल-फूल, विचित्र २ रंग-विरंगी पत्तियाँ, शुद्ध मधु, इन्धन, भाँति २ के पक्षी, पशुपक्षी के नख-पंख झीलों की मछलियाँ, घने २ कुञ्ज-निकुञ्जों की ठण्ढी छाया, आखेट-जनित आनन्द, परिष्कृत पवन और पुष्प परिमल आदि की सुलभता जंगल की उपयोगिता के प्रत्यक्ष प्रमाण हैं।

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

देश की जलवायु पर भी जंगलों का बड़ा गहरा प्रभाव पड़ता है। गाय-भैंसों के दूध पर और आस पास के खेतों पर भी जंगलों का कम प्रभाव नहीं पड़ता। जंगलों के कारण वर्षा यथेष्ट होती है। गर्म या ठण्ढी हवा के क्रूर झकोरों से फसल की रक्षा जंगल ही करते हैं। पहाड़ी प्रदेशों में यह प्रत्यक्ष देखा जाता है कि जिन पहाड़ों का जंगल कट गया है उनके सोतों का पानी भी घट गया है या सूख गया है। उनके नीचे की समभूमि में अब पहले की सी अच्छी खेती नहीं होती। जंगल कटने से ज़मीन की तरी जाती रहती है। पत्तियाँ बह कर खेतों में खाद बन कर नहीं आतीं, इससे पैदावार घट जाती है। जहाँ पर बस्तियों के आस पास के वन कट गये हैं वहाँ धूप और हवा बहुत सताती है। *

जंगलों के अनगिनित लाभों की ओर सरकार बहादुर का ध्यान आकर्षित हुआ। अतएव १८५४ से जंगल-विभाग स्थापित हुआ। विहारोत्कल प्रदेश का ३७०० वर्गमील में फैला हुआ जंगल इस समय सरकार की रक्षा में है। उड़ीसा की देशी रियासतों में भी बड़ी २ दूर में जंगल पसरे हुए हैं। छोटा नागपुर में शाल वृक्षों के जंगल चारों ओर छाये हुए हैं। सिंहभूमि में शाल वृक्षों का बड़ा भारी जंगल है। जगन्नाथपुरी के रास्ते में झाड़खण्ड जंगल प्रसिद्ध है। सभी स्थानों में से थोड़े-बहुत जंगल हैं। यथा—वैद्यनाथ के पास जैसा घना जंगल है वैसा ही बीहड़ वन पलामू, दुमका और राँची तथा हजारीबाग़ आदि ज़िलों में भी देखा जाता है।

* सरस्वती मई १९०९ (May 1909) के "जंगलों से लाभ" शीर्षक लेख के आधार पर लिखित।

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

वृक्ष-लतिकादि।

मोटी तरह से वृक्षों के यहाँ केवल दो ही विभाग किये जायँगे। एक तो फूल के पेड़ और दूसरे फलवान वृक्ष। फूलों के जितने प्रकार के वृक्ष भारत की पवित्र भूमि पर उपज सकते हैं उतने ही पुष्प-वृक्ष विहारी वसुन्धरा पर वर्द्धित किये जा सकते हैं। अभिप्राय यह कि सभी सुन्दर, सुगन्धित और सुकोमल पुष्प यहाँ यथेष्ट रीति से होते हैं। फलों की भी वही दशा है। परन्तु जिन फूल और फल के वृक्षों को उपजाने में इस प्रदेश की भूमि विशेषता रखती है उनके नाम, गुण, उपयोग और लाभों का वर्णन इस प्रकार है—

विहार में वड़, पीपर और पाकड़, ये तीन ही बड़े २ वृक्ष हैं। यदि एक ही साथ मिल कर तीनों उपजें तो उसे ही "हरशंकरी गाछी" कहने लगते हैं। इसी के नीचे पुराने समय में गाँव २ में पञ्चायतें होती थीं*। बड़ की बरोहें ज़मीन तक लटक कर ज़मीन में पैठ जाती हैं। क्रमशः पुष्ट होकर सुदृढ़ स्तम्भ की तरह समूचे छतनार वट-वृक्ष के सघन-छाया-मण्डित विशाल मस्तक को अपने कन्धे पर थामे रहती हैं। इसकी स्थूल शाखाओं के कोटरों में पक्षी और सर्प आदि रहते हैं। फल लाल २ और पत्तियाँ दबीज़ होती हैं। वट की तरह पीपर भी हिन्दुओं का परम पूज्य है। पीपर के पत्र चिकने, पतले और चंचल होते हैं। इसके फल बड़ के फल से छोटे

---

* छपरे से पश्चिम जहाँ सरयू गंगा से मिलती है माँझी—नाम बस्ती के पास एक बड़ का पेड़ इतना बड़ा है कि जिसकी छाया गर्मियों में दोपहर के समय १२०० फुट के घेरे में पड़ती है।

"भूगोल हस्तामलक।"

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

और पकने पर लाल होते हैं। पीपर में 'लाही' बहुत होती है। यह बेशक़ीमती चीज़ है। पीपर काटना हिन्दू लोग अधर्म समझते हैं। पाकड़ की छाया बड़ी सुशीतल होती है।

बिहारी गाँवों की बस्तियों के इर्द-गिर्द बाँस के घने कुञ्जों की बड़ी भरमार रहती है। बाँसों का लचीला मस्तक हवा में झूम कर बड़ा सुहावना बन जाता है। प्रातः सन्ध्या चिड़ियों की चहचहाहट से बाँसों की कोठियाँ बेतरह गूँज उठती हैं। बाँसों से हर तरह के आवश्यक लाभ हैं।

बिहारी गाँवों में ताड़ और खजूरों की भी बहुत कमी नहीं है। ताड़ के सूखे खग्गड़ से पंखे बनते हैं और छप्परों की छाजन भी बनती है। इनके फल बड़े २ होते हैं। इनमें से एक प्रकार का मीठा और नशीला रस चूता है। वही रस-ताड़ी सुगन्धित और स्वादिष्ट शरबत के समान पी कर असंख्य मूर्ख-जनता पागल बन जाती है। उड़ीसा में खजूर खूब होते हैं।

निम्बवृक्ष भी बड़ा उपयोगी है। वायु को शुद्ध और निर्दोष बना देता है। हानिकारक कीटाणुओं को नष्ट कर देता है। बड़े वृक्षों में यही तुलसी की गाँछी का गुण रखता है। इसके फल के बीज को तेली पेरते हैं। यह तेल ग़रीबों के बहुत काम आता है।

इसी प्रकार कटहल, बड़हर, सेमर, इमली, महुआ, आँवला, जामुन, लीची, अमरूद, केला, नारंगी, नाशपाती, नीबू, अनार और तूत आदि विविध प्रकार के असंख्य वृक्ष बिहार में पाये जाते हैं। इन वृक्षों के रोपने, बढ़ने और फूलने फलने में कोई आपत्ति नहीं होती। बिहार में सच पूछिये तो सर्वोत्तम फलवान वृक्ष 'आम' ही है। इस आम्रवृक्ष की सुन्दरता

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

और आम्रफल की मधुरता सर्वोपरि है। इसके रसाल, पिकबन्धु और वसन्तवल्लभ आदि नाम अक्षरशः सार्थक हैं। इसके पल्लव मंगलदायक समझे जाते हैं। मञ्जरियों पर भौंरे गूँजते हैं। हरी-भरी शाखाओं पर कोकिलायें अलापती हैं। *

छोटा नागपुर में लाह और तसर के रेशमी कीड़े वाले वृक्ष भी बहुत हैं। हरड़, बहेड़ा आदि की भी कमी नहीं है। सबसे अधिक महुआ के वृक्ष मिलते हैं। मधूक-फल खाने में मधुर और विशेषरूपेण पौष्टिक पदार्थ है। छोटा नागपुर की असभ्य जंगली जातियाँ इसे खूब खाती हैं और खपाती हैं। मधूक-फल के गुच्छे बड़े रसीले होते हैं, अतः शुकपक्षी उन्हें बड़े चाव से खाते हैं। वसन्त में महुए के पेड़ लाल २ पल्लवों और उजले-पीले फल-गुच्छों से लद जाते हैं। ये फल रात में खूब चूते हैं। उन्हें बटोर कर धूप में सुखा कर लोग खाने के लिये सँचते हैं। महुए का फल पक जाने पर मीठा लगता है। उसके बीज का तेल भी गरीबों के काम आता है। महुए से शराब भी बनती है। इसकी लकड़ी बड़े काम की होती है।

उड़ीसे में नारियल और सुपारी के वृक्ष सब ठौर दीख पड़ते हैं। विहार में अमीरों और शौक़ीनों की फुलवाड़ियों का सिंगार बिना मौलश्री और अशोकवृक्ष के नहीं होता।

---

* It hath a sweetness so peculiar that I doubt whether there be any comfit in the world so pleasant."

—'Bernier.'

सारांश यह कि भारतयात्री विदेशी बर्नियर ने आम्रफल की प्रशंसा में यहाँ तक कह मारा कि "इस फल में इतनी प्रकृत मधुरता है कि ऐसा सुस्वादु फल संसार में कहीं होता है या नहीं, इसमें भी मुझे सन्देह ही है"।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

कृष्णचन्द्र का प्यारा कदम्ब और शिवजी का प्यारा श्रीफल— ये दोनों वृक्ष विहार में सर्वत्र ही होते हैं।

सेम, पान, करैली, लौकी, ककड़ी, कुम्हड़ा आदि लतायें भी विहार में लहलहाती हैं। कमल, कुमुद, आदि जल-पुष्प और पलास, मन्दार आदि वन्य-पुष्प और केवड़ा, गुलाब, जूही, मोतिया, चमेली, शृङ्गारहार और अन्यान्य अनेक प्रकार के फूल विहार की भूमि को जगमग और आमोदित कर रहे हैं।

जीव-जन्तु ।

(क) वन्य-पशु और पालतू जन्तु * ।

अंगुल ज़िले के और उड़ीसा की रियासतों के जंगलों में जंगली हाथियों के झुण्ड के झुण्ड देखे जाते हैं। ऐसे तो विहार के बड़े २ राजा-महाराजा, सेठ-साहूकार, ज़मीन्दार-तालुकदार बड़े उत्साह से हाथी पालते हैं। घोड़े तो सभी छोटे-बड़े गृहस्थ भी पोसते हैं। हाथी पालनेवाले ऊँट भी पोसते हैं। कई जगह ऊँट गाड़ियों में जोते जाते हैं। ऊँटगाड़ी

* पालतू पशुओं का जीवन हरियरी घास की चरी पर अवलम्बित है। अतः चरी की चर्चा यहाँ विस्तृत रूप से कर दी जाती है। चम्पारन जिले के बगहा और शिकारपुर थाने में, सीतामढ़ी और मधुवनी (दर्भङ्गा) सबडिवीजनों में, पूर्णिया के उस हिस्से में—जो मोरंग कहलाता है—चरी अफरात होती है। यहाँ के ऐसे मवेशी सूबे भर में और कहीं नहीं होते। शाहाबाद और गया के दक्षिण-खण्ड में, भागलपुर के कटोरिया थाने के घोघरे में, धर्मपुर परगने के चौंर में, मुँगेर के फरकिया परगने में, जो गोगरी थाने में है—तथा

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

दिन-रात में पचासों कोस जा सकती है। घोड़ों का उपयोग विशेषतः इक्के, बग्गियों, टमटम, फिटन लैण्डो और जोड़ियों में ही होता है। सिर्फ शहरों में ही ऐसा होता है। दिहातों में लोग घोड़ों पर सवार होते हैं अर्थात् ज़ीन-सवारी कसते हैं। टट्टू आदि लादने के काम में भी आते हैं।

सिंहभूमि और उड़ीसा की रयासतों के जङ्गलों में एक प्रकार के जङ्गली बैल होते हैं। वे "गोर" नाम से प्रसिद्ध हैं। बैलों के ही ऊपर इस प्रदेश भर की खेती-बारी का सारा काम निर्भर करता है। सभी कृषक बैलों को प्राण के समान पालते हैं। किसानों के घर घर में पोसुए बैल पागुर करते हुए खूँटे से बँधे देखे जाते हैं। मीठा दूध देने वाली गायें और भैंसें समूचे प्रदेश में, छोटे से बड़े तक, सभी के घर में नज़र आती हैं। इनके दही और घी में खूब मिठास है। स्वादिष्ट और सुस्निग्ध भोज्यपदार्थ होने के कारण इनकी बिक्री भी बहुत होती है। इनके गोबर से 'इन्धन' तैयार होता है और चमड़े से 'मोट' और सींग से कंघियाँ तथा तरह २ की बेंट इत्यादि। गाय के बछड़े से जितना अपरिमित लाभ होता है उतना भैंस के बछड़े से नहीं।

विहार में कई प्रकार के हिरन पाये जाते हैं। छोटा नाग-

अंगुल जिले में सालभर खूब चरी मिलती है। अतः मवेशी मजबूत होते हैं। कैमूर की अधित्यका और राजगृह की पहाड़ी में, राजमहल और खडगपुर की पहाड़ियों में, छोटा नागपुर के अधिकतर भाग और उड़ीसा के पहाड़ी हिस्सों में सिर्फ बरसात भर चरी मिलती है। अतएव मवेशी बहुत कम, दुबले-पतले और कमजोर होते हैं।

—भूगोलपाठदर्शक।

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

पुर में 'चिङ्कार' नामक एक प्रकार का हिरन मिलता है। नीलगाय, घुड़रोझ, चितकबरा आदि हिरन भी कभी २ नज़र आते हैं। शिकारियों को हिरन का आखेट बहुत रुचता है। हिरनों की आँखें बड़ी लुभावनी और सहज-सलोनी होती हैं। हिरन की सींग की खूँटी पर अमीरों के दालानों में मसनद आदि रक्खे जाते हैं। मृगछाला का आसन परम पवित्र माना जाता है।

विहारोत्कल के जंगलों में बनैले सूअर भी बड़े २ जबरदस्त पाये जाते हैं। इनका आखेट बड़ा श्रमसाध्य और खूब साहसापेक्षी होता है। इनसे वनके निकटवर्ती गाँवों की खेती की भयङ्कर हानि हुआ करती है। ये बड़े निर्दयी और निडर जन्तु होते हैं।

इस प्रदेश में जिस प्रकार गाय-भैंस पोसने वाले अहीर तथा गोप-ग्वाल और दूसरी कई खेतिहर जातिया हैं उसी प्रकार भेड़ और बकरों को पोसने और चराने वाली गड़ेरीयाँ जाति भी है। बकरी बेचारी का दूध बच्चों के लिये बड़ा लाभदायक होता है। बकरे तो मांसाहारियों के प्राणाधार हैं। भेड़ों के रोम से कम्बल बनते हैं, जिन्हें यहाँ के चतुर गड़ेरिये स्वयं बनाते हैं। इस प्रदेश में केवल धोबी गदहा पोसते और लादते हैं।

छोटानागपुर में भी मानव-भक्षक व्याघ्र होते हैं। उड़ीसा की रियासतों में डरावने चीते भी कभी २ शिकार में चले आते हैं। विहार-उड़ीसे के जंगलों में बन-बिडाल और लकड़-बाघ तथा भालू बहुत हैं। भालू बड़े डरावने शब्द से गुर्राता है। यह सूँघ २ कर हर तरह का अनुभव प्राप्त करता है। किन्तु विहारी जंगलों में भालू कुछ कम दीख पड़ते हैं। यहाँ हुँडार

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

(भेड़िया) और स्यारों की ही अधिकता है। भेड़िया कुत्ते के बराबर पर खूब बलवान होता है। किन्तु केवल बकरी और गाय-भैंस तथा आदमी के बच्चों को जीवित ही उठा कर ले भागता है और इनका खून चूसता है। स्यार बेचारे तो सिर्फ गाड़ी हुई लाश और मुर्दे पर ही सन्तोष करते हैं।

इसी प्रकार लोमड़ी, खरहे, बन्दर, गिलहरी आदि जंगली जीव और नेवले, कुत्ते तथा बिल्ली आदि घरेलू जन्तु विहार में बिना बैर-बाधा के विहरते हैं।

(ख) पक्षी और सर्प आदि।

इस प्रदेश में भाँति २ के पक्षी भी हैं। हर एक पक्षी में कई प्रकार की (भिन्न २) विशेषतायें हैं। होने और रहने को तो यहाँ सभी प्रसिद्ध पक्षी होते और रहते देखे जाते हैं पर जो रात-दिन आँखों के सामने आते जाते हैं उनके विषय में यहाँ कुछ चर्चा होगी।

मयूर नामक सुन्दर वन-पक्षी यहाँ के अमीर-उमराव और धनी सरदारों के महलों पर विराजते हैं। षड़ानन जी का वाहन समझ कर हिन्दू इसका शिकार नहीं खेलते। यह मेघमाला देख कर मस्ती में चूर हो नाचने लगता है। यह सर्प-भोजी पर मधुर-भाषी होता है।

गृद्ध नामक अशुभ-पक्षी भी प्राणियों के शव के पास मँड़राता हुआ दीख पड़ता है। इसकी दृष्टि-शक्ति बड़ी तीव्र है। यह मांसोपजीवी पक्षी यदि किसी के घर के छप्पर पर बैठ जाय तो अनिष्टभय से या तो वह घर ही छोड़ दिया जाता है नहीं तो छप्पर ही उजाड़ कर संकट का संदेह मिटाया जाता है। चील और बाज भी शिकारी पक्षी हैं। इनके ज़बरदस्त चंगुल की चपेट में आकर कोई चीज़ कुशल से नहीं बचती।

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

काक भी मांसभक्षी पक्षी है। इसकी चतुरता और धूर्त्तता प्रसिद्ध है। इसके शब्द को सुन कर रात्रि के अवसान और प्रभात के शुभागमन की कल्पना की जाती है। गृहस्थों के छप्पर पर जिस दिन यह टर्राता है उसी दिन यदि कोई घर का आदमी बाहर से लौट आवे या विदेश से चला आवे तो कौए को दूध भात या दही भात नसीब होता है। इस प्रदेश में भी मुर्ग़ों की आवाज़ सुन कर सुबह का अनुमान किया जाता है। यहाँ एक विचित्र पक्षी उल्लूक होता है, जिसे दिवान्ध कहते हैं। क्योंकि रात के सिवा उसे दिन में सूझता ही नहीं। यह सब से मनहूस चिड़िया है। इसकी डरावनी और भद्दी शकल-सूरत किसी २ ने देखी होगी। इसकी आवाज़ से रात की भयङ्करता बेढब बढ़ जाती है।

विहारोत्कल-निवासी श्रीविजयादशमी के दिन नीलकण्ठ पक्षी का दर्शन मङ्गलकारक समझते हैं। बहेलिया भी इस पक्षी को दिखा कर उस दिन अधेली-सूका बना ही लेता है। यहाँ के लोग तित्तिर और बुलबुल नामक चिड़ियों को बड़े शौक़ से पालते हैं। वे लोग तित्तिर को सुन्दर पिंजड़े में और बुलबुल को हाथों पर लेकर हवा खाने (टहलने) निकलते हैं। तित्तिर बड़ा लड़ाका और ढीठ पक्षी है। सिसकारी देने से यह बेतहाशा बोलने लगता है। प्रायः सब गृहस्थ लोग सुग्गा पोसते हैं। यह पक्षी परम सुन्दर और मनुष्यवाणी बोलने वाला है। शुकपक्षी के सम्बन्ध की कितनी कथायें यहाँ कही और सुनी जाती हैं। यह शुकपक्षी जो कुछ भला-बुरा सुनता है उसे ही दुहराता है। तोते के समान कबूतर भी सुन्दर होते हैं। इन्हें भी सब लोग पोसते हैं। ये बड़े गिरह-बाज़ और उड़ाके होते हैं। इनके पैरों में पैजनियाँ पहनायी

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

जाती है। इनका कलरव (घुटकना) मीठा लगता है। इस प्रदेश के घर २ के छप्परों में घोसले बना २ कर गौरैया पक्षी रहते हैं। इस चटकीली चिड़िया का चहचह करना बड़ा सुहावना लगता है। यह सच्ची बात है कि गांव-नगर में बीमारी (हैज़ा-प्लेग) महामारी फैल जाने पर यह भी खोता खाली कर के बाहर मैदान में जा टिकता है। किन्तु यह पक्षी है घरेलू अवश्य।

कोयल और खंजरीट साल भर तो अदृश्य रहते हैं पर क्रमशः वसन्त और ग्रीष्म ऋतु के उत्तरा नक्षत्र में दर्शन देते हैं। खञ्जन पक्षी अत्यन्त चञ्चल और सुबुक शरीर वाला होता है। इसे लोग " रामजी की (रजकी) धोबिन" कहते हैं। कोयल के कलकण्ठ से गीतामृत का बूँद जब टपकने लगता है तब वसन्तागमन की सूचना मिलती है। इस काली-कलूटी चिड़िया का कलकूजन श्रवण-सुखद होता है। विहार में उस विलक्षण पक्षी का मधुर शब्द भी सुना जाता है, जो सब तरह के जल का तिरस्कार करके स्वाती-विन्दु के लिये नेह लगाये रहता है। इसे चातक या पपीहा कहते हैं। इसकी "पीकहाँ" वाणी बड़ी रसीली और चुभीली होती है।

(ग) सर्पादि अनेक जीवों का वर्णन।

इस प्रदेश में अनेक विषधर जीव भी हैं पर उनमें साँप, बिच्छू, गोजर और हड्डे तथा बिढ़नी आदि प्रधान और प्रसिद्ध हैं। साँपों में गहुमन अत्यन्त भयङ्कर और प्रौढ़ विषधर है। इसके ललाट पर "गो-पद-चिह्न" रहता है। क्रोधित होने पर यह छत्र काढ़ कर मदान्ध की नाईं फुफकार छोड़ने लगता है। इसका पौरुष और प्रबल साहस स्तुत्य है। डोंड़नामक साँप पानी में रहते हैं और धामन भी खेतों में रेंगते

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

फिरते हैं। सुना जाता है कि भैंसों के पिछले पैरों को अपने शरीर से बाँध कर धामन साँप उनका दूध पी जाता है। करैत और सुनवहरी साँप भी विषैले हैं।

बिच्छू गाँव-नगरों में तो होते ही हैं पर जंगल, पहाड़ और मैदान में रहने वाले बिच्छू बड़े विषैले होते हैं। पेड़ों के खोखलों में भी इनका निवास है। पहाड़ी बिच्छू काले २ और बड़े २ होते हैं। बस्तियों में उजले, पीले और छोटे बिच्छू मिलते हैं। इनकी डंक की चोट पीतल और ताम्बे के दबीज़ दबीज़ बरतन भी नहीं बरदाश्त कर सकते। अर्थात् उनमें भी छेद हो जाता है। वज्र की टाँकी के समान वह डंक यदि मनुष्य के कोमल मांसास्थिमय शरीर पर मारते हैं तो एक प्रकार मनुष्य चेतन शून्य—संज्ञाशून्य—हो जाता है।

गोजर, कनसलाई, हड्डे और बिढ़नी ज़हरीले हैं सही पर इनके विष में असह्य पीड़ा नहीं है। पहाड़ी हड्डे अलबत्ता ऐसे ज़हरीले होते हैं कि वृश्चिकदंशन की पीड़ा याद पड़ जाती है।

इन जीवों के अतिरिक्त इस प्रदेश में मधुमक्षिका, भ्रमर, मशक, झिल्ली, चमगादड़, चूहे, गिरगट, बिस्कुतिया (छिपकली) इत्यादि अनेक प्रकार के जीव भी पाये जाते हैं। मधुमक्षिका शुद्ध मधु सञ्चय करती है। घरों और वनों में, पेड़ों पर और झाड़ियों में इनके मधुछत्र की विचित्र सृष्टि होती है। फूलों और मंजरियों पर भौंरे गूँजते तथा मँड़राते हैं। जहाँ नमी और गन्दगी अधिक रहती है वहाँ मच्छड़ भनभनाते रहते हैं। चूहे घरों में और मैदानों में बिल बना कर रहते हैं।

(घ) जलचर जीव।

गंगा, गण्डक सरयू आदि बड़ी २ नदियों में घड़ियाल,

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

सूँस, सकुची और कच्छप आदि विशाल आकृति के जीव होते हैं। अन्यान्य सभी छोटी बड़ी नदियों में अनेक प्रकार की मछलियाँ आदि होती हैं। गंगा, सरयू आदि पुण्यजला नदियों में मेढ़क बहुत कम दीख पड़ते हैं। छोटी-मोटी नदियों में कच्छू के सिवा प्राणघातक जल-जीव नहीं रहते। बरसात में बाढ़ आने पर मगर आदि छोटी नदियों में भी पैठ जाते हैं।



CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

३ भौगोलिक विहार।

सीमा।

"विहार" के पूर्व में बङ्गाल, पश्चिम में युक्तप्रान्त, उत्तर में नैपाल और दक्षिण में उड़ीसा है। "उड़ीसा" के पूर्व वङ्गोपसागर, दक्षिण सीमा की ओर महानदी और पश्चिम में मध्यप्रदेश है। उड़ीसा की देशी रियासतों से उत्तर की ओर "छोटा नागपुर" दोनों उपर्युक्त प्रदेशों के बीच में पड़ता है। बंगाल के मिदनापुर जिला का उत्तरीय अंश इस छोटे से प्रान्त के पूर्वीय सिंहभूमि ज़िले के पूर्व में सटा हुआ है।

विस्तार और क्षेत्रफल।

नैपाल और दार्जिलिङ्ग के दक्षिणी सीमान्त से लेकर वङ्गोपसागर और मद्रास प्रान्त के उत्तरीय खण्डस्थ ज़िलों तक विहार और उड़ीसा लगभग १११८२९ वर्गमील में विस्तृत है, जिसमें ४२३६१ वर्गमील में विहार का और ४१७८६ वर्गमील में उड़ीसा का विस्तार है।

चिल्का झील से लेकर सुवर्णरेखा नदी तक वंगोपसागर के किनारे २ उड़ीसा का लम्बायमान विस्तार है जिसमें पुरी, कटक और बालेश्वर नाम के तीन प्रसिद्ध (सरकारी) ज़िले हैं। १५ मील से लगा कर—कहीं २—उड़ीसा की चौड़ाई ७० मील तक है। छोटा नागपुर तो केवल २६७६६ ही वर्गमील में फैला हुआ है।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

खण्ड-विभाग।

विहार प्रदेश में मगध, मिथिला (तिर्हुत) और भागलपुर नाम के तीन विभाग हैं। गंगा की उत्तरीय तराइयों में मिथिला का और दक्षिणी तराइयों में मगध और भागलपुर का विस्तार है। इन तीन कमिश्नरियों (डिवीज़नों) में ग्यारह ज़िले हैं। तिर्हुतविभाग में सारन (छपरा), चम्पारन (मोतिहारी), मुज़फ्फ़रपुर और दर्भङ्गा ज़िले हैं। भागलपुर में मुँगेर, पूर्णिया, भागलपुर और सन्ताल परगना (दुमका) ज़िले हैं। मगधखण्ड में पटना, गया और शाहाबाद तीन मशहूर ज़िले हैं।

उड़ीसा के दक्षिण भाग में अंगुल ज़िला, पश्चिम भाग में सम्बलपुर ज़िला और पूर्वीय उपकूल भाग में बालेश्वर, कटक और पुरी ज़िले हैं। शेष समूचे प्रान्त भर में देशी राज्यों का विस्तार है। उक्त पाँच सरकारी ज़िलों को छोड़ कर २४ देशी मित्र राज्य हैं।

छोटा नागपुर कमिश्नरी में केवल दो ही देशी राज्य हैं। इनके अतिरिक्त हज़ारीबाग़, मानभूम (पुलिया), पलामू (लालटेनगंज या डालटनगंज), राँची और सिंहभूमि सरकारी ज़िले हैं।

मनुष्य और जातियाँ।

यद्यपि बङ्गालियों से विहारी लोग लम्बे और ऊँचे-पूरे होते हैं तथापि उनके समान स्वस्थ, प्रतिभाशाली और कुशाग्रबुद्धि नहीं होते। विशेषतः दक्षिण-विहार के लोग बड़े श्रम-सहिष्णु और उद्योग-शील कृषक होते हैं। विहार में कृषकों की संख्या अधिक है। किन्तु खेती कमाने में परिश्रमी

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

होने पर भी ये बड़े आलसी तथा मलिन होते हैं। इनमें सहनशीलता अधिक और साहस कम है।

शाहाबाद और सारन जिलों में भोजपुरी बिहारी बसते हैं। ये बड़े उद्दण्ड और हट्टे कट्टे होते हैं। इनकी उद्धत प्रकृति आँधी सी दुर्दमनीय है। ये बात बात में लड़ने-झगड़ने पर कमर कसे रहते हैं। जान-बूझ कर झगड़ा मोल लेते फिरते हैं। हुल्लड़ और दंगा-फ़साद मचाने में ये सबसे आगे रहते हैं। मार-पीट और ठोंक-पटक करने में इनकी बड़ी अभिरुचि है। ये हाथ में खूब मज़बूत लाठी लिये चलते हैं। थोड़ी सी बात में बिगड़ कर ये हाथ छोड़ देते हैं। इनका सोटा देख कर बड़े २ बहादुरों का कलेजा दहल जाता है। इनकी जबरदस्ती पर एक मसल मशहूर है कि "तसलवा तोर कि मोर।" १८५७ के सिपाही विद्रोह में इन भोजपुरी बिहारियों ने एक भाग लिया था। हिन्दुस्तानी सेना में इनकी अपरिमित संख्या है। ये हाथ में लट्ठ लेकर रात २ भर घर से बाहर खेतों और खालिहानों में रह जाते हैं; चाहे रात लाख डरावनी या अँधेरी हो।

बिहार में नौकरी, तिजारत और दूसरे २ व्यवसाय के मनुष्य भी हैं पर किसानों की अपेक्षा बहुत ही कम। उड़ीसा के निवासी बड़े नम्र हिन्दू हैं। ये दयालु, शान्तिप्रिय, मिलनसार, शान्त-शील और सरलचित्त होते हैं। कुछ २ ये लोग निश्चेष्ट और निरुत्साही हैं। धनोपार्जन के निमित्त परदेश जाने में ये अनिच्छुक नहीं जान पड़ते। अपने घर का काम-काज आप ही कर लेने में इन्हें संकोच नहीं होता। ये नाटे, दुबले-पतले और देखने में बंगाली की आकृति के मालूम होते हैं। इनमें अभी शिक्षा और सभ्यता का प्रचार यथेष्ट रूप से

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

नहीं हुआ है। स्त्रियों में लज्जा की कमी है। पुरुषों में चरित्रवान अधिक नहीं हैं। स्त्रियाँ रुग्णा सी दीख पड़ती हैं। उनका अङ्ग केसर-कुङ्कुम का लेप लगाने से पीतवर्ण हुआ रहता है। विलासिनी स्त्रियाँ अपने शरीर को स्वर्ण-राग-रञ्जित बना कर सौन्दर्य्य की वृष्टि करने के लिये केसर का लेप लगाती हैं।

कहीं २ उड़ीसा की रियासतों में अभी तक ऐसी असभ्य जातियाँ हैं जो पत्तियों से देह ढँकती हैं। उन्नीसवीं शताब्दी तक उन्हें धातुओं तक की पहचान नहीं थी। अभी तक उनकी बोल-चाल में कूट २ कर असभ्यता भरी हुई है। उनकी स्त्रियाँ भी पत्ते का पहनावा पसन्द करती हैं

उड़ीसा के देशी राज्यों के पर्वतीय प्रान्तों में और छोटा नागपुर तथा सन्ताल परगने के पहाड़ी हिस्सों में अभी तक वही पुरानी जातियाँ हैं जिनका सम्बन्ध द्राविड़ों से है। छोटा नागपुर की ऊँची भूमि में द्राविड़ों की सी एक जाति बसी हुई है जो बिल्कुल काली-कलूटी, नाटी-खोटी और असभ्य है। उस जाति के लोगों की आँखें गोली २, सिर लम्बे २, नाक चिपटी और केश-गुच्छ कुछ २ घूँघरवाले होते हैं।

छोटा नागपुर की अधित्यका पर 'कोल' नामक एक जाति निवास करती है। उनका आदिम स्थान भी वहीं है जहाँ उक्त द्राविड़ों का। संस्कृत में 'कोल' शब्द का अर्थ 'शूकर' अर्थात् वन्यपशु है। पुनः "कोल किरात भिल्ल बनवासी" प्रसिद्ध बात है। सौंताल लोग बड़े ही कर्मठ और कार्य्य-क्षम होते हैं। ये बात की बात में जंगलों को काट कर खुला मैदान बना देते हैं। कठिन से कठिन कार्य्य को चुटकियों में उड़ा देते हैं। ऊसर से ऊसर भूमि को जोत कर उपजाऊ बना

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

डालते हैं। इनकी उद्योग-शक्ति के सामने कुछ असम्भव नहीं है। जहाँ एक दिन घने २ जंगल थे वहाँ इनके किये आज हरे-भरे धान के खेत लहलहा रहे हैं। १८५५ के सौंताल-संग्राम में इनके निर्भीक साहस का पूर्ण परिचय मिला था। ये बड़े भारी मद्यपी होते हैं। शराब पीने के लिये बेहाल रहते हैं। इनकी स्त्रियाँ प्रायः स्वतन्त्रता उपभोग करती रहती हैं। वे घर के काम में जैसा हाथ बँटाती हैं वैसा ही बाहर के कामों में भी।

खोंड़ जाति भी कम पियक्कड़ नहीं है। इस जाति वाले एक नम्बर के शराबी होते हैं। मद्यपान की घृणित प्रकृति इन्हें अन्तिम दशा की दरिद्रता की चक्की में पीस रही है। १६०८ में इन लोगों ने मद्यपान त्यागने की प्रतिज्ञा से अपने को बाँधा; पर वह प्रण-बन्धन मद्य-पान की बुरी लालच ने ढीला कर दिया। १६१० में इन लोगों ने सरकार से प्रार्थना की थी कि शराब की भट्ठियाँ और दूकानें तोड़ या बन्द कर दी जायँ पर सरकार ने उनकी प्रार्थना को उन्मत्त-प्रलापवत् समझ कर इसलिये उस ओर ध्यान नहीं दिया कि किसी दशा में इनसे शराब पीना छुड़ाना अत्यन्त असम्भव है। क्योंकि शराब की ख़ाली बू इन्हें ऐसा पागल बना देती है कि चाहे भट्ठी कितनी ही दूर क्यों न हो, ये वहाँ जाने से नहीं चूकेंगे; अवश्य जा कर शराब पी आवेंगे।

विहारोत्कल के हिन्दुओं में भी अनेकानेक जाति-भेद हैं। हिन्दू-शास्त्रों के अनुसार ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र तो हई हैं पर इन मुख्य चार वर्णों में भी असंख्य जातियों की शाखा-प्रशाखा फैली हुई है। ब्राह्मणों में जैसे अनेक जाति-भेद हैं वैसे ही राजपूत क्षत्रियों में तथा अन्यान्य वर्णों में भी हैं।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

मुसलमान भाई भी इस प्रदेश में बहुत हैं पर हिन्दुओं की संख्या की लिहाज़ से कुछ नहीं के बराबर हैं। किन्तु, इनमें भिन्न २ जाति-विभाग का बखेड़ा नहीं है। नाम मात्र के लिए जुलाहे, पठान, शेख़, सैयद आदि हैं। इनमें कुछ ही कुछ विभेद है।

सन् १९११ की मनुष्यगणना के अनुसार जनसंख्या।

ज़िला या राज्य	क्षेत्रफल वर्गमील	जनसंख्या	प्रतिवर्गमील जनसंख्या
गया	४७१२	२१५९४९८	४५८
पटना	२०६९	१६०९६३१	७७८
शाहाबाद	४३७३	१८६५६६०	४२७
जोड़ पटना डिवीज़न	१११५४	५६३४७८९	५०५
चम्पारन	३५३१	१५०८३८५	५४०
दर्भङ्गा	३३४८	२९२९६८२	८७५
मुज़फ़्फ़रपुर	३०३६	१८४५५१४	९३७
सारन	२६८३	२२८९७७८	८५३
जोड़ तिर्हुत विभाग	१२५९८	९९७३३५९	७९२
भागलपुर	४२२६	२१३९३१८	५०६
मुँगेर	३९२२	२१३२८९३	५४४
पूर्णियाँ	४९९८	१९८९६३७	३९८

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

ज़िला या राज्य	क्षेत्रफल वर्गमील	जनसंख्या	प्रतिवर्गमील जनसंख्या
सन्तालपरगना	५४६३	१८८२९७३	३४५
जोड़ भागलपुर विभाग	१८६०९	८२१४४८२१	४४१
अङ्गुल	१६८१	१९९४५१	११९
बालासोर	२०८५	१०५५५६८	५०६
कटक	३६५४	२१०९१३९	५७७
पुरी	२४९९	१०२३४०२	४१०
सम्बलपुर	३८२४	७४४१९३	१९५
जोड़ उड़ीसा डिवीज़न	१३७४३	५१३१७५३	३७३
हज़ारीबाग़	७०२१	१२८८६०९	१८४
मानभूम	४१४७	१५४७५७६	३७३
पलामू	४९१४	६८७२६७	१४०
राँची	७१०४	१३८७५१६	१९५
सिंहभूम	३८९१	६९४३९४	१७८
जोड़ छोटा नागपुर वि०	२७०७७	५६०५३६२	२०७
जोड़ अँग्रेज़ी राज्य	८३१८१	३४४९००८४	४१५
खरसाँवाँ	१५३	३८८५२	२५४
सरायकेला	४४९	१०९७९४	२४५
जोड़ छोटा नागपुर देशी राज्य	६०२	१४८६४६	२४७

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

सन् १९११ की मनुष्यगणना के अनुसार देशी राज्यों की जनसंख्या ।

२४ राज्यों की नामावली	क्षेत्रफल वर्गमील	जनसंख्या	प्रतिवर्गमील जनसंख्या
आँटगढ़	१६८	४६८१३	२७९
अठमल्लिक	७३०	५३७६६	७४
बामड़ा	१९८८	१३८०१६	६९
बराम्बा	१३४	४१४२९	३०९
बउद्	१२६४	११३४४१	९०
बोनई	१२९६	५८३०९	४५
दसपल्ला	५६८	५७०५३	१००
ढेंकनाल	१४६३	२७०१७५	१८५
गङ्गपुर	२४९२	३०३८२९	१२२
हिण्डोल	३१२	४९८४०	१६०
कालाहण्डी	३७४५	४१८९५७	११२
केओञ्झर	३०९६	३६४७०२	११८
खण्डपाड़ा	२४४	७३८२१	३०३
मयूरभञ्ज	४२४३	७२९२१८	१७२
नरसिंहपुर	१९९	३९९६४	२०१
नयागढ़	५८८	१५१२९३	२५७
नीलगिरि	२७८	६८७१४	२४७
पाललहरा	४५२	२५६८०	५७

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

२४ राज्यों की नामावली	क्षेत्रफल वर्गमील	जन संख्या	प्रतिवर्गमील जन संख्या
पटना	२३९९	४०८७१६	१७०
रैरखोल	२३३	३१७२४	३८
रणपूर	२०३	४५९५६	२२६
सोनपुर	९०६	२१५७०१	२३८
तलचर	३९९	६६२०१	१६६
तिगिरिया	४६	२३२५०	५०५
जोड़ उड़ीसा देशीराज्य	२८०४६	३७९६५६२	१३५
जोड़ देशी मित्रराज्य	२८६४८	३९४५२०९	१३८
जोड़ समग्र विहारोत्कल प्रदेश	१११८२९	३८४३५२९३	३४४

धर्म्म ।

आदिकाल से भारत में आर्य्य-जाति का सर्वस्व-भूत, मुनि-महर्षिवृन्द-सेवित, रामकृष्णादि-संरक्षित, श्रीशंकरादि आचार्य्य-परम्परा-पल्लवित, कल्याण-कल्पद्रुम अनादि श्रीसनातनधर्म्म—वैदिक आर्य्य-धर्म्म—प्रचलित था और बहुलांश में है भी। विहारोत्कल-प्रदेश में वही अखिल भारतीय धर्म्म आदिकाल से प्रचलित था। इधर बीच में चौथी और पाँचवीं शताब्दी से बौद्धधर्म्म और जैनधर्म्म का प्रभाव विहारोत्कल

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

की भूमि पर प्रवल हो उठा। इन धर्म्मों के सूत्रपात से ही वह प्राचीनतम श्रेष्ठ वैदिक धर्म क्षीण होने लगा। उक्त धर्मों के विषय में मई १९१४ की सरस्वती में एक "वैष्णव" लेखक महाशय लिखते हैं कि—"भारत की धर्मचिन्तारूपिणी नदी संहितारूपी पर्वत से जन्म प्राप्त करके ब्रह्म नामक शिला-माला से स्खलित होती हुई—प्रसार लाभ करती हुई—जिस समय आरण्यकोपनिषद् नामक गम्भीर कन्दरा में उपस्थित हुई: उस समय उसका जलोच्छ्वास और भी प्रवल और उसका वेग और भी भीषण हुआ वह कलकल शब्द करके चारों दिशाओं को मुखरित और दोनों तटों को प्लावित करता हुआ चला। इसके बाद धारा-भङ्ग हुआ—एक धारा की तीन धारायें हो गयीं। वे तीन धारायें तीन विभिन्न दिशाओं में वहीं। विभिन्न प्रकृति के संसर्ग से उनकी प्रकृतियाँ भी विभिन्न हो गईं। इस लिए उनके नाम भी विभिन्न हो गए। प्रधान धारा का पहला ही नाम रहा: वह "ब्राह्मण्य" कह कर विख्यात है। अन्य दो धाराओं में एक का नाम बौद्ध और दूसरी का जैन हुआ। इसके सिवा और कुछ नहीं। बौद्धधर्म्म हठात् आकाश से निपतित किम्बा समुद्र से उत्पतित नहीं हुआ।" *

प्रातःस्मरणीय भगवान् शङ्कराचार्य्य ने उस वैदिक धर्म का जब उद्धार किया तब हिन्दुओं में धार्मिक जागृति फैलने

* बौद्ध और जैनी वेद को नहीं मानते और पशु का घात करना बहुत बुरा समझते हैं। दो ढाई हज़ार वर्ष का अर्सा गुज़रता है कि यह मत बड़ा प्रबल हो गया था, और सारे हिन्दुस्तान में राजा प्रजा सब लोग उसी मत को मानते थे। शङ्कराचार्य्य के समय से वह मत दूर हुआ, और वेद की महिमा फिर चमकी। (भूगोलहस्तामलक)

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

लगी, और यहाँ तक फैली कि बौद्ध और जैनधर्म का प्रवाह ही पीछे की ओर घूम गया। उक्त दोनों धर्म्मों की धवल धारा मुड़ कर जब सनातनधर्म-सागर में विलीन हो चुकी तब उड़ीसा एक वार बहुत दिनों पर चैतन्य महाप्रभु के भक्ति-संगीत से गुञ्जायमान हो उठा और जयदेव के गोविन्दगीतामृत से अभिषिक्त मिथिला विद्यापति की कोमल-कान्त-पदावली से परिप्लावित होने लगा।

विहार-उड़ीसे में हिन्दुओं की संख्या इस समय ३२० लाख है। ये हिन्दू-धर्म्मानुयायी हैं। वैष्णव, शैव, शाक्त, वेदान्ती आदि अनेक मत हिन्दू धर्म के अन्तर्गत हैं। वैष्णवों में भी अनेक भेद हैं। उड़ीसा और तिर्हुत में हिन्दुओं की ठट्ट खूब है। मिथिला तो आर्य्य-जाति का आदिम स्थान हुई है, उड़ीसा भी बहुत दिनों से हिन्दूधर्मावलम्बियों के लिये परम-पवित्र भूमि समझा जा रहा है।

जाज्वल्यपराक्रम जरासन्ध की भयङ्कर तलवार ने मगध में सनातनधर्म की अमृत-लता को जड़ से क़लम कर दिया था परन्तु उसकी देहान्तर प्राप्ति के उपरान्त वह फिर लहलहा उठी और पुष्प-भार-नम्र होकर अपूर्व-श्री से शोभित हो रही।

अशोक ने उड़ीसा-निवासियों को भीषण आक्रमण द्वारा अपने अधिकार में लाकर बौद्ध-मतानुयायी बनाया था। इस के पूर्व वे हिन्दू-धर्म की पूजा में प्रवृत्त थे। महाराजा विम्बसार के समय से अर्थात् पाँचवीं शताब्दी से बौद्धधर्म का जो दीपक प्रज्वलित हुआ था वह आठवीं शताब्दी में निर्वाण को प्राप्त हो गया।

अन्त में यही बतलाना बाक़ी रहा कि यहाँ की ब्राह्मण जाति के लोग सदा पूजा-पाठ जप-अनुष्ठान आदि धार्मिक

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

कृत्यों के सम्पादन करने के अधिकारी माने जाते हैं। सभी जातियाँ उनका देवतुल्य सम्मान करती हैं। इन्हें सुस्वादु भोजन द्वारा सन्तुष्ट कराने में महान् पुण्य समझा जाता है। विहारोत्कल-निवासियों में राम, कृष्ण, शिव, दुर्गा, गणेश, सरस्वती, सूर्य्य, भैरव आदि देवों और देवियों की उपासना करने वालों के सिवा बहुत से ऐसे हैं जो भूत-प्रेत-पिशाच आदि की आराधना में रत हैं। लोकाचार की इतनी प्रबलता है कि वेद-मत शिथिल पड़ गया है। सब लोगों ने अपने २ मनोनुकूल धर्म गढ़ लिये हैं।

हिन्दूधर्मानुयायी ३१७५३६८८ मनुष्य हैं और इस्लाम धर्म्मावलम्बी ३६८३४३८। २६८२६५ ईसाइयों के सिवा और और धर्मों के मानने वाले भी बहुत हैं। वे धर्म ऐसे हैं जिनमें कोई उल्लेख्य महत्ता या प्रधानता नहीं है। जैनी लगभग पांच हज़ार और बौद्धमतानुयायी लगभग दो हज़ार हैं।

चाल-व्यवहार।

आर्य्यों का आदिम वासस्थान और प्राचीन आदर्श सभ्यता का लीला-क्षेत्र मिथिला और गंगा का तट ही है। किसी दिन यहाँ के निवासियों की रहन-सहन और चाल-चलन सभ्यता की महत्ता से परिपूर्ण थी। यहाँ आजकल प्रायः उस बीती दशा के विपरीत दृश्य उपस्थित है।

अब भी विहारी लोग नामी होने के लिये और परलोक सुधारने के लिये धर्मशाला, देवमन्दिर, कूप, वापी और सरोवर आदि बनवाते हैं। किन्तु यह सब काम निष्काम हृदय से कोई नहीं करता। जिसे करना होता है वह ऐसे पुण्य खाते के कामों में किसी को शरीक नहीं करता। यदि

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

कोई ऐसा सार्वजनिक कार्य्य का बीड़ा ले उठे तो सहायक कम मिलते हैं। सब की इच्छा अकेले ही पुराय लूटने की रहती है। यहाँ के लोगों में विद्या-प्रेम का बहुत कुछ अभाव है अतः पाठशालाओं की स्थापना की ओर किसी का ध्यान नहीं जाने पाता।

विहारी लोग पुत्र और कन्या के विवाह में, माता-पिता के श्राद्ध में और पराडों के पाखराड-प्रपञ्च से परिप्लावित तीर्थों में अपरिमित द्रव्य व्यय करते हैं। इनके अपव्यय से जो क्षति होती है वह समूचे समाज के सिर पर मढ़ी जाती है। रगिडयों और भाँड़ों के नाच-तमाशे का रंग जमा कर धन को निश्चिन्त होकर आतशबाज़ी की तरह फूँक देते हैं। तिलक और दहेज की कुप्रथा से इनका सारा समाज कलुषित और महा मलिन हो गया है।

विहारियों को खाने पहनने के लिये बहुत थोड़ा धन और अल्पसामग्री चाहिये। मुक़द्दमा लड़ने के लिये इन्हें प्रचुर धन की आवश्यकता है। खाते हैं सत्तू, पहनते हैं फटा-पुराना, सोते हैं चटाई या खर-पात पर; किन्तु मामला-मुक़द्दमा में भिड़ कर बेहिसाब रुपये लुटा देते हैं। छोटी-मोटी बात के लिये, ईर्षा-द्वेष-वश, धन को पानी के समान बहा देना इनका एक प्रधान काम है।

यहाँ की स्त्रियाँ गहना पहनने में और गन्दा रहने में बहुत बढ़ी चढ़ी हुई हैं। स्त्रियाँ पर्दे में रहती हैं। नातेदारी में उनसे छोटे होते हैं वे चाहे देख लें तो देख लें, नहीं तो उनसे बड़ों की बात कौन कहे सूरज चाँद भी नहीं देख पाते। किन्तु ऐसी स्थिति केवल बड़े २ घर की बहू-बेटियों की है। छोटी २ जाति के लोग अपनी स्त्रियों को सिर्फ पर्दे से बाहर घूमने-

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

फिरने की आज्ञा देते हैं। परन्तु हर हालत में स्त्रियों के शीश पर पुरुषों का अधिकार-अंकुश गड़ा ही रहता है। स्त्रियों की वेशभूषा अत्यंत भद्दी-रद्दी है। केश और वस्त्र तथा अवयवों की अपवित्रता तथा गन्दगी पर विचार करना तो वृथा है पर भूषणों का भद्दापन तो निन्दा की सीमा भी फाँद जा सकता है। जो स्त्री पानी का लोटा कूयें से नहीं निकाल सकती वह भी पसेरी भर गहना पहन लेती है और यदि उन्हीं भूषणों की गठरी उसके सिर पर लाद दी जाय तो वह सौ क़दम से वेशी तेज़ नहीं जा सकती। यह हालत उन बड़े २ घरानों की है जो गाँवों में हैं, जहाँ शिक्षा का आलोक नहीं पहुँचा है। शहरों में कुछ २ शिक्षित लोगों के घर में सुधार हो चला है।

विहारियों के बच्चे बहुत छोटी उम्र में व्याहे जाते हैं: अतएव न तो सुस्थ ही होने पाते हैं और न चिरायु ही। माता-पिता को बच्चों की शादी करने की जैसी गाढ़ी चिन्ता व्याप्त रहती है वैसी ही लिखाने-पढ़ाने की नहीं रहती। बालकों की शिक्षा का प्रश्न उनके लिये महत्त्व नहीं रखता तो बालिकाओं की गिनती न तीन में है न तेरह में। बेचारी कन्या का ज्यों ही जन्म होता है त्योंही उसके जड़ माता-पिता मुँह बना लेते हैं और वैसी ही निराशा की नदी में डूबने उतराने लगते हैं जैसी निराशा-नदी में मङ्गलामुखी वेश्यायें पुत्रोत्पत्ति के बाद वह चलती हैं।

स्वामी दयानन्द के आर्य्यसमाज का कुछ प्रभाव पड़ने से कहीं २ विधवा-विवाह भी हुआ है पर यह प्रथा यहाँ कभी प्रचलित नहीं थी। हाँ, वृद्धविवाह, अनमिल जोड़ी का विवाह, बालविवाह, अयोग्यविवाह आदि अनेक कुविवाह

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

की कुरीतियाँ इस प्रदेश में समाज की नसें ढीली कर रही हैं।

होली महोत्सव में यहाँ सब लोग स्वभावतः उन्मादित हो जाते हैं। बाल-युवा-वृद्ध, सब के सब, एक ही रंग में रँग जाते हैं। ऊँच-नीच और बड़े-छोटे का विचार छूट जाता है। लज्जा और शील की आँखें फोड़ दी जाती हैं। सभ्यता का गला घोंट दिया जाता है। अनुचित-उचित का विवेक छोड़ कर सब लोग अपशब्द और घृणास्पद वाक्य उच्चारण करने लग जाते हैं। सब लोग सब लोगों पर धूल, राख, कूड़ा, गन्दी से गन्दी, सड़ी-गली, नापाक, दुर्गन्धित चीजें डालने और फेंकने लगते हैं। शराब, गाँजा और भाँग पी पी कर बम भोला बने फिरते हैं।

दीवाली में जूआ खेलते हैं। गोमाता की पूजा करते हैं। पर, कहीं २ सूअर को घसीट कर गाय-भैंसों को उसे मारने के लिये ललकारने और उत्तेजित करने की चाल है। विजयादशमी (दशहरा) में बङ्गाल की तरह 'सरस्वती-पूजा' की चाल मूर्खानन्द विहारियों में नहीं है। उड़ीसा में जगन्नाथ जी के रथयात्रा-महोत्सव में कितने भक्त लोग रथ के चक्के के नीचे आप से आप सोकर कुचल जाते थे। यह चाल अब छूटी है।

भाषा।

विहारोत्कल में मोटी तरह से कई भाषायें प्रचलित हैं पर हिन्दी, उड़िया और उर्दू को ही प्रधानता दी जा सकती है। विहारी भाषा तो मुख्यतः "हिन्दी" ही है पर "भोजपुरी" "मागधी" और "मैथिली" आदि प्रान्त-भेद से उसके रूपान्तर हो गये हैं। हिन्दी-उर्दू को सरकारी कचहरियों में शरण मिली है। हिन्दी-भाषा को शिक्षित और सभ्य लोगों ने अपनाया

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

है। किसानों और दिहातियों तथा अनपढ़ों में वही व्याकरणहीन उक्त तीन भाषायें प्रचलित हैं। वे कैथी आदि अक्षरों में लिखी जाती हैं और हिन्दी "देवनागरी अक्षर" में लिपिबद्ध की जाती है।

छोटा नागपुर, उड़ीसा के देशी राज्यों और सन्तालपरगना में "मुण्डा भाषा" बोली और लिखी जाती है। किन्तु वहाँ की बसने वाली जातियों के नामानुसार वह भाषा "सौंताली", "मुण्डारी" (मुड़िया) और "खड़िया" आदि नामों से विख्यात हो गई है। सन्तालपरगने के सौरिया पहाड़िया लोग "मालटो" भाषा बोलते हैं और खौंड़ जाति वाले "काँधी भाषा" का प्रयोग करते हैं।

"भिन्न २ भाषाभाषियों की संख्या"

(१) विहारी भाषा हिन्दी और उर्दू	२४६३३०००
(२) विहारोत्कल में वङ्गभाषाभाषी—	२२६५०००
(३) उड़िया भाषा—	७८२००००
(४) मुण्डा भाषा—	२५५६०००
(५) द्राविड़ी भाषा आदि—	७८५००००

खेती और उपज।

* "भारतवर्ष के किसी भी स्थान में विहार के सदृश आदर्श कृषक नहीं पाये जा सकते। उसके मस्तिष्क में युगों का अनुभव भरा है और उसका संपूर्ण परिवार पूर्ण हृदय से कृषिकार्य्य में रत रहता है। कृषि-विभाग उसे बहुत कुछ सिखा नहीं सकता......"।

कृषि के व्यतीत विहारियों का अन्य कोई व्यापार नहीं।

* पाटलिपुत्र विशेषाङ्क पृष्ठ २७।

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

कारण यह है कि उर्वरा भूमि और समय पर यथेष्ट वृष्टि उन्हें सुलभ हैं। वे केवल साल भर अपने ही पेट पोसने भर के लिये अन्न नहीं उपजाते, बल्कि उनकी उपार्जित अन्न-राशि से भारत के कई अन्यान्य प्रदेश तथा दूरवर्ती विदेश के निवासी भी पेट भर रहे हैं।

बिहार में तीन फ़सल कटती है। भदई, अगहनी और चैती। भदई तो बरसात ही (भादो) में होती है पर अगहनी भादो में बोई और कातिक अगहनमें काटी जातीहै। फिर चैती भी कातिक में बोई और चैत में काटी जाती है। भदई में कोदो, मँडुआ, साँवाँ, टाँगुन, जुन्हरी, जनेरा (भुट्टा), सेरा आदि अनेक प्रकार के मोटे अनाज पैदा होते हैं। अगहनी में सिर्फ धान की ही खेती का प्राधान्य है। किन्तु धान असंख्य प्रकार के होते हैं। उनकी नामावली और उनके आकार-प्रकार और गुण-लाभ आदि का विवरण तैयार किया जाय तो एक बड़ा भारी पोथा तैयार हो जाय। चैती में रब्बी (फ़सल ख़रीफ) होती है। इसमें गेहूँ, जौ, चना, तेलहन, मटर आदि पौष्टिक अन्न उपजते हैं। उड़द, मूँग, अरहर, मसूर आदि दाल के अनाज भी खूब पैदा होते हैं। तीसी, तोरी, तिल आदि तेलहन को छोड़ कर रेंड़ी और बरें आदि भी यथेष्ट रीति से यहाँ उपजतें है।

बिहारी लोग गेहूँ तो आफ़रात उपार्जन करते हैं पर खाते बहुत ही कम। विशेषतया धान का चावल ही बिहारियों का सर्वप्रधान भोज्य पदार्थ है। पर्व-त्यौहारों में गेहूँ की खोज होती है। चना को मगर खूब सधाते हैं। बोने के वक्त हलवाहा भी चना चबाता है। पनपने पर लोग साग (टूसा) खोंट (कुटक) लेते हैं। बाद को फिर कचरी और

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

होरहा के बहाने जूट बेचारे को बे-शरण कर देते हैं। कटने पर जूट की बे-हद बे-शुमार चीज़ें बनती हैं। जूट के बराबर कोई वस्तु अगणित प्रकार का भोजन नहीं प्रस्तुत करा सकती। जूट को घोड़े खूब जी से खाते हैं।

उड़ीसा में भी पटुआ पैदा होता है मगर पूर्णिया ज़िले के बराबर जूट कहीं पैदा नहीं होता। दक्षिण-विहार में जिस प्रकार ऊख की खेती खूब होती है उसी प्रकार तिर्हुत में तम्बाकू की खेती का बड़ा ज़ोर है। विहार में अफ़ीम के पौधे की खेती पहले खूब ज़ोरों पर थी लेकिन अब उसका जखेड़ा जड़-सोर से यहाँ से उखड़ गया। नहीं तो पटने में ही अफ़ीम का अघट भंडार सरीखा गुदाम था। * तिर्हुत में नील की खेती अब भी होती है पर उसका व्यापार मन्दा पड़ गया। है

† पटना और गया ज़िले का चावल बहुत ही मिहीन (बारीक), सुन्दर, सुस्वादु, सुगंधित, दर्शनीय और उज्वल होता है। चावल का प्रसाद देखते ही उसके सौरभ से मन मुग्ध और स्वच्छदर्शन से चित्त तृप्त हो जाता है। चावल ही इस प्रदेश (विहारोत्कल) के लोगों का प्राणाधार है।

खेती की उपज में पैदावार ज़मीन और वर्षा की जितनी आवश्यकता है उतनी ही दरकार नहर, आहर, पोखर, ताल, पइन और कूएँ की भी है। विहार में नहरें भी हैं, झील-झरने भी हैं, नदी-तालाब और कूएँ आदि जलाशय भी हैं। उड़ीसे

* मोतिहारी जिले में नील की खेती खूब होती है।

† मगध और भागलपुर में धान की पैदावार खूब अफरात होती है।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

में भी नहरें हैं; *भूमि उर्वरा है और ताल डाबर आदि बहुत हैं। उड़ीसा की भूमि कुछ लाल रंग की है। मिट्टी कहीं सूक्ष्मकणयुक्त और कहीं स्थूलकण-युक्त है। धान, मँडुआ, साँवाँ, तमाकू, पान आदि की उपज के लिये वहाँ की मिट्टी बहुत अच्छी है। छोटा नागपुर में तो जहाँ २ नीची (खलार) ज़मीन है वहीं खेती करने का सुभीता है। क्योंकि ऊँची जगह से नयी चिकनी मिट्टी का घुआठ—खादखूद—बह कर नीची जगह में खूब जमा होता है। इसी लिये तरी या गहरी जमीन में खूब काफ़ी पैदावार होती है। ऊँची ज़मीन का पानी नीचे की ओर बिल्कुल ढलक जाने के कारण †छो० ना० की ऊँची अधित्यका पर एक बूँद जल भी नहीं टिकता। बिहार की तरह वहाँ भी कूँए से जल निकाल कर बहुत जगहों में खेती की सिंचाई होती है। जैसे उड़ीसा में महानदी से नहरें निकाली गई हैं वैसेही मगध देशमें भी सोन की नहरें हैं। सोन की नहरों से शाहाबाद जिला का अधिकांश आबाद होता है। पटना और गया ज़िला भी थोड़ा-बहुत सोन की नहरों से सींचा जाताहै। और और जगहों में केवल मेघ और सजल जलाशयों की आशा पर अवलम्बित रहना पड़ता है। चम्पारन ज़िले (तिर्हुत) में त्रिवेणी की नहरें हाल ही में बन कर तैयार हुई हैं। इनके

* उड़ीसा का उपकूल भाग उपजाऊ नहीं। समूचा प्रान्त वन-पर्वत से भरा है।

† छोटा नागपुर की कुछ ज़मीन बलथर और अँकड़ीली भी है। यद्यपि वहाँ जंगल-पहाड़ की अधिकता है तथापि धान, बाजरा, तेलहन आदि की उपज सन्तोषप्रद है।

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

द्वारा चम्पारन का समग्र उत्तरीय खण्ड गण्डक नदी के जल से परिप्लावित हो सकेगा।

* व्यवसाय।

"विहार की व्यवसाय करनेवाली जातियों में कुछ तो इतने प्राचीन हैं, जितना कि स्वयं इतिहास। गड़ेरी (जिस की व्युत्पत्ति संस्कृत शब्द।'गद्दालिका' अर्थात् भेड़ीसे है) चन्द्रगुप्त के भी पूर्वकाल से भेड़ियों का परिपालन करते आ रहे हैं और इन लोगों में ऊन और कम्बल बुनना आदि विषयों के जातीय संगीत भी पाये जाते हैं।"

"असीरिया, बबीलीनिया, मिश्र, यूनान और रूम आदि देश विहार के नील से अभिज्ञ थे। इष्टइण्डिया कम्पनी ने जहानाबाद से लेकर फतूहा तक की कुल जमीन को चारखाना तथा अन्य वस्तुओंके बुनने का बड़ा भारी केन्द्र बनाया था और हज़ारों जुलाहों और ताँतियों को काम दिया था। ये चीजें विलायत भेजी जाती थीं। अब कल-पुर्जे का ज़माना आ गया है, फतूहा और खुशरूपुर के कुछ चारखाने ही बस इस समय उस व्यवसाय के चिह्नस्वरूप बच गये हैं जो किसी वक्त बहुत ही बढ़े-बढ़े थे।" †

१८९८ में विहार में नील की जितनी उपज थी अब उस की तिहाई भी पैदावार नहीं है। दर्जनों कारख़ाने बन्द हो गये। एक साल तो नील की वार्षिक आय ३३ लाख रुपये तक पहुँच गयी थी!

* इस विषय का कुछ अंश पाटलिपुत्र के विशेषांक से उद्धृत है।

† पटने में मोटिया कपड़ा और दरी बिनने का व्यवसाय खूब होता है। मोतिहारी में भी दरी अच्छी बनती है।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

बङ्गाल से विहार में तम्बाकू की उपज तिगुनी बेशी है। मुँगेर में तम्बाकू की पेनिनसुलर कम्पनी का बड़ा भारी कल-कारख़ाना है, जहाँ सिगरेट बनता है।

राँची और मानभूमि जिलों में लाह के कई अच्छे २ कारख़ाने हैं। छोटा नागपुर और उड़ीसा के उत्तर खंड में लाह होता भी बहुत है।

"मुजफ्फरपुर के स्कूल सबइन्सपेक्टर ने अपने गृह के निकट एक झरने में कुछ छोटे २ सीप देखे और उनके मन में यह विचार उत्पन्न हुआ कि इनसे बटन बड़े मजे में बन सकते हैं। परिणाम यह हुआ कि, आज मेहसी (मुजफ़्फ़रपुर) में बटन का एक बहुत बड़ा कार्य्यालय खुल गया है, जहाँ से प्रतिमास हज़ारों बटन बन कर निकलते हैं।"

"इसी प्रकार * काग़ज़ बनाने और शीशा ढालने का व्यवसाय भी विहार में अच्छी तरह चल सकता है। बड़े २ दियारों में नरकट और घाँस का इतना बाहुल्य रहता है कि उनसे काग़ज़ का काम बड़े मजे में चल सकता है। रसायनज्ञ सर वीलियम रैमसे ने पटने की बालू को शीशा ढालने के लिये परम उपयोगी बतलाया था। फतूहा के समीपवर्ती कुछ मान-मर्य्याद वाले दो मुसलमान नवयुवकों ने शीशा बनाने का व्यवसाय आरम्भ किया था।"

उड़ीसा के उपकूल भाग में पहले इतना नमक होता था कि जिसके व्यापार से इष्ट इण्डिया कम्पनी सरकार को १८

---

* राजमहल पहाड़ी में "सबई" घास बहुतायत से होती है। वह कागज बनाने के काम में अमूल्य सहायता दे सकती है।

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

लाख सालाना व्यवसाय-कर देती थी। यह बात एक वर्ष से अधिक की नहीं।

* ऊख की खेती दक्षिण-विहार में बहुत होती है। ऊख को कल में पेर कर और उसको कड़ाह में औंट कर गुड़ बनाया जाता है। गृहस्थ लोग स्वयं गुड़, राब आदि बना लेते हैं। ऊख पेरने के लिये लोहे की कलें आरा से पच्छिम बिहिया में बनती थीं। यह कारखाना यद्यपि बहुत ही बड़ा था तथापि अब वह अपना नाम-निशान बतलाने योग्य दशा में भी नहीं है।

विहार में ठठेरों, लुहारों, जुलाहों, सुनारों, कुम्हारों और तेली तथा चमारों का घरेलू व्यवसाय भी बड़े महत्त्व का है। बहुत सी ऐसी † जगहें हैं जहाँ ठठेरे लोग पित्तल और ताम्बे का काम बहुत बढ़ियाँ और मजबूत बनाते हैं। लुहार भी कल-पुर्जे के सिवा ‡ और २ भी जितनी जरूरी चीजें विहारी

* छपरा, मोतिहारी, मुजफ्फरपुर, दर्भंगा और शाहाबाद आदि जिलों के भिन्न २ स्थानों में चीनी बनने के अच्छे २ कारखाने हैं। जैसे छपरे में मरहीरा, बनकड़, और शाहाबाद में नासरीगंज, जगदीशपुर इत्यादि।

† पटना, पलामू, पुरी, अंगुल, संभलपुर जिलों में पित्तल के काम होते हैं।

‡ मुंगेर में बन्दूक, पिस्तौल, छुरी, कांटे इत्यादि लोहे की अंग्रेजी चीजें बहुत ही अच्छी और सस्ती बनती हैं। मुजफ्फरपुर जिले में भी लोहे का कुछ काम कई जगह होता है। पलामू जिले में तो लोहे के गहने भी बनते हैं। मुजफ्फरपुर और भागलपुर में ट्रंक भी खूब बनते हैं।

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

गृहस्थों को दरकार होती हैं खूब सुबुक और सस्ता बनाते हैं। कुम्हार भी तरह २ की मिट्टी की चीजें बना २ कर लोगों की नित्य की आवश्यकतायें पूरी करते हैं। सारन जिले में सिवान के मिट्टी के बरतन और शाहाबाद जिले के ससराम में बने हुए मिट्टी के पात्र बड़े ही सुन्दर और सुडौल होते हैं। उनपर की गई हुई चित्रकारी और फूल पत्तियों के काढ़ने की कारीगरी बड़ी प्रशंसा के योग्य होती है। सुनार लोग भी सब जगह अपना कारोबार फैलाये हुए हैं मगर मुँगेर जिले के खड़गपुर में और कटक में सोने चाँदी के गहनों की विचित्र गढ़ाई होती है। कटक की नक़ासी तो भारतविख्यात है। पटने में ज़रदोज़ी का काम बहुत ही सुन्दर होता है। सोने और चाँदी के सच्चे तारों से मख़मल पर और अच्छे २ मूल्यवान सचिक्कण वस्त्रों पर क़सीदा और बेल-बूटे काढ़े जाते हैं। जुलाहों का काम भी कल-पुर्जा के मारे कौड़ो का तीन तीन हो गया *। पहले चर्खा चलने से बिहार की असंख्य विधवायें अपनी जीविका उपार्जन करती थीं। देश के अन्दर अच्छा सच्चा सूत काता जाता था। बेचारे जुलाहे उससे अच्छे २ गाढ़े वस्त्र रचते थे। अब उनकी सारी करामात मिट्टी में मिल गयी। उसी प्रकार तेल पेरने वाले तेली भी निकम्मे हो गये। चारो ओर कलें चलने लगीं और किरासन तेल इतना अधिक बाहर से चालान आने लगा

---

* अब भी छपरा, मोतिहारी, मुजफ्फरपुर, पूर्णिया, मानभूम, पुरी आदि जिलों में थोड़ा या बहुत कपड़ा बुनने का काम होता है। सम्भलपुर में रेशमी और भागलपुर में तसरी कपड़े अच्छे बनते हैं।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

कि तेलियों का दिवाला पिट गया। * कल द्वारा आटा पीसने और तेल पेरने से कितने लोगों को आलसी और निकम्मा होना पड़ा, इसका अटकल लगाना असम्भव है। इतने पर भी बेचारे जुलाहे और तेली धीरे २ अपना रोज़-गार किसी २ तरह चला ही रहे हैं। किन्तु कलि की कलें उन्हें कुछ करने दें तब तो!

सरकार की ओर से जेलों (कारागारों) में असामियों (बँधुओं) द्वारा अनेक ऐसे कार्य्य सम्पन्न कराये जाते हैं जिनसे व्यवसाय की बहुत कुछ रक्षा होती है। हरएक ज़िला-जेल और सेण्ट्रल जेल में दरी, क़ालीन, नेवार, टाट आदि अनेक चीजें बुनी जाती हैं। जेल का तेल भी निछका और स्वादिष्ट होता है। गेहूँ पीसने की चक्कियाँ भी वहाँ चलती हैं और जीन तथा मोटिया कपड़ा वगैरह भी तैयार कराया जाता है। हजारीबाग के रिफ़ारमेट्री स्कूल में, भागलपुर, गया, बक्सर, मुज़फ्फ़रपुर, राँची, कटक आदि के जेलों में ऐसे २ अनेक अच्छे काम होते हैं जो व्यवसाय की दृष्टि से बड़े महत्त्व के हैं। उदाहरणार्थ—पूर्णिया के जेल में दरी और नेवार की बिनाई खूब ही अच्छी होती है तथा राँची के जेल में चटाई और नेवार बढ़ियाँ बीना जाता है।

साधारणतः कितने ज़िलों में भिन्न २ चीज़ों के व्यवसाय में प्रधानता है। जैसे—अंगुल ज़िले में चटाई और टोकरी बनाना तथा पूर्णिया में चटाई बिनना इत्यादि। गया में पत्थर

* सोन की नहरों में ठौर २ पनचक्कियाँ हैं जिनमें गेहूँ का मैदा तैयार होता है।

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

के वर्त्तन, पत्थर की मूर्त्तियाँ आदि अच्छी बनती हैं। पुरी में भी पाषाण-मूर्त्तियाँ बनती हैं। पटने के मारूगंज घाट पर पत्थर की गढ़ाई का काम होता है। हजारीबाग़ और मुँगेर ज़िलों में कम्बल बिनना और पलामू में कम्बल, टाट धुन कर दिन काटना इत्यादि। मानभूमि में लाह एकत्र करना, तसर का सूत बनाना और ज़िले में तसर के कीड़े पालना और घी बेंचना इत्यादि। मोतिहारी में शोरा बनाना, बाढ़ में बेला चमेली का तेल बनाना और कटक में घड़ी और खिलौने आदि बनाना। छपरा, पूर्णियाँ, पलामू और शाहाबाद आदि ज़िलों में पशुपालन का व्यवसाय भी होता है। उड़ीसा के बैंएड स्टेट में सुनारी का काम खूब होता है और नरसिंहपुर तथा खण्डपाड़ा राज्यों में पीतल आदि के वर्त्तन बनाये जाते हैं।

दिहाती-तिजारत।

(लेन देन और हाट-बाज़ार)

छोटे छोटे गाँवों में एक आध छोटी-मोटी दूकानें रहती हैं जिन में बेचारे गृहस्थों को रोज़ खर्च होनेवाली ज़रूरी चीज़ें मिलती हैं। किन्तु कितने ऐसे गाँव हैं जिनमें ऐसी दूकानें भी नहीं हैं। ऐसे गये बीते गाँवों के लोग एक कोस अथवा दो, तीन, चार, पाँच कोस तक के बड़े २ गाँवों में हाट-बाज़ार करने चले जाते हैं और एक सप्ताह भर के लिये ज़रूरी २ चीज़ें ख़रीद लाते हैं। ऐसे बड़े २ गाँव दो तीन या चार पाँच कोस के घेरे में केवल एक ही या दो पाये जाते हैं, जहाँ सप्ताह में एक बार अथवा दो बार बाज़ार लगता है।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

बाज़ार भी दो तरह के हैं। एक तो स्थायी और दूसरे तात्कालिक। स्थायी बाज़ारों की जमघट सदा जमी रहती है, केवल किसी निश्चित दिन पर बाहरी गाहक जुटते हैं। किन्तु तात्कालिक बाज़ार के जितने दूकानदार होते हैं, सब के सब, स्थायी बाज़ार के दूकानदारों से चीज़ ख़रीद लाते हैं और अपने मिहनताना का कुछ नफ़ा उन बिकनेवाली चीज़ों पर रख कर बेंचते हैं। जिस जगह पर यह बाज़ार लगता है वहाँ एक आध फूस-फास की मँडई रहती है अथवा घने बाग़ में या खुले मैदान में ही यह हाट लग जाती है। सन्ध्या समय सौदागर और गाहक दो घंटे के लिये निश्चित दिन पर एकत्र हो जाते हैं। चिराग़-बत्ती का बेला होते ही बाज़ार उठा कर सब लोग अपने २ घर की राह लेते हैं।

हरएक ज़िले में दो चार दस ऐसे छोटे-बड़े मेले भी साल में एक दो बार हो जाया करते हैं और होते ही हैं जहाँ से समूचे ज़िले भर के लोग घोड़े, बैल, गाय, भैंस, पालकी, दरी, क़ालीन, बरतन, कपड़े, सन्दूक, बाजे, जूते, मसाले, खिलौने, छाते, पुस्तकें और भाँति भाँति की आवश्यक वस्तुयें ख़रीद ले जाते हैं। ऐसे २ मेले पर्व-त्यौहार के महोत्सवों के उपलक्ष्य में हुआ करते हैं। इन मेलों के धरम-धक्के में अन्धपरम्परा की लकीर पीटने वाले हिन्दू आवाल-वृद्ध नर-नारी सहित एकत्र होकर भयंकर कोलाहल मचा डालते हैं।

धनिक महाजन लोग गृहस्थों को कड़े सूद पर रुपये देते हैं। इस प्रदेश के सभी गृहस्थ ऋण-ग्रस्त अतएव अशान्त और दुःखी हैं। यहाँ के लहनदार बड़े निर्दयी और लोभी हैं। साल भर में मूर और सूद का हिसाब एक बार होता है। ऋणभार से दबे हुए गृहस्थों को मोटेमल्ल महाजन खूब

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

चूस लेते हैं। बेचारे किसान लोग हड़तोड़ मिहनत करके अन्न उपजाते है। दूकानदार महाजन लोग उन खेतिहरों को सालभर तक कपड़ा, नमक, तेल, मसाला और अन्यान्य आवश्यक पदार्थ देते हैं पर सब का बदला चैती और अगहनी खेती कटने पर दाम २ वसूल कर लेते हैं। देते समय तो वे लोभ और स्वार्थ से अंधे रहते हैं पर लेने की वेर क्रूरता के मारे पागल हो जाते हैं।

हरएक ज़िले में कितनी ऐसी मुख्य २ जगहें हैं जहाँ भिन्न २ वस्तुओं का व्यापार हुआ करता है। ऐसी २ जगहों में बड़े बड़े गोले और गुदाम बने हुए हैं। वहाँ से थोक के थोक माल की बिक्री होती है। ऐसी २ आढ़तें जहाँ जहाँ हैं वहाँ २ कच्ची या पक्की सड़कें किसी पास के स्टेशन से लगातार मिली हुई हैं।

[नगरवर्णन-शीर्षक में हर एक ज़िले के सबडिवीजनों और प्रसिद्ध स्थानों का विवरण देखिये। व्यवसाय-शीर्षक का अन्त होते २ तक ऐसी २ जगहों की चर्चा छिड़ी है, जहाँ २ भिन्न २ भाँति के व्यापार होते हैं। इन दोनों स्थानों में ऐसी जगहों के नाम, जो बहुत प्रसिद्ध, प्रधान और प्रचलित हैं, अवश्य मिलेंगे।]

यात्रा-पथ।

विहार-पति, पठान-वीर शेरशाह की बनवाई हुई पक्की सड़क, जो बङ्गाल से पञ्जाब तक लम्बी है, दक्षिण-विहार के दक्षिणी खण्ड से होती हुई गई है। डिहरीघाट में खूब पुख़्ते पुल पर से पार करती हुई और गया तथा सहसराम आदि प्रसिद्ध नगरों को छूती जाती है। इसका नाम ग्रैण्ड-ट्रङ्करोड है। १५४०-४५ में इसका निर्माण हुआ था।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

रेलवे लाइनों का विवरण।

(१) बङ्गाल-नागपुर रेलवे—८३३
(२) बङ्गाल और उत्तर-पश्चिमीय—६२८
(३) पूर्वीय बङ्गाल रेलवे—१७०
(४) इष्ट-इण्डियन रेलवे*—१०४०

} १६२९ में इन लाइनों की लम्बाई इतनी ही थी।

लाइट रेलवे (छोटी लाइनों) का विवरण।

(१) आरा—सहसराम—६० मील (शाहाबाद ज़िले में है)
(२) बख़्तियारपुर—बिहार—३३ मील (पटने ज़िले में है)
(३) डिहरी—रोहतास—२४ मील (शाहाबाद ज़िले में है)

उपर्युक्त पहली, दूसरी और तीसरी छोटी लाइनें दक्षिण-बिहार में ही पड़ती हैं।

आसनसोल के पास से ग्रैण्डकौर्ड लाइन फूट निकली है। यह मोगलसराय में जाकर ई० आई० आर० के कौर्ड लाइन में मिलती है। डिहरीघाट के जगत्प्रसिद्ध 'सोन-ब्रूज' (सोन-पुल) द्वारा यह सोनभद्र पार करती है। गया और सहसराम नामक प्रसिद्ध एवं पुराने बिहारी नगर इसके किनारे पड़ते हैं यह लाइन भी दक्षिण-बिहार के दक्षिण खंड में है। †

---

* ई० आई० आर० की मुख्य लाइनें—लूप लाइन, कौर्ड लाइन ग्रैण्डकौर्ड, साउथ-बिहार लाइन, बाउन डालटनगंज ब्रांच, पटना-गया ब्रांच, गया-कतरास ब्रांच।

† राजमहल, साहगंज, भागलपुर, मुँगेर, कीउल, पटना, आरा, बक्सर, गया, ससराम, देवघर, डालटनगंज आदि शहरों को कौर्ड और ग्रैण्ड कौर्ड लाइनें मिलाती हैं।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

वर्द्धवान के पास खानार स्टेशन से ई० आई० आर० को कौर्ड-लाइन निकली है। यह मुँगेर तक लूप लाइन कही जाती है। राजमहल, साहबगंज, पीरपैंती; कहलगाँव (कलगङ्ग,) भागलपुर, नाथनगर, सुल्तानगंज, जमालपुर, मुँगेर आदि बिहार के प्रसिद्ध स्थान इस लाइन के किनारे पड़ते हैं। साहबगंज और जमालपुर जकशन स्टेशन और बड़े प्रसिद्ध स्थान हैं। मुँगेर घाट से स्टीमर द्वारा गंगा पार करके बी० एन० डबलू रेलवे मिलती है। यही लूपलाइन मुँगेर ज़िले के लक्खीसराय जंकशन से आगे-पश्चिम की ओर बढ़ती है। इसे अब कौर्ड लाइन कहने लगते हैं। इसी कौर्ड लाइन पर मधुपुर जंकशन है, जहाँ से गिरिडिह ब्राञ्च फूटती है और इसी में से वैद्यनाथ जंकशन से देवघर तक लाइन गई है। मोकामा और बख़तियारपुर तथा पटना और आरा जंकशन इसी कौर्ड लाइन पर पड़ते हैं। मोकामा घाट से ष्टीमर द्वारा गंगा पार कर के सेमरिया घाट में बी० एन० डब्लू० रेलवे मिलती है। बखतियारपुर से राजगिरि के लिये छोटी गाड़ी जाती है। पटने से गया तक ई० आई० आर की शाखा-लाइन फूट कर पुनपुन नामक मशहूर नदी पार करती हुई गई है। पटने से दीघा घाट तक गंगा तट पर ई० आई० आर० की शाखा निकल कर गई है। दीघा से ष्टीमर द्वारा गंगा-पार करके पहलेजा घाट में पहुँचने पर बी० एन० डब्लू० रेलवे मिलती है। पटने से पूर्व में कौर्ड लाइन पर गुलजार बाग (पटना-सिटी), फतुवा, खुशरूपुर, बाढ़, लक्खीसराय, किउल जंकशन, * जमुई, गिद्धौर और वैद्यनाथ आदि प्रसिद्ध

* लूप लाइन भागलपुर होते हुए किउल में कौर्ड लाइन को मिलाती है।

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

स्टेशन हैं। ये विहारान्तर्गत प्रसिद्ध स्थान भी हैं। पटने से पच्छिम दानापुर बहुत बड़ा स्टेशन है। उसके बाद नेवरा स्टेशन छोटा होने पर भी विहार भर में प्रसिद्ध स्थान है क्योंकि पाश्चात्य-विद्या का एक छोटा-मोटा पर गौरवपूर्ण आदर्श लीलाक्षेत्र है। फिर आगे पच्छिम में बिहटा, कोइलवर, * कुलहरिया, आरा, कारीसाथ, बिहिया † रघुनाथपुर डुमराँव, बक्सर और चौसा ‡ आदि प्रसिद्ध स्थान इसी लाइन पर पड़ते हैं। राजमहल से चौसा तक, गंगा की दक्षिण-तटस्थ तराइयों की दक्षिणी सीमा बाँधती हुई, यह लाइन दक्षिण-विहार में बिछी हुई है। किन्तु दक्षिण-विहार की दक्षिणी सीमा की ओर उक्त ग्रैण्ड कौर्ड लाइन है जिसके किनारे धनबाद, झरिया का कुसुण्डा जंकशन, मामा (निमिया) घाट, पारसनाथ, हजारी बाग रोड, मानपुर, गया, रफीगंज, डिहरी घाट, नवीनगर रोड, गढ़वारोड, पलामू, सहसराम, कुदरा, भभुआरोड, आदि मशहूर स्टेशन पड़ते हैं।

---

* इसी जगह बाबू शालिग्राम सिंह वकील हाईकोर्ट कलकत्ता का जन्म-स्थान है जिन्होंने पटना के विहार नेशनल कालेज का जन्म कराया था। उनकी वह कीर्ति अब तक अच्छी दशा में है।

† किम्वदन्ती है कि यहाँ की बस्ती में हैहयवंशी राजाओं का गढ़ था। इस ष्टेशन के पास जंगल के चिह्न बहुत हैं। इस स्थान के चारो ओर की बहुदूर विस्तृत बालुका-मयी भूमि को, जो बड़ी उर्वरा है, देख कर लोग प्राचीनकालीन शोण का प्रवाह-क्षेत्र अनुमान करते हैं। यहाँ ष्टेशन के पास एक तेजोमयी महन्ती सती का मन्दिर है।

‡ इसी स्थान पर हुमायूँ और शेरशाह से युद्ध छिड़ा था।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

बङ्गाल-नागपुर और बङ्गाल-नार्थ-वेष्टर्न-रेलवे लाइनों का प्रचार तिर्हुत (उत्तर विहार) में, गंगा के उत्तरी तट की उर्वरा तराइयों में, विशेष-रूप से है। छपरा, मुजफ्फरपुर और दर्भङ्गा आदि नगर इन्हीं लाइनों के जाल में फँसे हुए हैं। तिर्हुत के निम्नलिखित नगर और प्रसिद्ध स्थान इन लाइनों के किनारे पड़ते हैं।

(क) बी० एन० रेलवे (बंगाल-नागपुर)।

राँची, मानभूम, हजारीबाग रोड, सिंहभूम (चाईबासा) और डालटनगंज, इत्यादि।

(ख) बी० एन० डब्ल्यू० रेलवे (बंगाल-नार्थ-वेष्टर्न)।

यह लाइन पुर्णिया, बेगूसराय, समस्तीपुर, मोतिहारी, दर्भङ्गा, सीतामढ़ी, बेतिया, हाजीपुर, छपरा, सिवान, गोपाल-गंज आदि नगरों को मिलाती है।

छोटा नागपुर में बङ्गाल-नागपुर रेलवे का प्रसार है। राँची नामक प्रसिद्ध नगर इसी के किनारे पड़ता है। छोटा नागपुर विभाग में जंगल-झाड़ के कारण रेल की सुविधा सब जगह तो नहीं है पर सड़कों की उतनी कमी नहीं है। अतः गाड़ी-ताँगों पर सफ़र होती है।

हवड़े से मद्रास की ओर जाने वाली रेलवे-लाइन उड़ीसा के उपकूल-भागस्थ तीन प्रसिद्ध सरकारी ज़िलों को छूती हुई जाती है। और और जगहों में सड़कें हैं पर कच्ची, बहुत और पक्की कम। जंगली प्रान्तों में गाड़ी-छकड़े की राहें कठिनाई से प्राप्त होती हैं। देशी रयासतों में खूब अच्छी सड़कें हैं। कहीं २ कुछ दूर तक पक्की भी सड़कें मिलती हैं।

(१) कटक, अंगुल, सम्बलपुर सड़क (१७१ मील)

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

(२) कटक, सोनपुर (राज्य) (२०५ मील)

(३) सम्बलपुर, पटना, कालाहंडी (राज्य) सड़क (वाणिज्य व्यापार के कारण प्रसिद्ध) इत्यादि इत्यादि।

उड़ीसा में नहरों द्वारा जल-यात्रा करने में अच्छी सुविधायें हैं। उड़ीसा के उपकूल भाग में जो नहरें हैं, उनमें खूब किश्तियाँ चलती हैं। किन्तु उत्तर-विहार में जल-यात्रा का आनन्द गण्डक और सरयू आदि नदियों से ही प्राप्त होता है। दक्षिण-विहार में तिर्हुत की तरह गंगा से ही जल-यात्रा का आनन्द मिल सकता है। दूसरी ऐसी कोई नदी नहीं जिसमें किश्तियों का बेखटके निर्वाह हो सके *। परन्तु सोन की नहरों में खूब किश्तियाँ चलती हैं। बड़ी २ चौड़ी २ नहरों में किश्तियों के सिवा ष्टीमरें (बोट) भी चलती हैं। ठौर २ पर गंगा जी में भी कम्पनियों की छोटी मोटी जहाजें चलती हैं, जैसे बक्सर, पटना, मुकामा तथा मुंगेर आदि में।

दीघाघाट, मुकामाघाट, मुँगेरघाट, बरारीघाट, साहबगंज घाट से ष्टीमर द्वारा बी२ एन० डब्लू के यात्री ई० आई० आर० पर आते हैं।

विहार भर में चारो ओर कच्ची पक्की सड़कों का प्रबन्ध सराहनीय है। सभी नगर और मुख्य २ स्थान पक्की सड़कों एक से एक नथे हुए हैं। उन पर इक्के, बग्घी और बैल और ऊँट द्वारा गाड़ियाँ खूब चलती हैं।

---

* गंगा, घाघरा, गण्डक, कोसी, महानन्दा, महानदी, ब्रह्माणी और वैतरणी में बराबर बोट चल सकती है।

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

शासन-व्यवस्था ।

विहार-उड़ीसा और छोटानागपुर एक प्रदेश बन कर छोटे लाट (लफ़्टिनेण्ट गवर्नर) द्वारा शासित होते हैं। ये छोटे लाट महाशय, जिनका सर्वतोभावेन शासनाधिकार इस प्रदेश पर रहता है; इण्डियन-सिविल-सर्विस के मेम्बर होते हैं; जो पहले बहुत दिनों तक भारत के किसी प्रान्त में शासक रूप से रह चुके हैं। छोटे लाट के शासनकाल की अवधि पाँच ही वर्ष पर्यन्त निर्धारित रहती है। इनकी कौंसिल में चार मेम्बर होते हैं, जिनमें दो तो ऐसे होते हैं, जो भारत में बारह वर्ष तक सरकारी नौकरी कर चुके हैं—अर्थात् इण्डियन-सिविल-सर्विस के दो अँग्रेज। और, बाक़ी दो ग़ैर-सरकारी आदमी—प्रतिभा और प्रभुताशाली प्रतिष्ठित भारतीय भद्रपुरुष रहते हैं।

प्रादेशिक कौंसिल में ४३ सरकारी और गैरसरकारी दोनों तरह के सदस्य रहते हैं। प्रादेशिक नियमों का संशोधन करने के लिये एक व्यवस्थापिका सभा भी बनी हुई है।

विहार-सरकार की राजधानी पटना और ग्रीष्मावास राँची है। राँची में हरे भरे घने २ जंगलों की बड़ी अधिकता है। पटने में प्रधान प्रधान सरकारी ऑफिसों (कचहरियों) की बड़ी २ इमारतें बनी हैं। शासन-व्यवस्था में सुगमता होने के लिये अनेक विभाग भी बनाये गये हैं। सेक्रेट्रिएट द्वारा शासन-प्रणाली के आवश्यक प्रवन्ध होते हैं। पुलिस-विभाग द्वारा राजकीय सत्ता और प्रजावर्ग के स्वत्व की रक्षा होती है।

नोट—मेम्बर=सदस्य। कौंसिल=विचार-परिषद्। गैरसरकारी=जो सरकारी नौकरी की मातहती में नहीं हैं।

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

शिक्षाविभाग द्वारा चारों* ओर शिक्षा के प्रचार करने का प्रबन्ध होता है। कृषिविभाग द्वारा कृषि का सुधार किया जाता है। जेल, अस्पताल आदि का विभाग भी बड़े महत्त्व का है। दण्डात अपराधियों की स्वास्थ्यरक्षा पर सरकार का विशेष ध्यान रहता है। विना मूल्य औषधिशाला से सर्वसाधारण को दवा बाँटी जाती है। चिकित्सालय से ग़रीब दुखियों को अचिन्तनीय लाभ हो रहा है। पशुओं की चिकित्सा का भी प्रबन्ध उतना ही अच्छा है जितना पुरुष और स्त्रियों की चिकित्सा का। आबकारी विभाग खोल कर नशीली चीजों के उपासकों का उपकार (?) किया जाता है। जंगल-विभाग खोल कर जंगलों की रक्षा की जाती है।

विहारोत्कल में २१ ज़िले हैं। उनकी औसत विहार में ८४० वर्गमील और उड़ीसा में ३६६१ वर्गमील पड़ती है। राँची और हजारीबाग़ सभी ज़िलों में बहुत बड़े हैं। प्रत्येक में लगभग ७००० वर्गमील भूमि है। छो० ना० के सब और विहारोत्कल के सन्ताल परगना और अंगुल नामक ज़िलों की शासन-प्रणाली अन्यान्य ज़िलों से अत्यन्त सामान्य है। क्योंकि वे असंस्कृत† ज़िले हैं। सभी क़ानून की धारायें वहाँ जारी

* विहार-उड़ीसा-छोटानागपुर में हाई इंगलिश स्कूल हैं, जिनमें मैट्रिकुलेशन तक पढ़ाई जारी है। किन्तु कौलेजों की संख्या बहुत ही कम है। दर्भंगा जिले के पूसा नामक प्रसिद्ध स्थान में कृषिविद्यालय विद्यमान है। इञ्जीनियरिङ्ग कौलेज और लौ कौलेज तथा मेडिकल कौलेज पटने में है।

† तात्पर्य्य यह कि उन जिलों की प्रजायें अशिक्षित असभ्य और

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

नहीं की गई हैं। वहाँ के निवासी शिक्षा और सभ्यता की घुड़दौड़ में अभीतक बहुत ही पीछे पड़े हुए हैं। बेतरह पिछड़ने से ही वे असंस्कृत ज़िलों के निवासी कहलाते हैं।

शासन की सुविधा के लिये दो तीन वा चार पाँच ज़िलों के एक में मिला कर एक कमिश्नरी की रचना की गई है। इसके शासक एक कमिश्नर नियुक्त हैं। उसी प्रकार कई सब-डिवीज़नों को मिला कर एक ज़िला बना हैं, जो कलक्टर (मण्डलाधीश) के अधीन में रक्खा गया है। हर एक सब डिवीज़न में एक २ अफ़सर रहते हैं, जो एक प्रकार से छोटे कलक्टर ही हैं। ज़िले के हेडक्वार्टर में जिस तरह अदालत दीवानी जज के अधीन रहती है, वैसे ही सबडिवीजनों में भी एक २ मुन्सिफ़ अपनी छोटी २ अदालत लेकर विचार करने के लिये रक्खे गये हैं।

सबडिवीज़नों की औसत विहार और उड़ीसे में ११२० वर्गमील के हिसाब से है। एक सबडिवीजन में कई थाने रहते हैं। विहारोत्कल में थानों का हल्का (इलाका) १५२ वर्गमील रहता है, जिसमें लगभग ७२००० प्रजायें निवास करती हैं।

प्रत्येक छोटे-बड़े नगर में म्युनिसिपैलिटियाँ बनी हुई हैं। इनका काम शहर की सफ़ाई की देख-रेख करना है। शहर में रोशनी का प्रबन्ध करना और सड़कों पर पानी छिड़कवाना, हर तरह की गन्दगी को दूर करना और शहर के मकानों का देख-भाल करना इत्यादि इसके अनेक कार्य्य हैं।

प्रत्येक ज़िले में एक २ ज़िला-बोर्ड है। सड़क और पुल

कूपमण्डूक के समान हैं। वे अभी अँखफोर नहीं हुई हैं। अतः उनमें नयी सभ्यता की झलक कम है।

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

आदि बनवाना, पानी की कलें बनवाना, जलवायु का सुधार करने की चेष्टा करना, प्रजाओं की स्वास्थ्यरक्षा का प्रबन्ध करना, पाठशालायें खोलना, सार्वजनिक संस्थाओं की सहायता करना, चिकित्सालय के कार्य्यों का निरीक्षण करना आदि इस विभाग के मुख्य २ कार्य्य हैं।

जिस प्रकार म्युनिस्पल कमिश्नरों द्वारा म्युनिस्पैलिटियों की कार्य्यवाही सम्पन्न होती है उसी प्रकार ज़िला-बोर्ड में भी सरकारी और गैरसरकारी, दोनों तरह के सदस्य, सर्वसम्मत से चुने हुए रहते हैं।

इसी प्रकार अनेक छोटे-बड़े विभागों की सृष्टि करके शासन की सुविधायें बढ़ायी गई हैं। प्रजा-वर्ग से कर वसूल करना और उन पर कर स्थापित करना भिन्न २ विभागों की जिम्मेवारी पर है।

"राजधानी" [पाटलिपुत्र]।

(पटना-नगर)

"*प्राचीनता*"—* भारत के इतिहासावलोकन से ज्ञात होता है कि अज्ञातशत्रु ने नगाधिराज हिमालय की ओर से आई हुई तुरानी जाति को जीतने के लिये अपनी राजधानी पाटलिपुत्र में स्थापित की थी। जिस नन्दवंश के अन्तिम राजा के समय में जगद्विख्यात सिकन्दर ने भारतवर्ष पर चढ़ाई की थी उस नन्दवंश के राजाओं की भी राजधानी पाटलिपुत्र ही में थी। जिस मौर्य्यवंश का संस्थापक वीरवर और राजनीतिज्ञ शिरोमणि चंद्रगुप्त था उसके राजाओं की राजधानी भी इसी पटने में थी।"

* सरस्वती, नवम्बर १९१७ से उद्धृत।

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

* "जिस समय सिल्यूकस ने पराजित हो मगधराज की सभा में एक दूत भेजा था, उस समय भी पाटलिपुत्र समग्र भारत की राजधानी था। इसी पाटलिपुत्र को देख मेगेस्थेनीज आश्चर्य्य-चित्त से इसकी शोभा समृद्धि का सविस्तार † वर्णन लिख गया है सम्राट् अशोक की मृत्यु के बाद जिस समय धीरे २ प्रान्तीय प्रदेश मौर्य्य राजाओं के हाथ से निकलने लगे थे, उस समय भी भारतवासी पाटलिपुत्र को ही राजधानी समझते थे। सनातनधर्म के घोर दुर्दिन के समय जब पुष्पमित्र ने अपना पराक्रम दिखाने के मिस अंतिम मौर्य-श्रेष्ठ बृहद्रथ को मारा था, तब भी यह पाटलिपुत्र ही राजधानी था। छाया की भाँति धीरे २ अनार्य-वंशोत्पन्न अन्ध्रराज के भृत्यों ने जिस समय आर्य्यावर्त की ओर अधिकार बढ़ाया था, उस समय भी यह पा० पु० राजधानी के

---

* पाटलिपुत्र के विशेषांक से उद्धृत।

† उस (चं० गु०) की राजधानी पाटलिपुत्र (पटना) थी। वह दस मील लम्बी और दो मील चौड़ी थी, और गंगा तथा सोन नदियों के बीच में बसी हुई थी। नगर के चारों तरफ कोट बना हुआ था, जिसमें ६४ दरवाजे थे। कोट में ५७० शिखर थे।... राजभवन में अधिकांश काम लकड़ी का था; परन्तु वह था इतना सुन्दर और चमत्कारपूर्ण कि उसकी तुलना संसार के और किसी भवन से न हो सकता था।......सजावट में सुवर्ण और अमूल्य रत्नों की प्रचुरता थी। राजमहल मे जितने बरतन थे, सब रत्नजटित और सुवर्ण के थे।

(मेगास्थनिज़) "सरस्वती, जून १९१७।"

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

नाम से विख्यात था। इसी पाटलिपुत्र से विजय-सेना लेकर महाराजाधिराज समुद्रगुप्त ने उत्तरापथ और दक्षिणापथ की विजय की थी। इसी पा० पु० में उनका अश्वमेध यज्ञ सुसम्पादित हुआ था। गुप्त साम्राज्य की स्थिति के साथ २ ही चञ्चला लक्ष्मी देवी की भी इस पा० पु० में फिर से वृद्धि होने लगी। पा० पु० सारे भा० वर्ष का राजधानी हुआ। जिस समय सारा आर्य्यावर्त्त हूणराज के करतलगत था, उस समय भी पाटलिपुत्र मगध की राजधानी था। समुद्रगुप्त के वंशधर गण उस समय भी इस पा० पु० में ही निवास कर राज्य शासन करते थे। किन्तु इसके बाद ही लक्ष्मी ने पा० पु० को फिर त्यागा। जिस समय शेरशाह ने नवीन साम्राज्य प्रतिष्ठित किया, उस समय दलदल-भूमि-वेष्टित, अलङ्घ्य, दुर्जेय और प्राचीन पाटलिपुत्र के किले की बनावट ने उसको विस्मित कर दिया था। (उसी समय अपभ्रंश होकर पाटलिपुत्र का नाम पटना हो गया) पा० पु० फिर मगध वा विहार की राजधानी हुआ। शेरशाह का राजत्वकाल समाप्त हो जाने पर भी मगध की राजधानी पटने से स्थानान्तरित न हुई। अकबर के समय में भी पटना सूबे-विहार की राजधानी था। औरंगजेब के समय पटने का

※ सम्भव है वह किला अब गंगा-गर्भ का गौरव बढ़ा रहा हो। "इतिहासज्ञ स्मिथ साहब ने लिखा है कि अजात शत्रु ने पाटलिग्राम में गंगातट पर एक किला बनवाया था। लिच्छवि शत्रुओं का दमन करने के लिये, उसके पौत्र उदय ने उसके दुर्ग के पास ही एक शहर बसाया था।

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

नाम अजीमाबाद हो गया था, और कहाँ तक कहें, यहाँ ही नव्वाब मीर कासिम की नवाबी भी खतम हुई थी।"

* "यह तो एक प्रकार से सर्ववादि सम्मत है कि, अजातशत्रु के समय नगर का भित्ति-स्थापन हुआ, उदय के समय नगर-निर्माण हुआ, चन्द्रगुप्त के समय समृद्धि-वृद्धि हुई और अशोक के समय यह उन्नति के शिखर पर पहुँच गया था। फ़ाहियान ने पाटलिपुत्र का संक्षिप्त वर्णन किया है। हुयङ्ग-सङ्ग का वर्णन भी अत्यंत चित्ताकर्षक है †।"

पाटलिपुत्र की प्राचीनता के विषय में एक प्रत्नतत्त्ववागीश ‡ ने लिखा है कि " वायुपुराण में भविष्यराजवंशवर्णन के प्रसंग में कहा गया है, 'क्षेमवर्म्मा के राज्य के बाद पचीस वर्ष तक राजा अजातशत्रु का राज्य रहेगा। पश्चात् राजा बिम्बिसार २८ वर्ष, राजा दर्शक २५ और राजा उदायी ३३ वर्ष तक राज्य करेगा। यही उदायी कुसुमपुर प्रसिद्ध नगर

* पाटलिपुत्र के विशेषांक से उद्धृत।

† पाटलिपुत्र इस समय भी बहुत फूला-फला नगर है। इसके चारों तरफ और भी बड़े २ नगर हैं। उनमें बड़े दानी और परोपकारी मनुष्य रहते हैं। यहाँ दो विशाल विहार हैं, जिनमें छ सात सौ विद्वान साधु रहते हैं। उनके पास दूर २ के धार्मिक मनुष्य आया करते हैं। बौद्धमत के उत्सव खूब धूम-धाम से होते हैं। इस समय का राज्य-शासन धर्म-प्रमाणित और नीति-संयुक्त है। नगरों में न क़साइयों की दूकानें दिखाई देतीं हैं और न शराबखाने नजर आते हैं। सरस्वती, अगस्त १९१७।

‡ विहारोत्कल-पुरातत्त्व-शोधन-विभाग के सहकारी संयोजक।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

बसायेगा। यह गंगा के दक्षिण तट पर प्रतिष्ठित होगा।' भविष्य पुराण के ब्रह्मखण्ड में पा० पु० की नामोत्पत्ति के सम्बन्ध में लिखा है—'अङ्गभूमि के निकट गंगा के दक्षिण भाग में पा० पु० नामक एक परमसुन्दर नगर है। गाधिराजा की पाटलि नाम की सुलक्षणा और विदुषी सुन्दरी कन्या को कौण्डिन्यकुमार ने जावालि मुनि से आकर्षण-सिद्धमंत्र सीख कर, च्यवनऋषि के आज्ञानुसार अपना वेष बदल कर, राज-भवन से, मंत्रबल द्वारा, हरण किया था। दोनों आकाशमार्ग से उड़ते हुए गंगातटस्थ सघन वन में उतर पड़े। पाटलि की प्रार्थना से मुनिनन्दन ने मंत्रबल से एक नगर बसाया। राज-कुमारी पाटलि और मुनिपुत्र के नामानुसार यह नगर पाटलि पुत्र नाम से प्रसिद्ध हुआ'।" अब इससे बढ़कर पाटलिपुत्र की प्राचीनता के पुष्ट प्रमाण उपलब्ध नहीं है। यह स्पष्ट है कि अपनी प्राचीन महत्ता के बल से यह नगर भारत के प्राचीन-तम नगरों की टक्कर ले सकता है, बल्कि ईरान और यूनान के पुराने नगरों की श्रेणी में इसे उच्च पद मिलना चाहिये।

आधुनिक पटना-नगर—कलकत्ते से ३२० मील पर वायु-कोण में गंगा के दक्षिण पार्श्व में किनारे ही किनारे लगभग दस बारह मील में पटना-शहर बसा हुआ है। इसकी बस्ती बहुत लम्बी और पुरानी है। चौड़ाई बहुत ही कम है। कहीं कहीं तो एक आध मील से भी कम। यह नगर कई बार भयानक लूटपाट, अमानुषिक अत्याचार, विकट आक्रमण और भीषण हत्याकाण्ड का लोमहर्षण दृश्य देख * चुका है।

* बौद्धों के 'महापरिनिर्वाणसूक्त' नामक पाली ग्रंथ पढ़ने से जाना जाता है कि भगवान बुद्ध अन्तिम वार नालन्दा से वैशाली पुरी जाते

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

इस नगर का पच्छिमी हिस्सा बाँकीपुर नाम से प्रसिद्ध रह चुका है। बाँकीपुर में सरकारी कचहरियाँ, कौलेज, स्कूल, बैंक, गिरिजाघर, पुस्तकालय, रमना (मैदान), अस्पताल, डाकखाना, छापाखाना, बड़े २ बाबुओं के बँगले, वकील-बारिष्टरों की कोठियाँ, पुस्तकों की बड़ी २ दूकानें दवाख़ाने और अनेक प्रकार की आवश्यक वस्तुओं की बहुत बड़ी २ दूकानें हैं। बाँकीपुर से कुछ पच्छिम गंगा-तट और रेलवे लाइन के बीच में लगभग हज़ारों बीघे के सुविस्तृत मैदान में हाईकोर्ट (प्रधान न्यायालय), लाट साहब की कोठी और सेक्रेट्रिएट आदि की कई भड़कीली और अतीव सुन्दर बहुमूल्य इमारतें बनी हैं। पटने की पुरानी इमारतों से तो शहर की शोभा हुई है पर हाल ही में मिथिलेश्वर महाराजा बहादुर दर्भङ्गा ने जो गंगातट पर भव्य राजप्रासाद बनवाया है सो इतना अच्छा उतरा है कि गंगा के स्फटिक-स्वच्छ जल-दर्पण में उसकी अनूठी सुन्दरता प्रतिफलित हो कर दर्शकों को निस्सन्देह मुग्ध करती है।



समय पाटली ग्राम में आये थे। यहाँ रहने वालों ने एक विश्रामागार बनवाया था। उसमें ठहरने के समय बुद्धदेव ने कहा था कि यह गाँव बहुत लोगों से परिपूर्ण एक नगर हो जायगा और यह स्थान अग्नि, जल और विश्वासघातकता का आघात भी सहन करेगा।

(पा० पु० विशे०)

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

१ विहार।

दक्षिण-विहार—मगध और अङ्ग।

नगरों का वर्णन।

विहारोत्कल प्रदेश में सैकड़े ६७ मनुष्य गाँवों (दिहातों) में रहते हैं। प्रान्त भर में केवल ७६ नगर हैं, जिनमें पटना—जहाँ की जन-संख्या लगभग एक लाख है—गया, भागलपुर, दर्भङ्गा और कटक—जिनकी नागरिकसंख्या लगभग ५०००० है—तथा राँची, मुजफ्फ़रपुर, मुँगेर, छपरा, आरा आदि प्रधान एवं प्रसिद्ध नगर हैं।

मगध अब पटना कमिश्नरी भर में फैला हुआ है जिसमें पटना, गया और शाहाबाद नाम के तीन ज़िले हैं। प्राचीन अंग राज्य भागलपुर कमिश्नरी में है, जिसमें मुँगेर, भागलपुर पूर्णिया और सन्तालपरगना नाम के चार ज़िले हैं।

ये दो कमिश्नरियाँ दक्षिण-विहार में हैं। पटना कमिश्नरी भागलपुर कमिश्नरी से यद्यपि छोटी है तथापि इसका महत्त्व कहीं उससे चढ़ बढ़ कर है। प्राचीनता अथच ऐतिहासिक दृष्टि से भागलपुर डिवीजन भी गौरवमय है सही पर पटना डिवीजन का नंबर उससे बहुत ऊँचा और अधिक सम्मान्य है।

पटना ही इस समय विहार, उड़ीसा और छोटा नागपुर की राजधानी है। प्रादेशिक शासक पटने में ही रहते हैं। प्रान्तीय-शासन-सभाओं की बैठक यहीं होती है। (राजधानी शीर्षक पटने का विस्तृत वर्णन पढ़ें)। पटने की जन-संख्या लगभग १३६१५३ है। इस प्रदेश में इससे बड़ा अब दूसरा

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

कोई नगर नहीं। बाँकीपुर, बाढ़ और विहार नामक तीन सबडिवीज़न पटने ज़िले में हैं। "बाँकीपुर" तो पटना नगर से सटा हुआ पच्छिम के हिस्से में गंगातट पर सुशोभित है। बाँकीपुर से कुछ पच्छिम की ओर "दानापुर" (३१०२५) प्रसिद्ध स्थान है, जहाँ अंग्रेज़ी पलटन और तोपख़ाना है। यह छोटा पर अच्छा शहर है, गुलज़ार है। यहाँ ई० आई० आर० का बहुत बड़ा और मशहूर ष्टेशन है क्योंकि यहाँ रेलवे-विभाग के ज़िला-अफ़सर रहते हैं। दानापुर से थोड़ी दूर पच्छिम में सौभाग्य की रंगस्थली सी एक छोटी सी नगरी, नहीं टोली है। है तो यह नन्ही सी टोली पर सुन्दर २ इमारतों ने इसे छोटी मोटी शहर ही का रूप दे दिया है। यह वैरिष्टरों, जजों, वकीलों, कलकृरों और बड़े २ ऊँचे उहदे के अफ़सरों की जन्म-भूमि कहलाते रहने का बीमा ले चुका है। इसे "नेवरा" कहते हैं। वर्तमान भारत सम्राट् अपने शुभागमन से इसे धन्य बना चुके हैं। "बाढ़" में मुसल्मानों की संख्या अधिक है। यहाँ बड़े २ प्रतिष्ठित नागरिक मुसल्मान हैं। यहाँ चमेली-तेल खूब बढ़ियाँ तैयार होता है। "विहार" (३५१५१) × सबडिवीज़न है तो पटने ज़िले में, किन्तु इसका महत्त्व विहार प्रदेश भर में व्याप्त है। इसी नगर के नाम के आधार पर समूचे प्रदेश का 'विहार' नाम विख्यात हुआ। कारण यह है कि यहाँ पाल-वंशी राजाओं ने सुविशाल बौद्धमठ, जिसे संस्कृत में "विहार" कहते हैं, बनवाया था, जिस समय इस नगर में उनकी राज-धानी थी। यवनों के प्रथम आक्रमण ने उक्त मठ को विध्वंस कर और लूट-पाट का भयानक उपद्रव मचा कर नगरश्री को

× नगरों के नाम के साथ उनकी जनसंख्या भी लिखी गई है।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

नष्ट भ्रष्ट कर दिया। यहाँ आजतक एक पुराना किला और फ़कीरों की कई क़ब्रें रो रो कर अपनी पुरानी बड़ाई की कहानी कह रही हैं। यहाँ के एक स्तम्भ पर कुछ शिलालेख हैं जो अनुमानतः पाँचवीं शताब्दी से सम्बन्ध रखते हैं। "मोकामा" नामक मशहूर (ई० आई०) रेलवे ष्टेशन पटने जिले में ही पड़ता है। इस जिले में "मनेर" भी देखने योग्य स्थान है।

गया—(७०४२३) अन्तःसलिला फल्गु के किनारे यह अतीव रमणीय और प्राचीन नगर है। मन्दिर-मुकुटित पहाड़ियाँ चारो ओर से इसकी प्राकृतिक सुन्दरता को बढ़ा रही हैं। यहाँ बड़ी कड़ी (सड़ी?) गर्मी पड़ती है। पुराना शहर ऊँची पथरीली जगह में बसा हुआ है। फल्गु में यहाँ बहुत अच्छे २ घाट हैं। महलनुमा ऊँचे २ मकानों की सघन शोभा बड़ी विचित्र है। नया शहर साहबगंज चट्टानों पर बसे हुए पुराने शहर से बिलकुल लगा हुआ है। इस नगर में भारत भर के तीर्थयात्री अपने पितरों का श्राद्ध-तर्पण करने के लिये हमेशा आते रहते हैं। आश्विन के पितृ-पक्ष में यहाँ कई लाख तीर्थयात्री जुटते हैं। गया के आस पास में और भी कितने पुण्यस्थल हैं जो तीर्थस्थान के अतिरिक्त रमणीक भी हैं। महाराष्ट्र राजकन्या श्रीमती अहिल्याबाई ने यहाँ १८ वीं शताब्दी में विष्णुपद मन्दिर बनवा दिया था, जिसमें एक अंग्रेज कलक्टर ने १७६० में एक विजयघण्ट समर्पण किया था, जो आजतक मन्दिर की छत में लटक कर मुहल्ले भर को घंटा-निनाद से घोषित करता है। राम गिरी, या रामशिला, प्रेतशिला आदि मशहूर जगहें हैं। ब्रह्मयोनि पर्वत की स्वच्छ शिला पर योगासन मारकर बुद्धभगवान ने पवित्र उपदेशा-

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

मृत की वृष्टि की थी। इन जगहों के अलावे गया से ३ कोस दक्षिण बोधगया है जो संसार भर के असंख्य बौद्धों का तीर्थ-स्थान और गौतमबुद्ध के विशुद्ध ज्ञान का जन्मक्षेत्र है। यहाँ का महाबोधी मंदिर और अशोक-कालीन शिल्पकौशल के आदर्श नमूने और भिन्न २ शताब्दियों के स्तूप दर्शनीय एवं महत्त्वपूर्ण हैं। गया ज़िले में टिकारी राज्य प्रसिद्ध है *। नवादा, जहानाबाद और औरंगाबाद नामक तीन सब-डिवीजन गया ज़िले में हैं।

शाहाबाद ज़िले में भी तीन ही सबडिवीजन हैं—बक्सर ससराम, भभुआ। ज़िला का हेड कार्टर 'आरा' है। चौथा सबडिवीजन आरा है। इसी सबडिवीजन में जगदीशपुर है जहाँ बाबू कुँवरसिंह का प्रसिद्ध गढ़ है यह नगर प्राचीनता की दृष्टि से महत्त्व-पूर्ण है। † आरा (३८५४६) में आराहाउस प्रसिद्ध है जिसमें १८५७ के सिपाही-विद्रोह में अंग्रेज़ों को बाबू कुँवरसिंह ने घेरा था। १९१२ में स्वयं सम्राट् पंचम-जॉर्ज भी इसे देखने के लिये आरा में पधारे थे। भभुआ सब-डिवीजन में चैनपुर और मोहनिया मशहूर जगहें हैं। भभुआ भी दिहात ही है। चैनपुर मशहूर परगना है, जैसे बक्सर सबडिवीजन में भोजपुर। वहाँ एक राजा का गढ़ है। भभुआ सबडि० में ही शालिवाहन राजा का होना सुना जाता है, जिनके नाम का शाकाब्द चल रहा है और उनके

* वर्तमान टिकारी नरेश ने सिर्फ अपने खर्च भर की आमदनी बचा कर समूचा राज्य स्त्री-शिक्षा के लिये उत्सर्ग कर दिया है।

† आरा नागरी प्रचारिणी सभा द्वारा प्रकाशित आरा-पुरातत्व देखिये।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

तेजस्वी पुरोहित हरसू बाबा ब्रह्म का चौरा उनकी राजधानी के सिंहद्वार पर अब तक बड़ा प्रतिष्ठित स्थान हो रहा है। बक्सर (११३०६) और ससराम के विषय में अन्यत्र विस्तार रूप में लिखा जा चुका है। यहाँ यही लिखना है कि बक्सर में एक पुराना क़िला गंगातटपर शोभा पा रहा है और १७६४ में यहाँ एक इतिहास-प्रसिद्ध लड़ाई हुई थी जिसमें नवाब शुजाउद्दौला ने सरकारी सेना से हार खाई थी। इसीके पच्छिम डुमराँव राजस्थान भोजवंशी उज्जैन राजाओं की गद्दी है, जिसके पास ही भोजपुर में राजा भोज के नवरतन महल का ध्वंसांश है। सहसराम सबडि० बहुत बड़ा है। इसी सबडि० में रोहतासगढ़ का भारतविख्यात सुदृढ़ दुर्ग है। सहसराम नगर * (२३०६७) बहुत पुराना और ऐतिहासिक दृष्टि से बड़े महत्त्व का समझा जाता है। कैमूर पहाड़ी की उत्तरीय तलैटी में यह स्थित है। शहर में मुसल्मानों की बस्ती खूब घनी है। शहर से पूरब चन्दनपीर पहाड़ी पर अशोक-कालीन शिलालेख है। विहार का पठान-उन्नायक शेरशाह एक सुविशाल सरोवर में बने हुए अपने अतीव सुन्दर समाधि-मंदिर में मक्काशरीफ़ की ओर हाथ पसारे पड़ा हुआ है। १५५३ में जब उसका बेटा सलीमशाह ग्वालियर में मर गया तब वह भी यहीं दफ़नाया गया। उसकी क़ब्र अलग है पर अधूरी ही रह गई। वह भी पोखरे के बीच में है। शेरशाह के पिता की क़ब्र भी यहीं है।

* "जगमें जगदीशपुर, शहर में सरसराँव; चट्टी में दाउदनगर गँवई में डुमराँव"। दाउदनगर गया में प्रसिद्ध स्थान है—वहाँ नवाबों की रयासत अच्छी थी।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

"भागलपुर डिवीजन" में चार जिले हैं और "भागलपुर" जिले में चार सब डि० हैं। बाँका, मधेपुरा, सुपौल और भागल०। इसी जिले में कहलगाँव * गंगातटस्थ प्रसिद्ध स्थान है। वहाँ तिजारत खूब होती है। भागलपुर नगर (७४३४९) भी गंगा-तट पर विराजता है। यह बरारी से चम्पा नगर तक ८ मील लम्बा और दो मील चौड़ा विस्तृत है। यहाँ की जलवायु अच्छी है पर बंगालियों के लिये विशेष अनुकूल है। यहाँ ही टी० एन० जुबिली कौलेज है। सबौर नामक स्थान में कृषि-कौलिज है। भा० पु० का कलमी आम उत्तम होता है और यहाँ का बना हुआ ट्रंक भी बड़ा पुख़्ता होता है। यहाँ विशेषतः अन्न और कपड़े का व्यवसाय होता है। यहाँ के तसरी कपड़े भारतप्रसिद्ध हैं। यहाँ इञ्जिन से चलने वाले तेल पेरने, गेहूँ पीसने और धान कूटने के कारख़ाने बढ़ते जाते हैं। यहाँ के बूढ़ानाथ जी का विशाल मंदिर बहुत सुन्दर बना हुआ है। राजमहल पहाड़ी की असभ्य जातियों को दमन-शान्त करने वाले मि० औगष्टस क्लेवलैण्ड (१७५५-८४) की सुन्दर कब्र यहीं शोभायमान है। भा० पु० जिला नैपाल के सिवाने से वैद्यनाथ तक प्रायः १५० मील उत्तर दक्षिण गंगा की दोनों ओर फैला हुआ है। दक्षिण के पहाड़ों पर साखू और महुआ और मैदान में हर तरह के महीन और सुगन्धित धान पैदा होते हैं। इस

---

* Colgong University पुराने जमाने में यहीं थी, यह पुरातत्व-प्रेमियों का अनुमान है। "भागलपुर का भगेलिया, कहलगाँव का ठग। पटना का दीवालिया तीनों नामेज़द॥ सुन पावे छपरहिया तो तीनो के तूरे रग॥"

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

प्रान्त में प्राकृतिक दृश्य भी चित्ताकर्षक हैं। सीताकुण्ड और पसौना के गर्मजल का कुण्ड, खड़गपुर की झील और वहाँ के पर्वत का जल प्रपात, सुल्तानगंज में गंगा के बीच में शिवमंदिर वटेश्वर और मन्दारपर्वत आदि दर्शकों को मुग्ध करने वाले हैं*। मुँगेर ज़िले में तीन सबडि० हैं—मुँगेर, जमुई और बेगूसराय। जमुई तिजारत के लिये प्रसिद्ध है। इसी के पास गिद्धौर राजस्थान है। मुँगेर सबडि० में खगरिया एक व्यापार-केन्द्र है। खड़गपुर भी प्रसिद्ध स्थान है। जमालपुर (२०५२६) ई० आई० आर० का प्रसिद्ध ष्टेशन, जहाँ लोहे का बड़ा भारी कारख़ाना है, इसी सबडि० में है। सूबे बंगाल की पश्चिमीय सीमा पर कलकत्ते से २५० मील उत्तर वायुकोण गंगा के दहने किनारे पर मुँगेर (४६९१३) नामक पुराना (मुद्गिर) नगर अवस्थित है। यह पुराना नगर १७६१—६३ में मीरक़ासिम की नवाबी राजधानी था। यहाँ अब तक एक पुराना क़िला है। पीरपहाड़ पर कासिम के अरमेनियन सेनानी मुरगी खाँ का निवास-स्थान था। "पूर्णिया" ज़िले में तीन सबडिवीजन हैं—अरेरिया, विक्रमगंज और † पूर्णिया। पू० सबडि० में कटिहार है, जहाँ से धान और रेंड़ी दूसरी जगह भेजी जाती हैं और वहाँ कम्बल की बिनाई और भेंड़ की बिक्री खूब ही होती है। अरेरिया के रानीगंज थाने भर में खूब आफ़रात अच्छा से अच्छा घी मिलता है। पूर्णिया नगर (१४७८४) ज़िला का सदर शहर है। यहाँ पहले नवाबी राजधानी थी। यहाँ के

---

* भागलपुर का विस्तृत विवरण देखना हो तो हिन्दी मासिक मनोरंजन का विशेषांक मार्गशीर्ष १९७० देखिये।

† पूर्णिया ज़िले में बनैली राजधानी है।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

नवाब बड़े ज़बरदस्त थे। दसपन्द्रह हज़ार तक फ़ौज उनके पास हमेशा तैयार रहती थी। यहाँ का एक नवाब बङ्गाल की नवाबी के लिये सिराजुद्दौला से भिड़ गया पर अकृत-कार्य्य हुआ। "सन्तालपरगना नामक ज़िले में तीन सबडि० हैं। (१) दुमका (सदर ज़िला का शहर) (२) देवघर और (३) राजमहल। दुमका (५६२८) नगर प्राकृतिक दृश्यों के कारण अतीव रमणीय एवं परम मनोहर है। इसी सबडि० में कहीं तेलियागढ़ी का पुराना क़िला गंगातट पर शोभता है। देवघर (११३६४) बहुत प्रसिद्ध स्थान है। इसके पास ही सटा हुआ वैद्यनाथ शंकर का भारत-विख्यात मंदिर है। साल में लाखों भारतीय तीर्थयात्रा करने आते हैं। इस स्थान की जलवायु बहुत ही अच्छी और स्वास्थ्यकरी है। राजमहल (५३५७) गंगातट पर बहुत पुराना नगर है। १५६२ से १६०८ तक और पुनः १६३६ से १६६० तक यह बंगाल की राजधानी था। १५७६ में अकबर की सेना ने यहाँ ही दाऊदशाह को परास्त किया था। नयी बस्ती से दो कोस पच्छिम में पुरानी बस्ती का खँड़हर खड़ा है। एक से एक अच्छी इमारतें टूटी फूटी पड़ी हैं।

उत्तर-विहार—तिर्हुत।

तिर्हुत (मिथिला!) कमिश्नरी में चार ज़िले हैं। (१) मुज़फ्फरपुर, (२) दर्भङ्गा, (३) सारन, (४) चम्पारन। यह कमिश्नरी गंगा की उत्तरीय तराइयों में फैली हुई है। तिर्हुत डिवीज़न का सदर शहर (हेड क्वार्टर) मुज़फ्फ़रपुर (४३६६८) है, जहाँ मिथिला-विभाग के कमिश्नर साहब रहते हैं। मु० पु० में "विहार-लाइट-हॉर्स" नामक कुल रिसालों की छोटी पलटन भी रहती है। यह नगर बड़ा भी है और देखने में

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

सुन्दर तथा रौनक़दार भी है। यहाँ भी एक कौलेज है। मु० पु० ज़िले में तीन सबडि० हैं—सीतामढ़ी, हाजीपुर और सदर। 'दर्भङ्गा' ज़िले में भी तीन ही सब० हैं—मधुबनी, समस्तीपुर, दर्भङ्गा। दर्भङ्गानगर (६२६२८) में मिथिलेश महाराजा बहादुर का सुविशाल, सुन्दर, मनोहर बहुमूल्य एवं परिष्कृत राजमहल है। दर्भङ्गा का राजप्रासाद बड़ा ही भड़कीला और नेत्ररंजक है। विहारोत्कल प्रदेश में दर्भङ्गा के समान समृद्धिशाली राज्य दूसरा नहीं है। दर्भङ्गा शहर के पड़ोस में एक साथ सटा हुआ लहेरियासराय सदर मुक़ाम है, जहाँ ज़िले की सरकारी कचहरियाँ आदि हैं। सारन ज़िले में चार सबडि० हैं। छपरा (ज़िले का सदर शहर—हेड कार्टर) सिवान, गोपालगंज, रिविलगंज। छपरे ज़िले में ही हथुआ राजस्थान है। यहाँ भी बड़े भारी राजा हैं। सिवान में मिट्टी के बर्तन अच्छे बनते हैं। छपरा नगर (४२३७३) गंगा-सरयू-संगम पर बसा हुआ है। यहाँ डचों और अंग्रेज़ों के कई कारख़ाने भी थे। चम्पारन ज़िले में केवल एक ही सबडि० है। उसे ही मोतिहारी कहते हैं। मोतिहारी सबडि० में बेतिया राजधानी है। १७४५ ई० से बेतिया में ईसाई मिशन स्थापित है। बेतिया (२५७६३) का राज्य सरकार के हाथ में है। मोतिहारी शहर (१४८७६) एक झील के किनारे है, जो किसी समय गंडक का प्रवाहक्षेत्र था। इस ज़िले में निलहे खेतिहर बहुत हैं।

(२) उड़ीसा।

उड़ीसा डिवीज़न में पाँच ज़िले हैं। कटक, बालासोर (बालेश्वर), पुरी, अङ्गुल, सम्बलपुर। कटक ज़िले में तीन

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

सबडि० हैं जयपुर, केन्द्रपाड़ा, कटक। जयपुर किसी समय केशरीवंश के राजाओं की राजधानी था। कटक में बारवाती नाम का एक पुराना किला है। कटकनगर (५२५२८) महानदी और काटजुरी के बीच में बसा हुआ है। पथरीली पुख़्ती दीवार ही नदियों की बाढ़ से नगर की रक्षा करती है। कटक में एक कौलेज भी है। उड़ीसा की नहरों का सदर आफ़िस यहीं है। यहाँ सोने चाँदी के गहनों पर बहुत ही बारीक, नाज़ुक, नफ़ीस और निहायत उम्दा कारीगरी होती है। उड़ीसा के देशी राजाओं की अनेक अच्छी २ कोठियाँ इस नगर की शोभा बढ़ा रही हैं। बल्कि उड़ीसा के स्वतंत्र राजाओं की राजधानी भी यहीं है। पहले यहाँ मुग़ल सूबेदार रहते थे। मुग़ल सूबेदार के महल का स्थान अब कटक के कमिश्नर की कोठी ने अपने अधिकार में कर लिया है। उस कोठी को अब लालबाग़ कहते हैं। पहले वह स्थान इतने बड़े महल की शोभा से सम्पन्न था कि उसके जनाने हिस्से में ३०० औरतें (महलसरा बीबियाँ) रहती थीं। १८ वीं शताब्दी के मध्य में इस पर महाराष्ट्रों का अधिकार हुआ। फिर १८०३ में यह अंग्रेज़ों के हाथ लगा। क़िले की तो अब रद्दी हालत है। पक्की इमारतें टूटटाट कर पक्की सड़कों के रूप में बदल गईं। यहाँ का क़िला बारह भट्टी—(बट्टी) नाम से भी प्रसिद्ध है। उसके ईर्दगिर्द ८० गज चौड़ी ख़न्दक़ है। बालासोर ज़िले में दो सबडि० हैं। भदरख और बालासोर। बालासोर नगर (२१३६२) बुढ़बलंग नदी पर है। पहले का यह बड़ा भारी बन्दर और मण्डी है। यहाँ डच, डैनिश, फ्रेञ्च और अंग्रेज़ों के कारख़ाने थे। अब सब उजाड़ है। यहाँ बाणेश्वर महादेव का मन्दिर मशहूर है।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

यहाँ अफ़ीमची और शराबी बहुत हैं। उच्च लोगों की कई कब्रें यहाँ हैं जो १७ वीं शताब्दी में बनी थीं। "पुरी ज़िले" में भी दो सबडि० हैं। खुर्दा और पुरी। खुर्दा सब डिविजन में ही भुवनेश्वर मन्दिर है। पुरीनगर (३९६८६) बङ्गोपसागर के तीर पर जगत्प्रसिद्ध जगन्नाथ मन्दिर के साथ विराजित है। जगदीशपुरी, पुरुषोत्तमपुरी अथवा ठाकुरद्वारा आदि नामों से भी यह नगर प्रसिद्ध है। भारत के सभी प्रान्तों से हिन्दूतीर्थयात्री हमेशा यहाँ आते रहते हैं। विशेषतः आषाढ़ के रथयात्रा महोत्सव में यहाँ ख़ासी भीड़ होती है। यहाँ के मन्दिर का बुर्ज १९० फीट ऊँचा है। मन्दिर के सिंहद्वार से बाहर सामने ही १५ फ़ीट ऊँचा सूर्य्य-स्तम्भ है, जो कोनारक के सूर्य मन्दिर में से यहाँ आया है। "सम्बलपुर ज़िले" में दो सबडि० हैं। बारगढ़ और सम्बलपुर। सम्बल० नगर (१२९८१) में ही उड़ीसा के मित्र राज्यों के अंग्रेज़ी राज प्रतिनिधि रहते हैं। "अंगुल ज़िले" में दो सबडि० हैं। खोंद और अंगुल। खोंद महाल का सदर मुक़ाम फूलवानी है।

(३) छोटा नागपुर डिविजन।

छोटा नागपुर विभाग में भी पाँच ही ज़िले हैं। राँची, हजारीबाग़, सिंहभूम, मानभूम, पलामू। राँची में कमिश्नरी है। राँची ही सब ज़िलों से बड़ा है। विहारोत्कल सरकार का ग्रीष्मावास भी राँची में है। राँची की आबहवा बहुत ही अच्छी और फायदेमंद है। यह बहुत ही रमणीक और खुला हुआ हवादार शहर है। आसपास में जंगलों की हरियाली छटा विचित्र और नेत्र-सुखद है। यहाँ ईसाई मिश्नरियाँ भी हैं। राँची नगर (३२९९४) से ४७ मील

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

पच्छिम लोहरदग्गा में एक कोढ़िया अस्पताल है। राँची ज़िले में तीन सबडिवीज़न हैं--राँची, गमला और खूँटी। खूँटी सब० में बूँदू नामक एक छोटा सा शहर तिजारत के लिये मशहूर है। "हजारीबाग़" ज़िले में भी दो ही सबडि० हैं। एक गिरिडीह, जहाँ भारत विख्यात कोयले की खानें हैं और दूसरा हजारीबाग़ (१७००६) जहाँ पहले १८७४ तक फौज़ी छावनी थी। अब उसी सेना-शाला की इमारत में रिफ़ारमेटरी स्कूल है, जिसमें सज़ा पाने वाले लड़कों से हर तरह के काम कराये जाते हैं। बालिग़ होने पर उस स्कूल में से असंख्य कारीगर और हुनरमंद शिल्पी पैदा हो कर निकलते हैं। हज़ारीबाग़ में डबलिन विश्वविद्यालय का एक मिशन कालेज भी है। इसी सबडि० में चतरा मशहूर जगह है। पलामू ज़िले का सदर शहर लालटेनगंज (डालटन गंज) (७१७६) है। इस शहर को छोटानागपुर के कमिश्नर मिष्टर कौलोनेल डालटन ने १८६२ में बसाया था। १६०४ से यहाँ पानी की कल खुली है। लालटेनगंज एकमात्र सबडि० और ज़िला-सदर है। इसी सबडि० में गरवा प्रसिद्ध स्थान है, जहाँ से लाह, रंजन, तसर, तेलहन, घी, रूई, लोहा आदि चीजें अन्यान्य स्थानों में भेजी जाती हैं। डालटनगंज में एक डिपुटी कमिश्नर और दो डिपुटीकलकृर शासकरूप में रहते हैं। इन्हें बिहारी जिलों के जज और मजिष्ट्रेटों के समान पूरा पूरा शासनाधिकार का स्वत्व मिला हुआ है। पुरुलिया जिले में भी दो ही सबडि० हैं। धनबाद और पुरुलिया। धनबाद बहुत बड़ा रेलवे-केन्द्र है। यहाँ की जल-वायु अच्छी है। अँग्रेजों के बँगले यहाँ बहुत से हैं। शहर भी गुलजार है। पुरुलिया जिले में रघुनाथपुर और झालीदा मशहूर जगहें हैं।

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

पहले में तसर का काम बहुत होता है और दूसरे में लाह का कारबार खूब अच्छी तरह से चलता है। पुरुलिया का सदर शहर मानभूम (२०८८६) है। मानभूम से राँची को रेलवे-लाइन गई है। सिंहभूमि जिले का सदरशहर चाँईवासा है। वहाँ एक डिपुटीकमिश्नर और तीन डिपुटीकलक्टर शासन-प्रबंध के लिये रहते हैं। चाँईवासा में ही एक डिपुटी कौञ्जरवेटर जंगल के प्रबन्ध के लिये रहा करते हैं। साकची (२२६७२) नामक नगर इसी जिले में है। यहाँ ताता कम्पनी के लोहे के कारखाने बहुत बड़े २ हैं। केवल लोहे के कारखानों की भरमार से ही यहाँ शहर सी बस्ती हो गई है।

DIGITIZED C-DAC
2005-2006
22 MAY 2006

गणपति कृष्ण गुर्जर द्वारा श्रीलक्ष्मीनारायण प्रेस,
जतनबड़ बनारस सिटी में मुद्रित १९१९।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

ग्रन्थमाला-कार्यालय की पुस्तकें ।

१—*भारत का इतिहास (३य संस्करण)	१)
२—¶ रचनाविचार १म भाग (४र्थ संस्करण)	१)
३—*रचनाविचार २ य भाग (दूसरी बार छप गया)	१।)
४—¶ प्रवेशिका हिन्दी व्याकरण	१)
५—*महाभारतीय सुनीति-कथा	॥)
६—सूक्तिमुक्तावली (पद्यकाव्य)	।≡)
७—निर्भयभीम व्यायोग (नाटक)	=)
८—उद्भ्रान्त प्रेम (गद्यकाव्य)	।≡)
९—नवजीवन (गद्यकाव्य)	≡)
१०—पद्यप्रमोद (पद्य काव्य)	॥।)
११—¶ साहित्य-सुधाकर (गद्य-संग्रह)	॥=)
१२—*साहित्य-सुषमा (पद्य-संग्रह)	॥)
१३—*भारत-भूगोल (संस्कृत)	॥)
१४—*इंग्लैंड का इतिहास (दो भाग)	१।)
१५—रचनाविचार बोध (र० वि० प्रथम भाग का नोट)	=)
१६—सिखों का बलिदान	≡)
१७—रामचरित चन्द्रिका	॥)
१८—हिन्दी ट्रान्सलेशन (यन्त्रस्थ)	

मैनेजर—ग्रन्थमाला कार्यालय,
बाँकीपुर ।

¶ ये पुस्तकें पटना यूनिवर्सिटी के कोर्स में है ।

* ये पुस्तकें भी स्कूलों में पढ़ाई जाती हैं और कई टेक्स्टबुक-कमीटियों से मंजूर हैं ।

पुस्तकालय
गुरुकुल कांगड़ी

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

४९.४
३६



गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
हरिद्वार

पुस्तक लौटाने की तिथि अन्त में अङ्कित है। इस तिथि को पुस्तक न लौटाने पर छै नये पैसे प्रति पुस्तक अतिरिक्त दिनों का अर्थदण्ड लगेगा।

१००००.६.५६। ३४,८५०

2 2 MAY 2006
DIGITIZED C-DAC
2005-2006

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

पुस्तकालय, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
हरिद्वार।
CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

DIGITIZED C-DAC
2005 2006

22 MAY 2006

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri